04 - बंधुत्व के ब्रांड एम्बेसडर के रूप में उभरे राहुल...

05- भारतबोध कराता है भारतीय पर्यटन

06- धार की धरा पर हुए मंथन से विमर्श रूपी निकले अमृत से बनेगा...

07- कुश्ती का अखाड़ा..आखिर इस विरोध के पीछे मंशा...

A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 25 जनवरी, 2023

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 20 अंक 144 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

प्रसंगवश

'किसका इतिहास?' तेलंगाना और आंध्र में लड़ रहे हैं आर्काइव्स..

वंदना मेनन

है दराबाद में, अभिलेखागार लड़ रहे हैं। इतिहास के दो दावेदार हैं- तेलंगाना राज्य अभिलेखागार और आंध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार। आंध्र प्रदेश दो भागों में विभाजित करने से इस क्षेत्र के इतिहास को दो निर्विवाद हिस्सों में बांटना कठिन हो गया है।

यह एक ऐसी रस्साकशी है, जिसमें दोनों राज्य अतीत के पुराने और भंगुर कागजों को अपनी ओर खींच रहे हैं। 'किसका इतिहास?' यही इस युद्ध के केंद्र में है। तेलंगाना राज्य अभिलेखागार की दीवारें, उनके द्वारा रखे गए दस्तावेजों की तरह ही, ढह रही हैं। फारसी और उर्दू में सदियों पुराने घिसे-पिटे रिकॉर्ड धूल भरे, अंधेरे, तंग कमरों में पड़े हैं। और 300 किलोमीटर दूर, राज्य की सीमाओं के पार, आंध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार के निदेशक अपनी नई इमारत में अभिलेखीय कागजात के तेलंगाना से आने का इंतजार कर रहे हैं, जो उनके साथ साझा करने से मना कर रहा है।

वे 1948 और 1956 के बीच निज़ाम की सरकार के भूमि रिकॉर्ड और सरकारी आदेशों पर आपस में भिड़े हुए हैं- दस्तावेज़ जो कि उस शहर की नींव डालते हैं, जो कभी आंध्र प्रदेश की राजधानी थी। विवाद की जड़ हैदराबाद राज्य के भारत में विलय और आंध्र प्रदेश राज्य के निर्माण के बीच संक्षिप्त ओवरलैप को लेकर है। और इन रिकॉर्ड्स पर आंध्र प्रदेश और तेलंगाना दोनों ने ही अपना-अपना दावा ठोंक दिया है।

दोनों अभिलेखागार के निदेशक वी. रंगा राज और ज़रीना परवीन के मुताबिक यह सिर्फ इतिहास की बात नहीं है। यह भाषा, धर्म और दो अत्यधिक गौरवपूर्ण परंपराओं की सांस्कृतिक पहचान के बारे में है। दोनों एक अविभाजित आंध्र प्रदेश में करीबी सहयोगियों के रूप में काम करते थे, लेकिन 2014 में राज्यों के बीच विभाजन ने उन्हें अलग-अलग जगहों पर बैठकर अपने अपने दावों को लेकर लड़ने को मजबूर कर दिया। तेलंगाना राज्य अभिलेखागार की निदेशक ज़रीना परवीन कहती हैं, 'हमारे बीच सौहार्दपूर्ण और सही विभाजन हुआ' लेकिन मैं अभिलेखागार को आधे में कैसे विभाजित कर सकती हूं? यह हैदराबाद और डेक्कन का इतिहास है।'

विशेषज्ञ समितियों का गठन किया गया, अभिलेखों को वर्गीकृत किया गया है, स्थानांतरण सूची तैयार की गई है, और अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। 2018 में दोनों निदेशकों द्वारा हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन के जरिए 'पारस्परिक सहयोग' का वादा किया गया था। रिकॉर्ड के 12 में से 7 वर्गों के रिकॉर्ड्स को तेलंगाना के हैदराबाद से ट्रकों के जरिए आंध्र प्रदेश के मंगलागिरी भेजा गया। फिर भी अभी तक यह तय नहीं किया कि क्या किसका है। हैदराबाद के आखिरी निजाम, मीर उस्मान अली खान के शासनकाल साल 1948 से 1956 के बीच की अवधि को लेकर विवाद है।

इस अवधि के सरकारी आदेश और भूमि रिकॉर्ड की कई प्रतियां हैं, क्योंकि निज़ाम सरकार के आदेश यानी फरमान के लिए ये जरूरी था। तेलंगाना इन मूल प्रतियों को रखने का अधिकार रखता है, और आंध्र प्रदेश में उनका डिजिटल संस्करण रख सकता है। आंध्र प्रदेश का कहना है कि उसके पास भी ये रिकॉर्ड्स होने चाहिए, अगर नहीं, तो कम से कम मूल कॉपी की पहली प्रतियां तो होनी ही चाहिए। तेलंगाना अभिलेखागार में मुगल काल और निज़ाम की सरकारों के सदियों पुराने के महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं। उदाहरण के लिए भारत के विभाजन के विरोध में एक मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानी के मृत होने के दस्तावेज, या 1939 में बनारस हिंदू विवि को 1 लाख रुपये देने का निजाम का फरमान, या 1876 में हैदराबाद राज्य में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने का आदेश शामिल हैं। योग्य और जानी-मानी स्कॉलर परवीन, जिन्होंने अभिलेखागार के उर्दू और फ़ारसी अभिलेखों पर भी विस्तार से लिखा है, कहती हैं, 'ये सभी दस्तावेज़ वैसे भी उर्दू या फ़ारसी में हैं। आंध्र प्रदेश में इनका ज्यादा यूज़ नहीं है क्योंकि वहां तेलुगू और तेलुगू स्क्रिप्ट का बोलबाला है।' तेलंगाना राज्य अभिलेखागार में 43 मिलियन दस्तावेजों में से 85 प्रतिशत रिकॉर्ड उर्दू और फ़ारसी में हैं- सबसे पुराना 1406 का बहमनी काल का भूमि अनुदान अभिलेख है। शाहजहां और औरंगज़ेब के शासनकाल के मुगलकाल के दस्तावेज़ भी यहां मौजूद हैं। परवीन ने कहा कि 'हमारा संग्रह एक सोने की खान है। आंध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार में सबसे महत्त्वपूर्ण एक ऐसे व्यक्ति के व्यक्तिगत पत्र हैं, जिसकी कहानी को गोल्डन ग्लोब के लिए नामांकित किया गया था। क्रांतिकारी अल्लुरी सीताराम राजू की डायरियां और पत्र, जिन पर ऐतिहासिक फिल्म आरआरआर आधारित थी, पूरी तरह से आंध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार से संबंधित हैं। तेलंगाना उन्हें रखने के लिए नहीं लड़ रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे तेलुगू में हैं और बड़े पैमाने पर आंध्र प्रदेश के 13 जिलों में से संबंधित हैं और तेलंगाना के 10 जिलों में से एक के साथ संबंधित नहीं हैं। लेकिन आंध्र प्रदेश को अपना खुद का आर्काइव मिलना परेशानी का सबब बन गया है। बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे अन्य पुनर्गठित राज्यों के राज्य अभिलेखागार ने यह लड़ाई नहीं लड़ी है। लेकिन जिस तरह से आंध्र प्रदेश और तेलंगाना आगे बढ़ना चाहते हैं, वह इतिहास को लेकर आने वाले समय में क्षेत्रीय संघर्षों का आधार बन सकता है।

2014 में आंध्र प्रदेश के विभाजन के पीछे असंतोष की भारी भावना एक मुख्य फैक्टर था। परवीन और रंगा राज अब इस क्षेत्र के इतिहास के संयुक्त रिकॉर्ड-कीपर हैं। लेकिन राज्य के बंटवारे की लंबी मांग ने इस बात की बहस बढ़ा दी है कि किसके पास इतिहास का कौन सा दस्तावेज रहेगा और किसका इतिहास उनके लिए प्राथमिकता है। कोई इसे दक्कन के इतिहास के रूप में देखता है; दूसरे इसे तेलुगू इतिहास के रूप में देखते हैं। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना ने अपनी सभी संपत्तियों को 52:48 के अनुपात में बांटने का फैसला किया। लेकिन निदेशक इसे दोनों राज्यों के अमूर्त इतिहास पर लागू करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। और खास बात है कि उन्हें लगता है कि यह अभी भी अन्यायपूर्ण है।

दोनों अभिलेखों में स्टाफ और फंड की कमी है। दोनों को कभी दोस्त रहे दो लोगों द्वारा संरक्षण के उद्देश्य से चलाया जा रहा है। और अभिलेखागार में सब कुछ ङ्क अभिलेखों से कर्मचारियों तक- उन्हीं दोनों के बीच फंसा हुआ है। हैदराबाद में एक स्टाफ सदस्य मजाक करते हुए कहता है, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना भाई-भाई की तरह हैं। लेकिन कभी-कभी यहां काम करना भारत और पाकिस्तान के बीच काम करने जैसा है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

दिल्ली, नोएडा, लखनऊ, देहरादून...

भूकंप से कांप गया पूरा उत्तर भारत

नेपाल में बताया जा रहा केंद्र, तीव्रता 6 के करीब

यूपी में जोर से हिली धरती,जोशीमठ में भी दहशत

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली, एनसीआर से लेकर पूरे उत्तर भारत में दोपहर ढाई बजे के आसपास भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। नोएडा सेक्टर 16 के ऑफिस में काम कर रहे लोग हिल गए। कुछ लोगों ने बताया कि उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी कुर्सी को किसी ने हिला दिया हो। लखनऊ में भी लोगों ने ज्यादा तेज झटके महसूस होने की बात कही है। दिल्ली से लेकर नेपाल तक भूकंप मापा गया है। एनसीआर में करीब 15 सेकेंड तक लोगों ने भूकंप को महसूस किया। हालांकि कुछ लोगों ने 30 सेकेंड तक झटके महसूस किए जाने की बात कही है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट की सोसायटियों में रहने वाले लोगों को भूकंप काफी तेज महसूस हुआ। ऊंची उमारतों में रहने वाले लोग फौरन बाहर की तरफ भागे। भूकंप का केंद्र नेपाल बताया जा रहा है। रिक्टर स्केल पर तीव्रता 5.8 बताई जा रही है। नोएडा सेक्टर 16 के एक ऑफिस में काम करने वाले नवीन कुमार ने बताया कि वह कुर्सी पर बैठे काम कर रहे थे। ढाई बजे के करीब अचानक लगा कि जैसे किसी ने पीछे से कुर्सी को हिला दिया हो लेकिन कुछ ही सेकंड में समझ में आ गया कि ये तो भूकंप है। कई लोग चिल्ला पड़े। कुछ लोग सड़कों पर भी आ गए। वैसे, तीव्रता कम नहीं थी इसीलिए यूपी के कई शहरों में तेज झटके महसूस किए गए हैं।

भारत बना वनडे का नया किंग, तीसरे मुकाबले में न्यूजीलैंड को रौंदकर क्लीन स्वीप की सीरीज

इंदौर। भारत ने वनडे सीरीज के आखिरी मुकाबले में भी न्यूजीलैंड को हरा दिया है। इंदौर के होल्कर स्टेडियम में खेले गए मुकाबले को रोहित शर्मा की टीम ने 90 रनों से अपने नाम किया। इस जीत के साथ ही भारत वनडे रैंकिंग में टॉप पर पहुंच गया है। इससे पहले कीवी टीम ही पहले नंबर पर थी। कप्तान रोहित और शुभमन गिल की शतकीय पारी से भारत ने 9 विकेट पर 385 रन बनाए। जवाब में कॉन्वे की शतक के बाद भी न्यूजीलैंड 295 रन ही बना सकता। इस मैच को जीतने के साथ ही भारत ने तीन मैचों की सीरीज को क्लीन स्वीप भी कर लिया है।

रोहित और गिल का शतक

कप्तान रोहित शर्मा और शुभमन गिल ने टीम इंडिया को बेहतरीन शुरुआत दी। कप्तान रोहित ने 85 गेंद में नौ चौकों और छह छक्कों से 101 रन बनाए जो जनवरी 2020 से उनका पहला वनडे शतक है। गिल ने भी 78 गेंद में 13 चौकों और पांच छक्कों से 112 रन की पारी खेलकर अपना चौथा शतक मारा। दोनों ने पहले विकेट के लिए 212 रन की तूफानी साझेदारी भी की। हार्दिक पंड्या ने अंतिम ओवरों में 38 गेंद में तीन छक्कों और इतने ही चौकों से 54 रन की पारी खेलकर टीम का स्कोर 380 रन के पार पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई।

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई मंत्रि-परिषद की बैठक

महिला स्व सहायता समूहों को 3 लाख तक के लोन के ब्याज में 2 फीसदी की भरपाई सरकार करेगी

- महत्वपूर्ण सड़क निर्माण कार्यों के लिये 594 करोड़ रूपये से अधिक की स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में हुई मंत्रि-परिषद की बैठक में निर्णय लिया गया कि महिला स्व-सहायता समूहों को 3 लाख रूपये तक के बैंक ऋण पर अतिरिक्त 2 प्रतिशत ब्याज की प्रतिपूर्ति की जाएगी। प्रदेश में संचालित म.प्र. दीनदयाल अंत्योदय योजना राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन एवं शहरी आजीविका मिशन अंतर्गत गठित महिला स्व-सहायता समूहों को अतिरिक्त आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने के लिए राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन एवं शहरी आजीविका मिशन में सभी जिलों में उन्हीं महिला स्व-सहायता समूहों को यह प्रतिपूर्ति की जाएगी। जिन्हें राज्य शासन एवं केन्द्र शासन से 3 प्रतिशत ब्याज अनुदान प्रदान किया गया है।

महत्वपूर्ण सड़क निर्माण कार्यों के लिये 594 करोड़ रूपये से अधिक की स्वीकृति- मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश में महत्वपूर्ण सड़क निर्माण कार्यों के लिये 594 करोड़ रूपये से अधिक की प्रशासकीय स्वीकृति दी गई। मंत्रि-परिषद ने नर्मदापुरम- मोहासा - बाबई मार्ग एस. एच.- 22 पर तवा नदी पर फोरलेन उच्च-स्तरीय पुल के लिए आकलित निर्माण लागत 148 करोड़ 97 लाख रूपये, सिवनी जिले के बंडोल - बांकी - जमुनिया - सागर - चंदौरीकला -मारबोड़ी - रनवेली - जाम -कन्हरगांव - हथनापुर - मंडवा - कोहका मार्ग के लिए आंकलित निर्माण लागत 108 करोड़ 97 लाख रूपये, सीहोर जिले के बकतरा भारकच्छ मार्ग से देहरी - बम्होरी - सेमलवाड़ा - नानभेंट - खैरी -सिलगना - जोनतला - जैत - सरदारनगर - हथनौरा - सुडानिया - बनेटा से शाहगंज मार्ग के लिए आंकलित निर्माण लागत 121 करोड़ 83 लाख रूपये, सीहोर जिले के बकतरा - सियागहन - सागपुर -रिछोड़ा - खोहा - क्वाड़ा - सतरामऊ - बोदरा - ग्वाडिया - नीमटोन - डुंगरिया मार्ग के लिए आकलित निर्माण लागत 108 करोड़ 17 लाख रूपये की प्रशासकीय और मुरैना जिले के ए.बी.सी. कैनाल मार्ग के लिए आंकलित निर्माण लागत 106 करोड़ 07 लाख रूपये की पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति योजना अंतर्गत दी गई।

सुप्रभात

उनका खालीपन
उधेड़ता रहता है बुने हुए जीवन को
वे दुहराते रहते
बीते वक़्तों की नासमझी को
उनका अंधविश्वास
भटक रहा है उनके जर्जर मुहल्लों में
धुंधा रही है बदले की आग
रोज़ झुलस रहा है पड़ौस
वे जंग लगी कील से
खण्डहरों की दीवारों पर जमी
काई को कुरेदकर
लिखते रहते हैं अपना नाम
उन्माद के प्रशिक्षण शिविरों में
फिर बढ़ती जा रही है भीड़

- ध्रुव शुक्ल

भड़के कानून मंत्री रिजिजू, बोले-ये राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा

कॉलेजियम पर सुप्रीम कोर्ट बनाम सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। जजों की नियुक्ति को लेकर बनाए गए कॉलेजियम पर सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार के बीच तल्खी बढ़ती जा रही है। कानून मंत्री किरेन रिजिजू मंगलवार को रॉ-आईबी की रिपोर्ट्स सार्वजनिक करने पर सुप्रीम कोर्ट पर नाराज हो गए। उन्होंने इसे देश की सुरक्षा के

- रॉ और आईबी की रिपोर्ट्स सार्वजनिक करने पर टकराव

लिए खतरा बताया। रिजिजू ने मंगलवार को कहा- इंटेलीजेंस ब्यूरो और रिसर्च एंड एनालिसिस विंग की संवेदनशील रिपोर्ट के कुछ हिस्से सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम द्वारा सार्वजनिक डोमेन में डाल दिए गए। खुफिया एजेंसी के अधिकारी देश के लिए गुप्त तरीके से काम करते हैं और अगर उनकी रिपोर्ट सार्वजनिक की जाती है तो वे भविष्य में दो बार सोचेंगे। यह गंभीर चिंता का विषय है। दरअसल, यह मामला समलैंगिक वकील सौरभ कृपाल से जुड़ा है। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम कृपाल को दिल्ली हाईकोर्ट में नियुक्त करना चाहता है, लेकिन केंद्र ने कृपाल के नाम पर आपत्ति दर्ज कराई थी। केंद्र ने इसके लिए खुफिया एजेंसी रॉ-आईबी की रिपोर्ट का हवाला दिया था। इसमें समलैंगिक वकील सौरभ कृपाल के विदेशी पार्टनर को लेकर सवाल खड़ा किया गया है।

मोदी सरकार ने शहबाज सरकार को भेजा न्योता, चीन और रूस भी लेंगे हिस्सा

भारत आएंगे पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश और विदेश मंत्री!

इस्लामाबाद (एजेंसी)। भारत ने पाकिस्तान के प्रधान न्यायाधीश उमर अता बंदियाल और विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठकों में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया है, जिसमें रूस और चीन भी शामिल हैं। एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने बताया कि भारत वर्तमान में एससीओ की अध्यक्षता कर रहा है, जिसमें रूस, चीन, भारत, पाकिस्तान, ईरान और मध्य एशियाई राज्य शामिल हैं। एससीओ के अध्यक्ष के रूप में, नई दिल्ली कई कार्यक्रमों की मेजबानी करने के लिए तैयार है, जिसमें सदस्य राज्यों के मुख्य न्यायाधीशों का एक सम्मेलन, विदेश मंत्रियों की बैठक और 2023 में एक शिखर सम्मेलन शामिल हैं। एससीओ के मुख्य न्यायाधीशों की बैठक मार्च में होनी है जबकि विदेश मंत्रियों की बैठक मई में होगी। आधिकारिक सूत्रों ने सोमवार को द एक्सप्रेस ट्रिब्यून से पुष्टि की है कि भारत ने मुख्य न्यायाधीशों और विदेश मंत्रियों की बैठक के लिए पाकिस्तान को निमंत्रण भेजा है।

2024 के लिए मंडल को जिंदा करने की तैयारी!

समाज तोड़ने वाले बयानों पर हैरान कर रही सीएम नीतिश की चुप्पी

फिर से 90 के दशक की ओर घूमती दिख रही है बिहार की राजनीति

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजनीति में यह वो खास समय है जब लगभग प्रबुद्ध नेता दिशाहीन हो गए है। आश्चर्य तो यह है कि जिस समाज को आगे ले जाने का संकल्प लेते हैं उस संकल्प को वे खुद अतीत की साए में ढक कर निज स्वार्थ की राजनीति करने लगे हैं। पिछले दिनों राज्य में बयानवीरों ने जो विभेद की सीमा रेखा खींची है वह आज के समय में प्रासंगिक भी नही थी। ऐसे में राज्य के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार की चुप्पी दिलों को बांटने वाली वर्तमान राजनीति के नायक की प्रतीति करती है। सवाल तो राज्य के विभिन्न वर्गों के आम लोगों ने भी उठाया है कि बयानों की राजनीति से किसका विकास करना चाहते हैं नीतिश कुमार।

बिहार की राजनीति को बेलगाम कहा जा रहा है तो इसके कुछ कारण भी हैं। यह कारण सरकार में शामिल वरीय मंत्रियों ने समाज को दिया है। हालिया बयान राज्य के राजस्व मंत्री आलोक मेहता था जो चौंकाने वाला था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 10°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 25 जनवरी 2023

इस दुनिया में सभी भेद-भाव किसी स्तर के हैं, ना कि प्रकार के, क्योंकि एकता ही सभी चीजों का रहस्य है।

विदुर नीति

मिशन 2024 के बड़े सिपाही होंगे एकनाथ शिंदे

पीएम मोदी के बन रहे खास; बीएमसी से लोकसभा तक का है मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के काफी घुलते मिलते नजर आए। कहा जा रहा है कि पूरे कार्यक्रम के दौरान दोनों नेता लगातार आपस में चर्चा में जुटे रहे। अब इन नजदीकियों के तार आगामी लोकसभा और विधानसभा

चुनाव से भी जोड़कर देखे जा रहे हैं। इसके अलावा विपक्ष भी सीएम शिंदे को उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का जिक्र कर घेरता रहा है। शिवसेना में फूट और राज्य में भाजपा-शिंदे की सरकार आने के बाद पीएम मोदी पहली बार मुंबई पहुंचे थे। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, भाजपा के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने बताया, पीएम ने हाव भाव और बातों से यह साफ कर दिया हैकि शिंदे भाजपा के लिए खास हैं। जून-जुलाई में राज्य में महाविकास अघाड़ी सरकार गिर गई थी। कहा जा रहा है कि शिंदे के प्रति मोदी का झुकाव एयरपोर्ट पर उतरने के साथ ही देखा जा रहा था। उन्होंने सीएम के कंधे पर हाथ रखा, भाषण की तारीफ की।

कुरान जलाए जाने से तुर्की के राष्ट्रपति आग बबूला

- स्वीडन के नाटो में शामिल होने का नहीं करेंगे समर्थन

इस्तांबुल (एजेंसी)। स्वीडन में कुरान जलाए जाने की घटना पर मुस्लिम देश भड़के हुए हैं। पाकिस्तान से लेकर सऊदी अरब तक ने तीखी प्रतिक्रिया जताई है। इस बीच अब तुर्की के राष्ट्रपति ने सोमवार को कहा कि इस्लाम विरोधी कार्यकर्ता और कुर्द समर्थक समूहों की ओर से स्टॉकहोम में सप्ताहांत के विरोध प्रदर्शन के

बाद स्वीडन को नाटो सदस्यता के लिए अंकारा के समर्थन की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इससे पहले पिछले साल रूस के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए स्वीडन ने नाटो में शामिल होने के लिए आवेदन दिया था। तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैय्यब एर्दोदान ने शनिवार को रासमुस पलुदन के कुरान जलाने संबंधी विरोध की निंदा करते हुए कहा कि यह सभी का अपमान है, खासकर मुसलमानों का। उन्होंने स्टॉकहोम में तुर्किये दूतावास के बाहर प्रदर्शन की अनुमति देने के लिए स्वीडिश अधिकारियों की भी आलोचना की। एर्दोआन ने कुर्द-समर्थक विरोध के लिए भी स्वीडन की आलोचना की, जहां प्रदर्शनकारियों ने कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी या पीकेके सहित विभिन्न कुर्द समूहों के झंडे लहराए। इस संगठन ने तुर्किये के खिलाफ दशकों से विद्रोह छेड़ रखा है।

हंगामे के बाद टाला गया दिल्ली मेयर का चुनाव

- एमसीडी हेडक्वार्टर में बीजेपी-एएपी मेंबर्स की नारेबाजी; मेज पर चढ़े, बोतलें फेंकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मेयर, डिप्टी मेयर और स्थायी समिति के सदस्यों के चुनावों की प्रक्रिया मंगलवार को स्थगित कर दी गई। एमसीडी के सिविक सेंटर में वोटिंग शुरू होते ही हेडक्वार्टर में भारी हंगामा शुरू हो गया। एएपी-बीजेपी मेंबर्स ने नारेबाजी की; बैरिकेड्स पर

चढ़ गए और एक दूसरे पर बोतलें फेंकी। हंगामे के कारण सदन अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। इसके पहले एमसीडी में 10 मनोनीत सदस्यों को शपथ दिलाई गई। इस दौरान भी एएपी नेताओं ने नारेबाजी की। भाजपा नेताओं ने भी जय श्रीराम और भारत माता की जय के नारे लगाए। केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि बहुत दुख का विषय है कि वोट डालने के लिए सभी बैठे थे लेकिन फिर हंगामा हो गया। ऐसा नहीं होना चाहिए, लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पालन होना चाहिए। एएपी ने महापौर पद के लिए शैली ओबेरॉय और भाजपा ने रेखा गुप्ता को मैदान में उतारा है। ऐसे में राजधानी को एक महिला मेयर मिलना तय है।

तेलंगाना के चुनावी समर के लिए बीजेपी ने रचा प्लान!

केसीआर के गढ़ को भेदने के लिए अपनाई नई तरकीब

हैदराबाद (एजेंसी)। बीजेपी तेलंगाना में विधानसभा चुनावों के मद्देनजर पार्टी में बड़ा सांगठनिक फेरबदल करने जा रही है। सूत्रों के मुताबिक कम से कम तीन उपाध्यक्ष और छह जिला प्रभारियों को उनके पद से मुक्त किया जाएगा। वहीं इनकी जगह पर दूसरे को पद दिए जाने की संभावना नहीं है। क्योंकि बीजेपी अपने प्लान के मुताबिक पार्टी का संचालन पुराने हाथों से ही करना चाहती है। पार्टी में यह परिवर्तन तेलंगाना बीजेपी प्रमुख बंदी संजय कुमार के कार्यकाल विस्तार की आधिकारिक पुष्टि के बाद होगा। तेलंगाना बीजेपी अध्यक्ष का कार्यकाल फरवरी में समाप्त हो रहा है। माना जा रहा है कि इसके बाद जरूर इसको लेकर घोषणा की जा सकती है। यानी कुल मिलाकर कहें तो बीजेपी सूबे की सत्ता

पर काबिज केसीआर की बीआरएस पार्टी को कड़ी टक्कर देने की तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। बीजेपी विधानसभा चुनावों को लेकर इस इरादे से उतर रही है। जिससे कि चुनावी लड़ाई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अच्छे विकास कार्य और मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव की नाकामी साबित की जाए। इसके साथ ही दोनों पार्टियों के बीच चुनावी मुकाबला बनाया जा सके। सोमवार को महबूंगर में पदाधिकारियों की बैठक की गई।

अभी नहीं तो कभी नहीं, कम जनसंख्या बड़ा संकट...

जापान के पीएम किशिदा ने देश को दे दी डराने वाली चेतावनी

टोक्यो (एजेंसी)। जापान के प्रधानमत्री फुमियो किशिदा ने जनसंख्या संकट पर देश को आगाह किया है। उन्होंने सोमवार को चेतावनी दी कि कम होती जन्मदर की वजह से देश सामाजिकता को बरकरार रखने में सक्षम नहीं होने की कगार पर पहुंच गया है। जापान के सांसदों को संबोधित करते हुए किशिदा ने कहा कि अब जनसंख्या संकट वह मुद्दा बन चुका है जिसका समाधान अब नहीं किया गया तो कभी नहीं हो पाएगा। उनकी मानें तो अब बिल्कुल इंतजार नहीं किया जा सकता है। किशिदा ने कहा, स्थिरता और समग्रता को सोचते हुए जो हमारे देश की

अर्थव्यवस्था और समाज के लिए जरूरी है, हम अपनी सबसे महत्वपूर्ण नीतियों के तौर पर बच्चे के पालन-पोषण का समर्थन करते हैं। किशिदा ने कहा कि वह चाहते हैं कि सरकार बच्चे से जुड़े कार्यक्रम पर अपने खर्च को दोगुना कर दे और इस मुद्दे में ध्यान रखते हुए नई सरकारी एजेंसी अप्रैल में शुरू होगी। जापान दुनिया का वह देश है जहां पर जन्मदर सबसे कम है। देश के स्वास्थ्य मंत्रालय को आशंका है कि साल 2022 में आठ लाख से भी कम बच्चों ने जन्म लिया है। देश में साल 1899 से बच्चों के जन्म का रेकॉर्ड रखना शुरू किया है। उसके बाद से यह पहला मौका है जब इतने कम बच्चों ने जन्म लिया है। जापान में सर्वोच्च उच्चतम जीवन प्रत्याशा भी रेकॉर्ड की जा चुकी है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक साल 2020 में 1500 लोगों में एक व्यक्ति की उम्र 100 साल या इससे ज्यादा है। इन ट्रेंड्स की वजह से जापान में एक नया संकट पैदा हो गया है।

वाह! बेमिसाल हैं देश के ये बच्चे

11 'बालवीरों' का कमाल जानकर इनके फैन हो जाएंगे आप

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस साल राष्ट्रीय बाल पुरस्कार की अलग-अलग कैटेगिरी में देश भर से 11 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार यानी पीएमआरबीपी-2023 के लिए चुना गया है। पुरस्कार पाने वालों में 11 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के 6 लड़के और 5 लड़कियां शामिल हैं।

महाराष्ट्र के 15 साल के रोहन रामचंद्र बहिर ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक महिला की जान बचाई, तो 8 साल के ऋषि शिव कम उम्र में ही ऐप डेवलपर बन गए। ऐसे कमाल के हुनर वाले 11 बच्चे 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2023' से सम्मानित किए गए, जिनकी मेहनत, जोश और नया रचने का रोमांच बड़ों को भी प्रेरित करता है। बहादुरी, इनोवेशन, सोशल सर्विस से लेकर खेलकूद, आर्ट-कल्चर, इन पांच फील्ड में 11 राज्यों के ये इन बच्चों को सोमवार को देश की राष्ट्रपति ने इस पुरस्कार से सम्मानित किया। सोमवार को विज्ञान भवन में हुए इस कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अलावा महिला और बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी और केंद्रीय राज्य मंत्री मुंजपारा महेंद्र उपस्थित हुए। अपने माता-पिता और परिवार वालों के साथ इस कार्यक्रम में पहुंचे इन 11 बच्चों को 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2023' राष्ट्रपति ने सम्मानित किया। बच्चों को मेडल समेत 1 लाख रुपये की राशि सम्मान के तौर पर मिली।

राष्ट्रपति ने बच्चों को बधाई दी और आगे भी देश को अपना बेहतरीन देने के लिए उनकी हौसलाअफजाई की। इन बच्चों की प्रतिभा कमाल की है। लंबे अंतराल तक तबला बजाने के लिए 12 साल की असम की श्रेया भट्टाचार्या का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज है, तो गुजरात के शौर्यजीत रंजीत कुमार खैरे नेशनल लेवल के मलाखंब खिलाड़ी हैं, जिन्होंने सबसे कम उम्र में पिछले साल नेशनल गेम्स में ब्रॉन्ज मेडल जीता। आंध्र प्रदेश की इंटरनेशलन चेस प्लेयर 11 साल की कोलागतला अलाना मीनाक्षी 4 साल की उम्र से चेस खेल रही हैं और वर्ल्ड नंबर 1 का खिताब जीत चुकी हैं, तो 17 साल की ओडिशी डांसर गौरवी रेड्डी 2016 में इंटरनेशलन डांस काउंसिल में नॉमिनेट होने वाली सबसे युवा आर्टिस्ट रहीं। गुजरात के शौर्यजीत रंजीत कुमार खैरे नेशनल लेवल के मलखंब खिलाड़ी हैं, जिन्होंने सबसे कम उम्र में पिछले साल नेशनल गेम्स में ब्रॉन्ज मेडल जीता। आंध्र प्रदेश की इंटरनेशलन चेस प्लेयर 11 साल की कोलागतला अलाना मीनाक्षी 4 साल की उम्र से चेस खेल रही हैं और वर्ल्ड नंबर 1 का खिताब जीत चुकी हैं।

नीतीश कुमार को अपने ही नेताओं पर भरोसा नहीं

- बीजेपी तो ललन सिंह का भी स्वागत करने को तैयार

पटना (एजेंसी)। क्या नीतिश कुमार मानसिक तौर पर परेशान है। मुख्यमंत्री को अपने ही दल के नेताओं पर विश्वास नहीं रहा। क्या बिहार में हाल के दिनों में घटने वाली घटनाओं से सीएम चिड़चिड़े हो गए हैं और क्या नीतिश कुमार के जेडीयू में टूट का खतरा मंडरा रहा। सियासी गलियारे के साथ-साथ जनता के मन में भी यही सवाल कौंध रहा है। जेडीयू में टूट को लेकर लगाए जा रहे कयास पर बीजेपी ने चुप्पी तोड़ी है। पार्टी के प्रदेश

अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने इस मामले में बड़ा बयान दिया है। संजय जायसवाल ने कहा कि नीतिश कुमार के नेतृत्व वाली सरकार पर तगड़ा अटैक किया। उन्होंने कहा कि जबसे दोबारा लालू यादव की पार्टी आरजेडी के साथ मिलकर सरकार बनाई, तभी से राज्य में जंगलराज की वापसी की शुरुआत हो गई। सीएम नीतिश भी यह बात जानते हैं लेकिन अब उन्हें अपनी पार्टी के नेताओं से ज्यादा आरजेडी नेताओं पर भरोसा होने लगा है। बिहार बीजेपी अध्यक्ष ने खास बातचीत में कहा कि नीतिश कुमार को बीजेपी ने नहीं छोड़ा था बल्कि खुद उन्होंने भ्रष्टाचारी और जंगलराज वालों के साथ हाथ मिलाया था।

एक और ब्रिटिश निशानी का खात्मा

गणतंत्र दिवस पर इस बार गरजेंगी देसी तोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। 74वां गणतंत्र दिवस इस बार बेहद खास रहने वाला है। कर्तव्य पथ पर परेड में इस बार केवल मेड इन इंडिया हथियारों का प्रदर्शन किया जाएगा। इस बार का गणतंत्र दिवस बेहद खास है। अब तक ब्रिटिश 21 पाउंडर तोप से सलामी दी जाती थी जबकि इस बार देश में बने 105 एमएम फील्ड गन से सलामी दी जाएगी। यही नहीं इसमें इस्तेमाल गोला भी स्वदेशी ही होगा। 105 एमएम इंडियन गन काफी बेहतर प्रदर्शन करता है। देश में बने इस गन को मैदान से लेकर मरुस्थल में आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है। इस बार 21 105 एमएम इंडियन गन राष्ट्रपति को सलामी देंगे। 105 एमएम इंडियन गन को मौजूदा युद्ध की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। इसकी मारक क्षमता, लाने और ले जाने में आसानी होती है। इस गन में युद्ध का परिदृश्य बदलने की क्षमता है। गौरतलब है कि भारत सरकार ने अब स्वदेशी हथियारों को आगे बढ़ा रही है। इसी कड़ी में अब ब्रिटिश जमाने के हथियार को छोड़कर स्वदेशी हथियार अपनाए जा रहे हैं।

इस बार बजट में दिखेगी भारत की सैन्य तैयारी

होगा 50 हजार करोड़ का इजाफा, चीन से तल्खी जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के बाद अब चीन सीमा पर भी रक्षा चुनौतियां बढ़ गई हैं, इसलिए सरकार रक्षा तैयारियों को चुस्त-दुरस्त करने में लगी है। इसका असर रक्षा बजट में भी दिख सकता है। उम्मीद की जा रही है कि रक्षा बजट में करीब 50 हजार करोड़ तक की बढ़ोतरी हो सकती है। नए वर्ष का रक्षा बजट 5.25 लाख करोड़ से बढ़कर 5.75 लाख करोड़ तक पहुंच सकता है। प्रतिशत में यह बढ़ोत्तरी 9-10 फीसदी के बीच रहेगी। रक्षा सूत्रों के अनुसार, सबसे ज्यादा बढ़ोतरी रक्षा आधुनिकीकरण के बजट में होने की संभावना है। चालू वर्ष के दौरान यह 1.52 लाख करोड़ था। इसमें करीब 25-30 हजार करोड़ की वृद्धि का अनुमान लगाया जा रहा है। पिछले साल आधुनिकीकरण के बजट में करीब 16 हजार करोड़ रुपये की बढ़ोत्तरी हुई थी। यह पिछले बजट से 19 फीसदी अधिक था। इस बार भी यह वृद्धि 20-22 फीसदी रहने के आसार हैं। दरअसल, नए वित्त वर्ष में 126 मल्टी रोल लड़ाकू विमानों की खरीद पर भी निर्णय होने की संभावना है जो वायुसेना के लिए अहम हैं। कई रक्षा सौदे जो अभी प्रक्रिया में हैं, उन पर अमल शुरू होगा जिसके लिए बड़ी राशि के भुगतान की जरूरत होगी। सबसे ज्यादा चुनौती पेंशन के बढ़ते बजट की रक्षा सूत्रों के अनुसार सबसे ज्यादा चुनौती पेंशन के बढ़ते बजट की है। दरअसल, ओआरओपी लागू होने के बाद इसमें भारी बढ़ोत्तरी हुई है और चालू वर्ष के दौरान यह 1.19 लाख करोड़ है।

बंगाल के बोर्ड पेपर में पीओके को बताया आजाद कश्मीर

एक हफ्ते में दूसरी बार सामने आई ऐसी गलती, केंद्र ने मांगा जवाब

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में 10वीं के प्री-बोर्ड एग्जाम में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) को आजाद कश्मीर बताने को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। ऑल बंगाल टीचर्स एसोसिएशन की तरफ से पब्लिश किए गए टेस्ट पेपर में पीओके की जगह आजाद कश्मीर लिखकर इस पर छात्रों को नोट लिखने को कहा गया। एक हफ्ते पहले भी राज्य के बोर्ड ऑफ

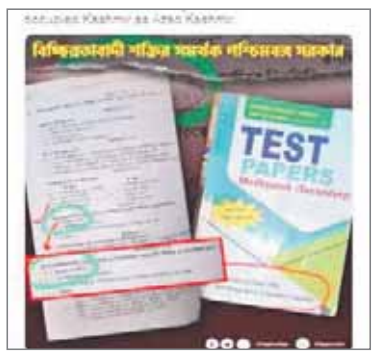

सेकेंडरी एजुकेशन ने भी पीओके की जगह आजाद कश्मीर लिखकर छात्रों से से कुछ ऐसे ही सवाल किए थे। जिसे लेकर पहले से बवाल मचा हुआ है। इन सवालों पर विवाद इसलिए हो रहा है क्योंकि कश्मीर के जिस हिस्से को पाकिस्तान ने अपने कब्जे में ले रखा है, उसे भारत पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) कहता है। इसी हिस्से को पाकिस्तान ने आजाद कश्मीर का नाम दिया हुआ है। भारत सरकार आजाद कश्मीर नाम को मान्यता नहीं देती है। यह राज्य के वामपंथी स्कूल टीचर्स का संगठन है। इसके जनरल सेक्रेटरी सुकुमार पैन ने माना कि एसोसिएशन के टेस्ट पेपर में ऐसा सवाल पूछा गया था।

सर्जिकल स्ट्राइक पर दिग्विजय के बयान से सहमत नहीं राहुल

कहा-सेना कुछ करे तो उसे सबूत की जरूरत नहीं, हमें उस पर पूरा भरोसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी ने मंगलवार को कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह के बयान से पल्ला झाड़ लिया। उन्होंने कहा- सेना के शौर्य पर कभी सवाल नहीं उठाया है। अगर सेना कुछ करती है तो उस पर सबूत की जरूरत नहीं। ये दिग्विजयजी की निजी राय है। मैं इससे सहमत नहीं हूं। जब हम अंग्रेजों से लड़ रहे थे, तब भाजपा-संघ के लोग उनके साथ थे। उन्हीं के नेताओं ने दो देशों का कॉन्सेप्ट दिया। जहां तक दिग्विजय जी के बयान की बात है। उन्होंने जो सर्जिकल स्ट्राइक पर कहा, उससे हम पूरी तरह डिसएग्री करते हैं। हमारी आर्मी पर हमें पूरा भरोसा है। अगर आर्मी कुछ करे तो सबूत देने की जरूरत नहीं। मैं दिग्विजय सिंह के बयान से पूरी तरह असहमत हूं। निजी तौर पर मेरा यह मानना है कि दिग्विजयजी ने जो कुछ भी कहा, वह उनकी निजी राय है। कांग्रेस पार्टी भी इससे सहमत नहीं है। जम्मू में ही मंगलवार को भारत जोड़ो यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह से सवाल पूछने पर साथी जयराम रमेश भड़क गए। मीडिया दिग्विजय से सर्जिकल स्ट्राइक पर दिए बयान पर सवाल कर रहा था। इसी दौरान जयराम रमेश आए और कहने लगे- बहुत हो गया। आप लोग हमें चलने दीजिए। हम सभी सवालों के जवाब दे चुके हैं। आप

प्रधानमंत्री से जाकर सवाल पूछिए। दिग्विजय सिंह ने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान ही कहा था कि सरकार ने कभी सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत नहीं दिया। विवाद बढ़ा तो बाद में सफाई भी दी थी कि हम भारतीय सेना का सम्मान करते हैं और वह हमारे लिए सबसे ऊपर है। दिग्विजय के बयान पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा- दिग्विजय के शासन में मध्य प्रदेश सिमी का गढ़ था। ये कैसी भारत जोड़ो यात्रा है। इसमें टुकड़े-टुकड़े गैंग चल रहा है। राहुल कह रहे हैं कि सेना कमजोर हो गई है। कांग्रेस के डीएनए में ही पाकिस्तान परस्ती है। कभी सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांगते हैं। कभी भगवान राम पर सवाल उठाते हैं। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने सोमवार को 2016 में हुए सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाया था। उन्होंने जम्मू में कहा था कि सरकार ने अब तक सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत नहीं दिया है। केंद्र सरकार सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में बात करती है कि हमने इतने लोग मार गिराए हैं, लेकिन सबूत कुछ नहीं है। दिग्विजय ने सर्जिकल स्ट्राइक के अलावा 2019 में पुलवामा में हुए आतंकी हमले को लेकर भी प्रधानमंत्री को घेरा। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि पुलवामा हमले के वक्त अफसरों ने कहा था कि जवानों को एयरक्राफ्ट से मूवमेंट कराया जाए, पर प्रधानमंत्री नहीं माने।

एस.एस.एम.डब्ल्यू.ए. की 7वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

भोपाल में आयोजित होगी

सुबह सवेरे, भोपाल। सोशल साईंस एण्ड मैनेजमेंट वेलफेयर एसोसिएशन एवं रेडियंट ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन, मध्यप्रदेश के द्वारा दिनांक 12-13 फरवरी, 2023 को 11 बजे से होटल पुखराज, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के सामने भोपाल में 7वां अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय बहुविषयक अनुसंधान में ग्रामीण, कृषि और उद्योग विकास है। संगोष्ठी के सचिव डॉ. मनोज शर्मा ने बताया संगोष्ठी में देश एवं विदेश के प्राध्यापक एवं शोध छात्र शामिल होंगे। संगोष्ठी समिति के अध्यक्ष प्रो. सुदेश कुमार सोहानी-कुलपति आई.ई.एस. विश्वविद्यालय भोपाल, उपाध्यक्ष-डॉ. एस.एस. ठाकुर, डॉ. शरद तिवारी एवं डॉ. रामदीन त्यागी, डॉ. संगीता जोहरी, डॉ. अतुल दुबे, डॉ. सेजल बटरा, डॉ. लोकेश्वर सिंह, डॉ. भूपेन्द्र कुमार, ओमप्रकाश परमार, ब्रजेश उइके, डॉ. ममता पांडे, डॉ. कृष्णा सिंह, डॉ. ब्लैस मारिकर-फिलीपिंस, डॉ. एम.डी. जाहिर-बांग्लादेश, डॉ. मनोज मिश्रा-इथोपिया, बाबनगीडा अब्दुलाही-नाईजेरिया आदि संगोष्ठी समिति के सदस्य बनाये गये है।

मुख्यमंत्री ने लगाए आंवला, जामुन और सामिया केसिया के पौधे

राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित श्री मिश्रा और श्री चौहान ने भी किया पौध-रोपण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने श्यामला हिल्स स्थित उद्यान में आंवला, जामुन और सामिया केशिया के पौधे लगाए। भारत सरकार के खेल मंत्रालय द्वारा कर्नाटक के हुबली में आयोजित कार्यक्रम में 26वें राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित श्री शिवम मिश्रा और श्री शुभम चौहान ने मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ पौध-रोपण किया। श्री शिवम द्विवेदी तथा श्री देवेश शर्मा भी साथ थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ सीहोर की टीम संडे का सुकून के सर्वश्री कपिल जाट, हिमांशु राठौर, हर्ष राठौर, संकल्प करोदिया, रजत व्यास, सौरभ राठौर, दीपक परमार और मयंक तिवारी ने पौध-रोपण किया। यह टीम अपने पास उपलब्ध पर्याप्त संसाधनों को जरूरतमंद लोगों से साझा करने की सोच के साथ सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय है। अपनी व्यस्ततम जीवन शैली से थोड़ा समय निकालकर अपने नगर को सुंदर, सुनियोजित और आदर्श शहर बनाने के लिए कार्य करने के उद्देश्य से पिछले चार साल से टीम लोगों को प्रेरित कर रही है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ टेलीविजन चैनल स्वदेश न्यूज की सुश्री मुक्ता पाठक ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर पौधा लगाया। स्वदेश न्यूज के श्री ताहिर खान तथा श्री शैलेन्द्र रावत भी साथ थे।

श्री जगदीश किंजल्क की सेवाएँ स्मरणीय रहेंगी

मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ लेखक श्री किंजल्क के निधन पर दुख व्यक्त किया

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वरिष्ठ लेखक और आकाशवाणी के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री जगदीश किंजल्क के निधन पर दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि श्री किंजल्क एक आदर्श शिक्षक, लेखक और एक अच्छे मनुष्य के रूप में सदैव याद किए जाएंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि स्व. किंजल्क जीवनभर साहित्य सृजन से जुड़े रहे, लेखन उन्हें विरासत में मिला था। किंजल्क जी ने परिचर्चा लेखन जैसी विधा को हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रतिष्ठा दिलवाई। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि स्व. श्री किंजल्क नए लेखकों को प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने साहित्य कर्मियों को पुरस्कार प्रदान करने का सेवा कार्य किया। उनकी सेवाओं को याद रखा जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और उनके परिजन को यह दुख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की है।

उल्लेखनीय है कि स्व. श्री किंजल्क ने भोपाल के एक निजी अस्पताल में अंतिम साँस ली। वे कुछ दिन से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अंतिम संस्कार बुधवार को भोपाल में होगा। स्व. श्री किंजल्क आकाशवाणी से लंबे समय तक जुड़े रहे। उन्होंने आकाशवाणी छतरपुर, भोपाल, जबलपुर, सागर, शिवपुरी को सेवाएँ दी। वे राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित हुए थे। उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में परिचर्चा की विधा इजाद की। पत्रिका धर्मयुग से लंबे समय तक जुड़े रहे। देश के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे। स्व. श्री जगदीश किंजल्क ने मॉडल स्कूल भोपाल में शिक्षक के तौर पर भी सेवाएँ दी।

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव

प्ले जोन बना लर्न और फन का प्लेटफॉर्म

भोपाल (नप्र)। भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव में मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद की प्ले जोन पर केन्दित मेगा एक्सपो में लगी प्रदर्शनी सर्वाधिक आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। प्रदर्शनी के कोर्डिनेटर और वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक श्री शिव नारायण रजक ने बताया कि प्रदर्शनी में फिजिक्स के बेसिक प्रिंसिपल पर आधारित खिलौने तैयार किये गए हैं, जिन्हें बच्चे बहुत पसंद कर रहे हैं। इसमें ऑप्टिकल टेबल, वैल्यू ऑफ पाई, इलेक्ट्रोमेग्नेट, टेलिस्कोप, फ्रोजेन शेडो, टेनग्राम, डबल पेरी स्कोप जैसे 16 खेल बच्चों के लिए डिस्प्ले किये गये हैं। श्री रजक ने बताया कि हमारा उद्देश्य खेल-खेल में बच्चों को फिजिक्स की बारीकियों से अवगत कराना है। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में शामिल सभी इक्विपमेंट कोलकाता के नेशनल कॉउंसिल ऑफ साइंस म्यूजियम से मँगाए गए हैं।

श्री प्रवीण श्रीवास्तव को राज्य मंत्री का दर्जा

भोपाल(नप्र)। मध्यप्रदेश राज्य सांख्यिकी आयोग के अध्यक्ष श्री प्रवीण श्रीवास्तव को राज्य शासन ने राज्य मंत्री का दर्जा दिया है।सामान प्रशासन विभाग ने इस आशय के आदेश जारी कर दिए हैं।

विद्युत गृह सारनी की इकाई 10 और 11 ने 100 दिन लगातार विद्युत उत्पादन का बनाया रिकॉर्ड

दोनों इकाइयों का पीएएफ 100 फीसदी और पीएलएफ 98 फीसदी से अधिक

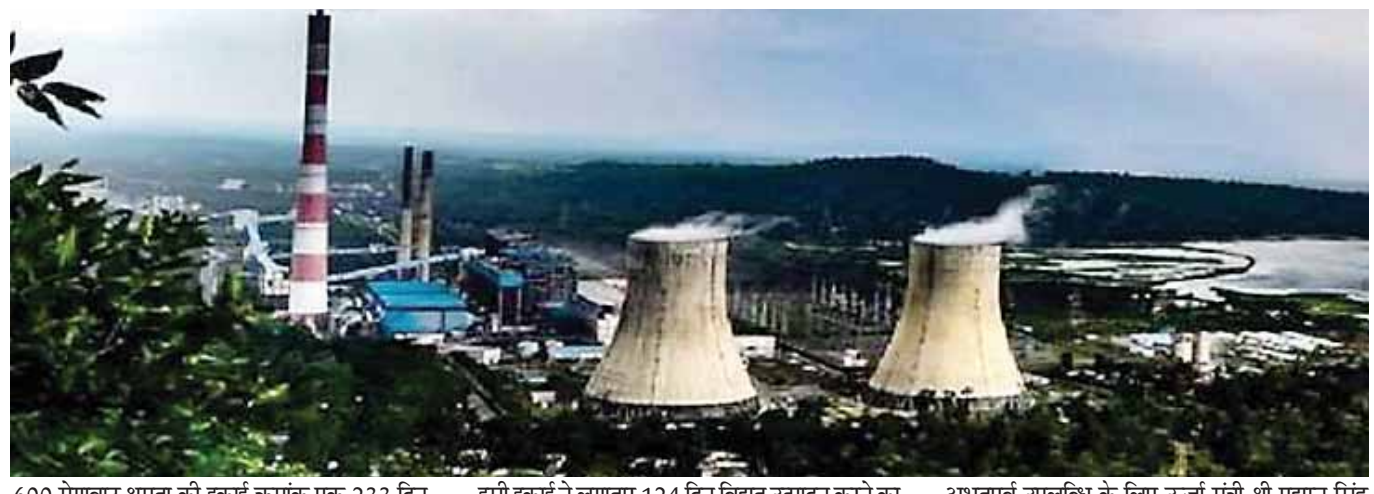

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी के विद्युत गृह क्रमांक चार की 250-250 मेगावाट स्थापित क्षमता की इकाई क्रमांक 10 एवं 11 ने गत दिवस लगातार 100 दिन तक विद्युत उत्पादन करने में सफलता हासिल की है। ये दोनों इकाइयाँ विगत वर्ष से सतत विद्युत उत्पादन कर कीर्तिमान बना रही हैं। इससे पूर्व इकाई क्रमांक 10 ने लगातार 213 दिन, इकाई क्रमांक 11 ने लगातार 202 दिन और 113 दिन तक विद्युत उत्पादन करने का रिकॉर्ड कायम किया था।

पीएएफ और पीएलएफ में कमाल किया दोनों इकाइयों ने- सारनी की इकाई क्रमांक 10 द्वारा 100.8 प्रतिशत पीएएफ (प्लांट अबेविलिटी फेक्टर) और 98.5 प्रतिशत पीएलएफ (प्लांट लोड फेक्टर) हासिल किया गया। वहीं इकाई क्रमांक 11 को 101 प्रतिशत पीएएफ और 98.7 प्रतिशत पीएलएफ अर्जित करने में सफलता मिली।

अन्य विद्युत इकाइयों ने भी बनाए हैं लगातार विद्युत उत्पादन के कीर्तिमान- मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के विभिन्न ताप विद्युत गृहों की इकाइयों ने इससे पूर्व लगातार विद्युत उत्पादन करने के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह खंडवा की 600 मेगावाट क्षमता की इकाई क्रमांक एक 233 दिन, 660 मेगावाट क्षमता की इकाई क्रमांक चार 102 दिन और संजय गांधी ताप विद्युत गृह बिरसिंगपुर की 210 मेगावाट क्षमता की इकाई क्रमांक तीन ने 119 दिन, 210 मेगावाट क्षमता की इकाई क्रमांक चार ने 130 दिन और इसी इकाई ने लगातार 124 दिन विद्युत उत्पादन करने का कीर्तिमान रचा है।

ऊर्जा मंत्री ने दी बधाई- सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी के विद्युत गृह क्रमांक चार की इकाई 10 एवं 11 द्वारा लगातार 100 दिन तक विद्युत उत्पादन करने की अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, प्रमुख सचिव ऊर्जा श्री संजय दुबे और पावर जनरेटिंग कंपनी के प्रबंध संचालक श्री मनजीत सिंह ने हर्ष व्यक्त किया है। उन्होंने विद्युत गृह क्रमांक चार के समस्त अभि?यंताओं और कार्मिकों को बधाई दी है।

प्रदेश के 70 हजार बिजलीकर्मी स्ट्राइक पर

कामों का बहिष्कार, धरने पर बैठे; लाइन फॉल्ट भी नहीं सुधारेंगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के 70 हजार से ज्यादा बिजलीकर्मी मंगलवार से हड़ताल पर चले गए। यूनाइटेड फोरम फॉर पावर इंप्लाइज एवं इंजीनियर्स के बैनरतले उन्होंने कामों का बहिष्कार कर दिया। वे न

तो लाइन फॉल्ट सुधार रहे हैं और न ही नए बिजली कनेक्शन दे रहे। ऐसे में आम लोगों के सामने मुश्किलें बढ़ जाएंगी। मंगलवार सुबह 11 बजे से भोपाल के गोविंदपुरा में धरना भी दिया जा रहा है। आउटसोर्स कर्मचारी पहले ही हड़ताल पर चल रहे हैं। जिसका समर्थन भी यूनाइटेड फोरम कर चुका है। इधर, हड़ताल पर ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि बैठकर चर्चा करेंगे।

संविदा एवं आउटसोर्स कर्मचारी 21 जनवरी से अनिश्चितकालीन आंदोलन कर रहे हैं। यूनाइटेड फोरम ने उनका समर्थन किया है। फोरम के प्रवक्ता लोकेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि 24 जनवरी से अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार शुरू कर दिया है। प्रदेश के बोर्ड, नियमित, संविदा एवं आउटसोर्स कर्मी अपनी मांगों को पूर्ण कराने के संबंध में महाआंदोलन में शामिल हो रहे हैं। भोपाल के गोविंदपुरा में धरना प्रदर्शन शुरू किया है।

ये काम होंगे प्रभावित

- लाइन फॉल्ट होने पर उसे सुधारने के लिए अमला नहीं पहुंचेगा। इस कारण लोग परेशान होंगे।
- नए बिजली कनेक्शन नहीं दिए जाएंगे। इस कारण लोगों को नए कनेक्शन के लिए इंतजार करना पड़ेगा।
- बिजली बिलों की वसूली भी नहीं हो सकेगी।
- पेट्रोलिंग, सर्वे के काम नहीं होंगे।
- मध्यप्रदेश के 70 हजार से ज्यादा बिजलीकर्मी हड़ताल पर रहेंगे।
- मध्यप्रदेश के 70 हजार से ज्यादा बिजलीकर्मी हड़ताल पर रहेंगे।

कर्मचारियों की यह मांगें

- संविदा बिजलीकर्मियों को तुरंत नियमित किया जाए।
- आउटसोर्स कर्मचारियों को संविलियन करते हुए कार्यावधि एवं वरिष्ठता के अनुसार वेतनवृद्धि प्रदान करते हुए उनके भविष्य को सुरक्षित करने की नीति बनाई जाए। 20 लाख रुपए तक दुर्घटना बीमा भी कराया जाए।
- पुरानी पेंशन बहाल की जाए। ताकि, रिटायरमेंट के बाद कर्मचारी और उनके परिवार का भविष्य सुरक्षित हो सके।
- वेतन विसंगतियों को दूर करने के लिए कमेटी बनाई जाए।
- कई वर्षों से लंबित फ्रिंज बेनिफिटस का पुर्ननिरीक्षण करते हुए सभी अधिकारी-कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिए केसलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लागू की जाए।

एनआरआई मीट के चलते पहले स्थगित हो चुकी हड़ताल

फोरम के प्रदेश संयोजक केएस परिहार ने बताया कि इससे पहले 6 जनवरी को अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने वाले थे, लेकिन में एनआरआई मीट के चलते यह स्थगित कर दी गई थी। हमें आश्वासन दिया गया था कि 15 दिन के भीतर मुख्यमंत्री के समक्ष बैठक कराई जाएगी, लेकिन यह अवधि बीत गई। अब तक कोई बैठक नहीं हुई और न ही मांगों पर विचार किया गया। इसी बीच 21 जनवरी से आउटसोर्स कर्मचारियों ने हड़ताल शुरू कर दी है। वे कार्यों का बहिष्कार कर रहे हैं। फोरम उनकी मांगों का समर्थन करता है। मंगलवार से हमने भी कार्यों का बहिष्कार शुरू कर दिया।

गणतंत्र दिवस की फाइनल रिहर्सल

नेशनल एंथम की धुन बजाई, हैड कॉन्स्टेबल को दी सलामी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में 74वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास, धूमधाम एवं गरिमामय तरीके से मनाने की तैयारी पूरी हुई। 24 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड की फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल हुई। गणतंत्र दिवस समारोह में निकलने वाली संयुक्त परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अंतिम अभ्यास मंगलवार को लाल परेड ग्राउंड पर किया गया। मौके पर मौजूद पुलिस महानिदेशक सुधीर कुमार सक्सेना ने कार्यक्रम में होने वाली परेड एवं व्यवस्थाओं का जायजा लिया। देश इस साल 74वां गणतंत्र दिवस मनाएगा। मध्यप्रदेश में मुख्य कार्यक्रम 26 जनवरी को भोपाल के लाल परेड ग्राउंड पर सुबह 9 बजे आयोजित होगा। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल मौजूद रहेंगे। खुली जीप में घूमकर परेड का निरीक्षण किया।

मुख्य अतिथि ने सलामी ली- पिछले 18 साल से मुख्य अतिथि की भूमिका निभाते आ रहे सातवीं बटालियन के हैड कॉन्स्टेबल रामचन्द्र सिंह कुशवाहा ने प्रतीक स्वरूप मुख्य अतिथि की भूमिका निभाई और ध्वजारोहण कर संयुक्त परेड की सलामी ली। इसके बाद खुली जीप में घूमकर परेड का निरीक्षण किया। हर्ष फायर के बीच पुलिस बैंड ने निरीक्षक सुनील कटारे के निर्देशन में जन गण मन की धुन बजाई गई। मुख्य अतिथि के संदेश का प्रतीक स्वरूप भाषण भी किया गया। साथ ही राष्ट्रपति के सम्मान में जयकारे लगाए गए। हर्ष फायर के बाद पुलिस बैंड की मधुर धुन के बीच संयुक्त परेड निकली। परेड का नेतृत्व भारतीय पुलिस सेवा के वर्ष 2018 बैच के अधिकारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बालाघाट आदित्य मिश्रा ने किया। परेड टू-आई सी का दायित्व उप पुलिस अधीक्षक एटीएस राहुल कुमार सैयाम ने निभाया। संयुक्त परेड में गुजरात रिजर्व पुलिस बल, अश्वरोही दल व डॉग स्क्वायड सहित 19 दल शामिल रहे।

विद्यार्थियों ने भी किया अंतिम अभ्यास- संयुक्त परेड के बाद विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों एवं संकृति विभाग के रंगारंग सांकृतिक कार्यक्रमों का अंतिम प्रैक्टिस की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मानसरोवर पब्लिक स्कूल, सुभाष उत्कृष्ट स्कूल, डीपीएस नीलबड़ और सात स्कूलों के संयुक्त दल ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। साथ ही धूलिया एवं गौंड जनजाति के सुप्रसिद्ध लोकनृत्यों का अभ्यास भी किया गया।

दो दिन अधिकारी देते हैं हैड कॉन्स्टेबल को सलामी- परेड रिहर्सल के दौरान हैड कॉन्स्टेबल रामचंद्र सिंह कुशवाहा को पुलिस जवान और अधिकारी पूरे प्रोटोकॉल के साथ उन्हें राज्यपाल और मुख्यमंत्री की तरह ही ट्रीट करते हैं और सलामी देते हैं। बता दें पिछले 18 साल से हैड कॉन्स्टेबल रामचंद्र स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के रिहर्सल के मौके पर राज्यपाल और मुख्यमंत्री की भूमिका निभाते आ रहे हैं। इस तरह रामचंद्र कुशवाहा हर साल कुछ घंटों के लिए डमी मुख्यमंत्री और राज्यपाल बनते हैं।

भोपाल में शहडोल की युवती से गैंगरेप

जॉब की तलाश में आई थी, पुलिस की आंखों में पाउडर झोंककर भागे आरोपी

भोपाल (नप्र)। जॉब की तलाश में शहडोल से भोपाल आई युवती से गैंगरेप का मामला सामने आया है। युवती को रेलवे स्टेशन पर दो आरोपियों ने जॉब दिलाने का झांसा दिया। वे उसे स्टेशन के पास ही एक घर में लेकर गए, यहां गलत काम किया। वहीं एक अन्य आरोपी ने उससे छेड़छाड़ की। आरोपियों के चंगुल से छूटकर भागी युवती की मदद करने दो पुलिसकर्मी आए। यहां आरोपियों ने पुलिसकर्मियों की आंखों में पाउडर डाला और भाग निकले। घटना 12 जनवरी की है। पुलिसकर्मियों ने इसके बाद युवती को 500 रुपए देकर शहडोल भेज दिया था। वहां पहुंचकर उसने अपने माता-पिता को पूरी घटना बताई। इसके बाद परिजनों के साथ जाकर 19 जनवरी को एफआईआर दर्ज कराई। आगे की जांच के लिए सीधी थाना पुलिस ने केस डायरी भोपाल के मंगलवारा थाना पुलिस को भेजी है। फिलहाल आरोपियों की पहचान नहीं हो सकी। भोपाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नाबार्ड 2023-24 में मध्यप्रदेश में 2 लाख 58 हजार 598 करोड़ रूपये का ऋण उपलब्ध करायेगा

नाबार्ड के सहयोग का राज्य की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव होगा : वित्त मंत्री

भोपाल(नप्र)। राष्ट्रीय ग्रामीण एवं कृषि विकास बैंक-नाबार्ड द्वारा मध्यप्रदेश राज्य के विकास को गति देने के लिए वर्ष 2023-24 के लिये प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में 2 लाख 58 हजार 598 करोड़ रूपये की ऋण संभाव्यता का आकलन किया है। यह पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 6.43 प्रतिशत ज्यादा है। यह जानकारी आज यहाँ भोपाल में नाबार्ड के मध्यप्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा 'राज्य ऋण संगोष्ठी 2023-24' में दी गई। इसमें कृषि के लिये 1 लाख 80 हजार 160 करोड़ रूपये, एमएसएमई के लिये 65 हजार 832 करोड़ रूपये और अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के लिये 12 हजार 606 करोड़ रूपये ऋण शामिल हैं।

वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने संगोष्ठी में कहा कि इससे किसानों, उद्यमों से जुड़े कामगारों और राज्य की पूर्ण अर्थ-व्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। नाबार्ड के इस महत्वपूर्ण सहयोग से देश की 5 ट्रिलियन डालर अर्थ-व्यवस्था के लक्ष्य को हासिल करने में मध्यप्रदेश के 550 बिलियन डॉलर के योगदान के लक्ष्य को हासिल करने में मदद मिलेगी।

वित्त मंत्री ने कहा कि कोविड महामारी के समय में कृषि ही एक ऐसा क्षेत्र रहा है जिसने इस दौरान भी विकास की दर बनाए रखी। राज्य सरकार ने भी अर्थ-व्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएँ लागू की।

उन्होंने कहा कि नाबार्ड का सहयोग राज्य की अर्थ-व्यवस्था को गति प्रदान करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

वित्त मंत्री श्री देवड़ा ने सूक्ष्म खाद्य प्र-संस्करण उद्योग (पी.एम.एफ़.एम.ई.) को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड द्वारा उठाये गये कदमों की सराहना की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सहकारी संस्थाओं को मजबूत बनाने और उनके व्यवसायीकरण करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संगोष्ठी में वित्त मंत्री ने राज्य फोकस पेपर 2023-24 तथा 550 बिलियन डालर अर्थ-व्यवस्था के लिये मध्यप्रदेश में कृषि ऋण प्रमुख मुददे पुस्तिका का विमोचन भी किया। कार्यक्रम में राज्य में सराहनीय प्रदर्शन करने वाले बैंकों को सम्मानित किया गया। मंत्री श्री देवड़ा ने अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के अंतर्गत नाबार्ड के मध्यप्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा लगाई गई मोटे अनाज की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए ऋण आंकलन में कृषि, एमएसएमई एवं सभी प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र की हिस्सेदारी क्रमशः 70 प्रतिशत, 25 प्रतिशत और 5 प्रतिशत आंकी गई है। नाबार्ड के सहयोग से जल-संसाधन, कृषि मशीनीकरण, बंजर भूमि विकास, पशुपालन, मछली पालन, भंडार-गृह निर्माण, खाद्य प्र-संस्करण, नवकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन होगा।

नाबार्ड के मुख्य महा प्रबंधक श्री निरूपम मेहरोत्रा, एसबीआई के मुख्य महा प्रबंधक श्री विनोद कुमार मिश्रा, आरबीआई के क्षेत्रीय निदेशक श्री नीरज निगम, अपर मुख्य सचिव कृषि श्री अशोक वर्णवाल, अपर मुख्य सचिव उद्यानिकी श्री जे. एन. कंसोटिया और अपर मुख्य सचिव वित्त श्री अजीत केसरी उपस्थित थे।

संपादकीय

दोनों दलों के लिए खतरे की घंटी...

हालांकि ये स्थानीय निकायों के चुनाव थे, लेकिन मध्यप्रदेश में 11 माह बाद होने वाले विधानसभा चुनावों की झलक इन नतीजों में देखी जा सकती है। ये वो नगरीय निकाय हैं, जो राज्य में पिछले साल बड़े पैमाने पर हुए नगर सरकारों के चुनाव में शामिल नहीं थे। इनमें जीत के लिए दोनों मुख्य दलों भाजपा व कांग्रेस ने पूरा जोर लगाया था। नतीजतन 19 निकायों में से 11 में बीजेपी और 8 में कांग्रेस ने जीत हासिल की। जाहिर है कि मामला लगभग बराबरी का है और विधानसभा चुनाव का ऊंट किसी भी करवट बैठ सकता है। हालांकि विधानसभा चुनाव में जीत के लिए कांग्रेस को भाजपा से भी ज्यादा मेहनत करनी होगी। इन नगरीय निकाय चुनावों को 'मिशन 2023' का 'आखिरी टेस्ट' माना जा रहा है। निकायों की संख्या भले ही कम थी, लेकिन संदेश बड़ा निकला। दोनों दलों की जीत में महज 3 नगरीय निकायों का अंतर रहा है। कुछ निकायों में उलटफेर हुआ, लेकिन लेकिन संख्या की दृष्टि से फर्क नहीं पड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह के गढ़ राघौगढ़ में कांग्रेस का कब्जा बरकरार रहा। अब अगर पूरे प्रदेश के संदर्भ में देखें तो भाजपा राज्य के कुल 413 में से 316 निकायों पर काबिज हो गई है। तीसरे चरण के इन चुनावों को देखें तो वर्ष 2015 में भी लगभग यही स्थिति थी। लेकिन इस बार 8 निकायों में उलटफेर हुआ है। बड़वानी, धार और मनावर नगर पालिका व अंजड़ नगर परिषद सीट बीजेपी ने कांग्रेस से छीन ली, जबकि पीथमपुर नगर पालिका बड़वानी जिले की पलसूद और धार जिले की धामनोद व कुक्षी बीजेपी से कांग्रेस ने छीन ली। यानी दोनो दलों ने एक दूसरे के क्षेत्रों में सेंधमारी की है। खास बात यह है कि जिन आदिवासी क्षेत्रों में जीत के लिए दोनो दल भारी मेहनत कर रहे हैं,वहां के वोटर ने साफ संदेश दे दिया है कि वो किसी एक पार्टी से बंधे नहीं हैं। ऐसे में वो हार जीत का पलडा किधर भी झुका सकते हैं। यह बात अलग है मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान और प्रदेश कांग्रेस अध्यिक्ष कमलनाथ ने इस जीत के लिए अपनी अपनी पार्टियों के कार्यकर्ताओं को बधाई दी है। एक और अहम बात यह है कि तमाम कोशिशों के बाद भी भाजपा दिग्विजयसिंह के गढ़ राघोगढ़ में सेंध नहीं लगा सकी है। वहां कांग्रेस का किला सुरक्षित है। भाजपा के लिए संतोष का विषय यह हो सकता है कि उसे इस बार पिछली बार की तुलना में 4 सीटें ज्यादा मिली हैं। कारण- यहां संघ के कई पदाधिकारी और बीजेपी के प्रदेश स्तर के नेता चुनावी बिसात बिछाने के लिए डेरा डाले थे। बता दें कि गुना जिला केंद्रीय ज्योतिरादित्य सिंधिया का भी गढ़ रहा है। कैबिनेट मंत्री महेंद्र सिंह सिसोदिया ने राघौगढ़ में ऐतिहासिक जीत का दावा भी किया था। इस लिहाज से देखें तो भाजपा को मनचाहा परिणाम नहीं मिला। वैसे इन चुनावों में कई दिग्गजों को अपने ही क्षेत्र में अपनी पार्टी की हार का स्वाद चखना पड़ा है। यह उनके राजनीतिक भविष्य के लिए भी खतरे की घंटी है। मसलन बड़वानी जिले की राजपुर नगर परिषद पर भाजपा ने कब्जा कायम रखा है, जबकि यह कांग्रेस नेता और पूर्व मंत्री बाला बच्चन का इलाका है। बाला बच्चन पानसेमल और खेतिया नगर परिषद में भी कांग्रेस को नहीं जिता सके। इसी तरह अनूपपुर की जैतहरी नगर परिषद के 15 वार्डों में से 7 में भाजपा, 6 पर कांग्रेस और 2 पर निर्दलीय ने जीत दर्ज की है। ये प्रदेश के खाद्य मंत्री बिसाहूलाल के इलाके हैं।

नजरिया

जावेद अनीस

लेखक स्तंभकार हैं।

बंधुत्व के ब्रांड एम्बेसडर के रूप में उभरे राहुल गांधी

दिल्ली की गद्दी पर जमने से पहले नरेंद्र मोदी राहुल गांधी को शहजादे का खिताब देते रहे हैं, अपने एक भाषण में जब राहुल गांधी लाल किले के सामने चांदनी चौक की ओर इशारा करते हुये कहते हैं कि 'यहां मंदिर है, मस्जिद है और गुरुद्वारा भी है यही हिंदुस्तान है.' तो मुगलकाल के एक असली शहजादे दारा शिकोह की याद आ जाता हैं जिन्हें सदियों पहले अपने विजेता भाई औरंगजेब द्वारा इन्हीं गलियों में ज़ंजीरों से बाँधकर जुलूस निकाला गया था.

भला इतिहास के दो छोर पर खड़े दो शख्सियतों के बीच क्या समानता हो सकती है? मोटे तौर पर देखा जाये तो कुछ ख़ास नहीं लेकिन कभी-कभी वे अपनी अपनी बुनावट और भूमिकाओं के चलते एक-दूसरे के करीब लगने लगते हैं. वैसे तो राहुल गांधी और शहजादा दारा शिकोह में सीधे तौर पर कोई भी समानता नहीं है, दोनों का समय, काल परिस्थितियाँ बिल्कुल अलग है, लेकिन दोनों के अनोखेपन और कुछ समान मूल्यों के माध्यम से इस लेख को आगे बढ़ाया जा सकता है.

दारा शिकोह मुगल बादशाह शाहजहाँ के सबसे बड़े बेटे और उत्तराधिकारी थे. वे शायद अपने समय के सबसे उदार और सहिष्णु लोगों में से एक थे, उनमें एक दार्शनिक शासक बनने की पूरी सम्भावना थी. वे सभी धर्मों को समानता की नजर से देखते थे, उनकी बहुचर्चित किताब 'मजमा-उल-बहरेन' (दो महासागरों का मिलन) इस बात की तस्दीक है कि वे हिंदू और इस्लाम धर्म के लोगों के बीच शांति और बंधुत्व चाहते थे. इस किताब में वे इन दोनों धर्मों के बुनियादी मूल्यों में समानताओं की तलाश करते हैं. वे अपने परदादा सम्राट अकबर के नवीन संस्करण की तरह थे लेकिन उनमें अकबर की तरह राजनीतिक सूझ-बूझ नहीं थी, वे एक उदासीन प्रशासक थे साथ ही युद्ध के मैदान में भी अप्रभावी थे.

राहुल गांधी के परदादा जवाहरलाल नेहरु को आधुनिक भारत का निर्माता माना जाता है. आज उन्हीं के द्वारा रचे गये आधुनिक भारत के विचार को रौंदा जा रहा है. राहुल के विचार भी अपने परदादा से मिलते-जुलते हैं लेकिन दारा की तरह उनमें भी अपने परदादा के मुकाबले राजनीतिक सूझ-बूझ की कमी देखने को मिलती है, दिन-प्रतिदिन के चुनावी राजनीति को लेकर वे उदासीन नजर आते हैं, बहुत पहले ही वे सत्ता को जहर बता चुके हैं.

दोनों को अपने-अपने ज़माने का पप्पू कहा जाता है, लेकिन यह भी माना जाता है कि अगर औरंगज़ेब की जगह दारा शिकोह हिन्दुस्तान का बादशाह बनने में कामयाब हो पाते तो इस उपमहादीप का वर्तमान कुछ और होता. इसी प्रकार से अगर 2014 या 2019 में राहुल प्रधानमंत्री बन पाने में कामयाब होते तो यकीनन इस देश की दिशा और दशा कुछ और ही होती, कम से कम हम इतने नफरती माहौल में जीने को मजबूर नहीं होते और शायद देश की तरक्की के मामले में हम चीन की तरह छलांगें लगा रहे होते. दारा शिकोह तत्कालीन रूढ़िवादी भारत में उम्मीद की एक

हलकी सी रोशनी की तरह थे, पिछले कुछ महीनों से राहुल भी कुछ इसी दिशा में बढ़ते नजर आ रहे हैं.

राहुल गांधी अपनी बहुचर्चित 'भारत जोड़ो यात्रा' के माध्यम से पहली बार खुद को इतने प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करने में कामयाब हुये हैं. आज भारत को सबसे ज्यादा जरूरत 'बन्धुतत्व' यानी सभी नागरिकों के बीच एकता व भाईचारे की है और राहुल गांधी इसके सबसे बड़े ब्रांड एम्बेसडर के रूप में उभरे है.'नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोल रहा हूँ.' जैसे उनके वाक्य आज हमारे समय की सबसे खूबसूरत पुकार बन चुके हैं.

कन्याकुमारी से कश्मीर तक के 3750 किलोमीटर की यह पदयात्रा राहुल गांधी के अभी तक के राजनीतिक कैरियर पर भारी है, लोगों ने पहली बार सोशल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की जहरीली व आभासी दुनिया से बाहर निकल कर उन्हें इतने करीब से देखा है. लंबे समय बाद देश के किसी शीर्ष नेता ने सामाजिक-सौहार्द व संवैधानिक मूल्यों की रक्षा व करोड़ों भारतीयों के संरक्षण के लिए सड़कों पर उतर कर जनता से संवाद किया है. अरसे बाद इस देश में अमन, चैन व सभी की प्रगति चाहने वाली ताकतों ने प्रतिक्रिया जताने के बजाये कुछ नया व सकारात्मक किया है.

साल 2015 में राहुल गांधी जब अपनी किसी छुट्टी पर बाहर गये थे तो मेघालय के तत्कालीन सीएम मुकुल संगमा ने उनकी तुलना 'अल्फ्रेड द ग्रेट' से की थी, 1100 साल पहले इंग्लैंड का एक राजा जो जंग हारने के बाद रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था लेकिन जब वापस आया तो उसने हर मोर्चे पर जीत हासिल की थी. राहुल गांधी अभी तक 'अल्फ्रेड द ग्रेट' नहीं बन पाए हैं लेकिन यह यात्रा उनके लिए एक तपस्या और स्वयं के खोज की तरह रही है. इस यात्रा ने उन्हें एक ऐसे राष्ट्रीय नेता के तौर पर स्थापित होने में मदद की है जिसके सरोकार चुनावी राजनीति के गुणा-भाग से ऊपर हैं. इस यात्रा की सबसे बड़ी खूबी यह रही कि राहुल गांधी के विरोधियों द्वारा भी इसे एक राजनीतिक स्टंट के रूप में नहीं देखा गया.

भारत जोड़ो यात्रा के दौरान उन्होंने खुद को खोल कर रख दिया. इससे पहले उनकी छवि एक ऐसे अनइच्छुक, अगंभीर, बेपरवाह, कमअक्ल और 'पार्ट टाइम पॉलीटिशियन' राजनेता की बन गयी थी जो यहां सिर्फ हारने के लिए ही टिका है. उनके जितना मजाक शायद ही किसी और राजनेता का बनाया गया हो, वे ट्रोल सेना के फेवरेट रहे है.राहुल गाँधी की यह छवि ऐसे ही नहीं बनी, राहुल के ही शब्दों में कहें तो 'मुझे ग़लत और असत्य तरीके से दिखाने के प्रयास में मीडिया में हज़ारों करोड़ रुपए और बहुत अधिक ऊर्जा खर्च की गई है.' इस यात्रा के माध्यम से राहुल ने अपने लिये बनायी गयी इस छवि को उतार कर फेंक किया है और सत्य व जिन मूल्यों के लिये वो खड़े हैं उसे सबके सामने लाने में कामयाब रहे हैं.

राजनीति का मकसद केवल चुनाव जीतकर सत्ता हासिल करना नहीं हैं बल्कि इसके कहीं अधिक व्यापक उद्देश्य होते हैं, भारत जोड़ो यात्रा इन्हीं व्यापक उद्देश्यों को साधने में कामयाब हुई हैं. देश में विचारधाराओं का टकराव अपने चरम पर है, वर्तमान और आने वाले समय का भारत कैसे होगा इसको लेकर कशमश अपने चरम पर हैं, पिछले कुछ दशकों के दौरान हिन्दुतत्व की विचारधारा सब पर भारी पड़ती नजर आयी है. इस यात्रा से पहली बार एक काउंटर नैरेटिव आकार लेती नजर आ रही है. किसी भी मुल्क के लिए उसकी भौगोलिक सीमाएं जुड़ी रहने के साथ साथ वहां रहने वाले बाशिंदों के दिलों का जुड़े रहना भी बहुत जरूरी है. राहुल गांधी अपने इस यात्रा के माध्यम से यह सन्देश देने में कामयाब रहे हैं कि देश में नफरत फैलाना और अपने हमवतनों पर हमला करना देश विरोधी काम है. इसी प्रकार वे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की समाधि स्थल जाकर यह सन्देश देने में कामयाब होते हैं कि भारतीय राजनीति में सहिष्णुता के मूल्यों को वापस लाना कितना बुनियादी है.

राहुल गांधी की इस यात्रा ने आपसी अविश्वास से जूझ रहे भारत के नागरिकों को एक प्यार भरा स्पर्श देने का काम किया ही है साथ ही पस्त पड़ चुके सिविल सोसाइटी को हौंसला देने का काम भी किया है.

इस यात्रा के माध्यम से राहुल गांधी ने एक राजनीतिक परिवार से जुड़े विशेषाधिकार वाले नेता की छवि को तोड़ दिया है. वे एक स्टेट्समैन बन कर उभरे हैं जो तमाम विपरीत परिस्थितयों के बावजूद हार मानने को तैयार नहीं है और जो अपनी खुद की मेहनत के बल पर अपना मुकाम बनाने की कोशिश कर रहा है.

उन्होंने शहजादे के खिताब को वापस कर दिया है और पुराने राहुल गांधी को बहुत पीछे छोड़ आये हैं, उन्होंने खुद को अपनी ही पार्टी और चुनावी राजनीति के दायरे से बाहर कर लिए है, ये वही फार्मूला है जो कभी महात्मा गांधी ने अपनाया था. अगर राहुल गांधी का असली रूप यही है तो वे भारतीय राजनीति के लिए बहुत खास हैं और उन्हें नजरअंदाज करने का जोखिम नहीं लिया जा सकता है.

अंततः राहुल गांधी को अपना कनेक्ट मिल गया है जिसके माध्यम से वे हिंदू राष्ट्रवाद का जवाब पेश कर रहे हैं ये वही जवाब है जो सदियों पहले शहजादे दाराशिकोह द्वारा सुझाया गया था.

मुद्दा

सोनल भारद्वाज

लेखिका न्यूज एंकर तथा स्तंभकार हैं।

धार्मिक चमत्कारों से राजनीतिक फिजा कितनी बदल पाएगी?

मध्यप्रदेश में चल रहीं राजनीतिक गतिविधियों से इतर होने वाले कार्यक्रमों पर गौर किया जाए तो सबसे ज्यादा धार्मिक आयोजन ही होते दिखाई दे रहे हैं। इसके अलावा जो सरकारी कार्यक्रम हो रहे हैं उनमें हितग्राही मूलक कार्यक्रम ज्यादा है। किसी को 600 वर्ग फीट जमीन का पट्टा दिया जा रहा है तो किसी को प्रधानमंत्री आवास का मालिक बनाया जा रहा है। सरकारी आयोजन के पीछे राजनीतिक लाभ पाने का उद्देश्य किसी से छुपा नहीं रहता। अब तो धार्मिक आयोजन के जरिए भी राजनीतिक एजेंडा पूरा करने में राजनीतिक दलों को संकोच नहीं होता। राम मंदिर के लोकार्पण का लाभ भाजपा 2024 के लोकसभा चुनाव में उठाना चाहती है। चौबीस का चुनाव जीतने के लिए ही 2023 के विधानसभा चुनाव भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए ही निर्णायक साबित होने वाले हैं। भारतीय जनता पार्टी की तरह कांग्रेस चुनावी तैयारी के मूड में कभी भी दिखाई नहीं देती। कांग्रेस की राजनीति पांच साल चुनाव की तैयारी वाली मुद्रा में बने रहने की नहीं रही है। कांग्रेस चुनाव लड़ने के अपने परंपरागत तरीके को छोड़ने की कोशिश जरूर करती दिखाई दे रही है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ के चुनावी दौरे शुरू हो चुके हैं। वो भी अकेले। एकता के राग से दूर।

चुनावी शोर के बीच ही भजन,कीर्तन,भागवत कथा आदि में लोगों की भीड़ दिखाई दे रही है। छत्तीसगढ़ में बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र शास्त्री के चमत्कार में भाजपा चमत्कारिक बदलाव की उम्मीद कर सकती है। प्रदीप मिश्रा और जया किशोरी के धार्मिक आयोजनों में भाजपा नेताओं की संलग्नता संयोगवश नहीं हो सकती। लेकिन, राजनीति में धर्म का माहौल तो बन ही जाएगा। इसका लाभ चुनाव में मिलता है कि नहीं यह चुनाव नतीजे आने के बाद पता चलेगा। चुनाव को लेकर सबसे ज्यादा चिंता भाजपा नेताओं के चेहरे पर ही दिखाई देती है। कांग्रेस तो पहले से ही विपक्ष में है इस कारण उनके कार्यकर्ता का भाव बिल्ली के भाग्य वाला है। वैसे भी कमलनाथ का कद कांग्रेस की राजनीति में इतना चमत्कारी भी नहीं माना जाता जितना कि चमत्कार हम धार्मिक आयोजनों में देख रहे हैं। क्या मध्यप्रदेश विधानसभा के चुनाव परिणाम भी चमत्कारिक होंगे? कांग्रेस और उसके नेताओं के दावे इसी तरह के हैं। फूल सिंह बरैया तो अपने दावे के साथ यह भी कह रहे हैं कि भाजपा पचास विधानसभा सीट से ज्यादा जीती तो वे (फूल सिंह बरैया) राजभवन के सामने खुद अपना मुंह काला कर लेंगे। बरैया की राजनीतिक यात्रा काफी लंबी है। बहुजन समाज पार्टी से लेकर कांग्रेस तक की यात्रा में उन्हें असफलता ज्यादा मिली है। वे अनुसूचित जाति वर्ग से हैं। शायद

यह एक कारण हो सकता है कि वे भाजपा की ऐतिहासिक हार की कल्पना कर रहे हैं। अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित विधानसभा सीटों पर उप चुनाव के नतीजे उनके दावा का मजबूत आधार हो सकता है। खासकर आगर मालवा की सीट। भाजपा की इस परंपरागत सीट पर कांग्रेस के विपिन वानखेड़े ने जीत दर्ज कराकर सभी को चौंका दिया था। आदिवासी और पिछड़ों की राजनीति से निकलकर अब भाजपा अनुसूचित जाति वर्ग की ओर रुख करती दिखाई दे रही है। राज्य में अनुसूचित जाति वर्ग की आरक्षित सीटों की संख्या 35 है। 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को अनुसूचित जाति वर्ग की ग्यारह सीटों पर ही सफलता मिली थी। जबकि 2013 में भाजपा ने अनुसूचित जाति की कुल 22 सीटें जीतीं थीं। यदि भाजपा अनुसूचित जाति की सीटों पर अपनी पकड़ मजबूत रखती तो संभव है कि वह लगातार चौथी चुनाव जीतने में सफल हो जाती। अनुसूचित जाति,जनजाति अत्याचार निवारण कानून में हुई तब्दीली ने ग्वालियर-चंबल अंचल में बड़े असंतोष को जन्म दिया था। हिंसा भी हुई थी। कांग्रेस की जीत इसी असंतोष से निकली थी। इस बार के चुनाव में भाजपा अपनी गलती सुधारने की ओर बढ़ती दिखाई दे रही है। पांच फरवरी से शुरू होने वाली विकास यात्रा के लिए संत रविदास जयंती का दिन रणनीति के तहत ही चुना गया है। भाजपा इस दिन सागर में बड़ा आयोजन करने की तैयारी में है। जबकि अंबेडकर जयंती पर ग्वालियर में कार्यक्रम किया जाना है। आमतौर पर अंबेडकर जयंती का कार्यक्रम महू में होता है। लेकिन,इस बार चुनाव के कारण केंद्र ग्वालियर है। अनुसूचित जाति वर्ग का वोटर और आरक्षित सीटें ग्वालियर-चंबल के अलावा विंध्य एवं बुंदेलखंड इलाके में है। बहुजन समाज पार्टी को सफलता भी इन्हीं इलाकों में मिलती रही है। लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव विंध्य के नतीजे यह स्पष्ट कर रहे थे कि अनुसूचित जाति वर्ग का वोटर टूट कर भाजपा के खाते में गया है। मध्यप्रदेश की यही खूबी है। एक इलाके का मुद्दा दूसरे इलाके में भी समान रूप से असर करेगा,ऐसा दावा नहीं किया जा सकता।

पिछली चुनाव की तरह इस बार भी भाजपा ने दो सौ विधानसभा की सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। भाजपा नेताओं पर इस लक्ष्य का दबाव भी दिखाई दे रहा है। 51 प्रतिशत वोट की रणनीति 2024 के लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखकर तय की गई दिखाई देती है। भाजपा राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक से जो बातें बाहर आई हैं,उनमें एक यह भी है कि मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव में भाजपा की चुनौतियां ज्यादा हैं। नेतृत्व परिवर्तन की चर्चा पूरी तरह से खत्म नहीं हुई हैं। संगठनात्मक बदलाव और रूठों को मनाने के लिए मंत्रिमंडल का विस्तार भी होगा। लेकिन, सबसे महत्वपूर्ण है पसमांदा मुसलमानों को भाजपा से जोड़ने की रणनीति। राजनीति में मुसलमानों को इस आधार पर जोड़ने की कवायद पहली बार देखने को मिल रही है। पसमांदा मुसलमान उन्हें कहा जाता है जो अपने वर्ग और समाज में पिछड़े होते हैं। अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए बनी सच्चर कमेटी की रिपोर्ट में भी पसमांदा शब्द का प्रयोग सामने नहीं आया है। मध्यप्रदेश में कुल सात सीटें पसमांदा बाहुल्य हैं। पसमांदा मुसलमानों की आबादी पच्चीस प्रतिशत होने का अनुमान है।

बने रहो पगला, काम करेगा अगला

हास्य-व्यंग्य

सुरेश सौरभ

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम दास मलूका कह गये, सबके दाता राम, बन्धुओं इस ध्येय वाक्य को अपने आचरण में पूरी तरह से मैं उतार चुका हूं। अब मुझे राम के सहारे होकर बस आराम ही आराम भाता है। आफिस में आराम फरमाने के लिए बस नये-नये फंडे ही अपनाता रहता हूं।

मेरे आफिस में जब कम्प्यूटर आया तो ऊपर से आदेश था कि सबको सीखना है। मुझे पता था, जो जल्दी और ज्यादा सीख जायेगा उससे ही रेममपेल काम लिया जायेगा। मैंने धीरे-धीरे कम्प्यूटर पर हाथ-पांव मारने शुरू किये। धीरे-धीरे आफिस के तमाम लोग सीख गये, पर मैं अभी तक सीख ही रहा हूं। एक दिन मेरे बॉस मुझ से झल्लाकर बोले-शर्मा जी कब तक सीखेंगे? कुछ काम-वाम करना है या नहीं? या सरकार से ऐसे ही मुफ्त में तनख्वाह लेते रहेंगे।

मैंने मिमियाते हुए कहा-साहब जी! हिन्दी पट्टी से, टाट-पट्टी पर बैठ, हिन्दी मीडियम से पढ़ कर आया हूं, इसलिए समय लग रहा है। क्या करूं अधेड़ अवस्था में निगाह कमजोर होने के कारण कम्प्यूटर का कार्यक्रम दिमाग में नहीं धंस रहा है। कुछ समय और दे दें, साहब जी! जल्दी ही आप को पॉजीटिव रिजल्ट दूंगा।

पूरा कार्यालय कम्प्यूटर पर काम करता है और मैं सिर्फ कम्प्यूटर सीखता हूं। यानी आराम से बैठ कर कम्प्यूटर पर टाइप पास करते हुए आराम फरमाता हूं। एक दिन बॉस ने कहा-ऐसे कैसे काम चलेगा? सब काम कर रहे हैं और आप अभी तक बच्चों जैसे सीख ही रहे हैं।

तब मैं रोने गिड़गिड़ाने लगा-साहब जी! बहुत प्रयास किया। दिन-रात आंखें फोड़ी, पर पता नहीं किस आदमी ने यह कम्प्यूटर बनाया, जो अपने राम के बस का नहीं? साहब जी मुझ गरीब पर दया करें, मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, एक अदद बीवी है।

साहब मेरे पर तरस खाकर बोले-अच्छा! तुम ये लिख कर दे दो कि शारीरिक व्याधियों के कारण, मैं कम्प्यूटर नहीं सीख पा रहा हूं। मुझ से मैनुअल काम ले लिया जाए। ऐसा लिखकर दे दोगे, तो और कोई तुम पर आपत्ति भी न करेगा।

मैंने आनन-फानन में लिख कर साहब को दे दिया। अब कम्प्यूटर से मुक्ति। यानी काम से मुक्ति। मैनुअल काम आफिस में होता नहीं, कम्प्यूटर मुझे आता नहीं। आराम ही आराम है। यानी बने रहो पगला, काम करेगा अगला। अब पूरे ऑफिस में सिर्फ लतीफे सुनाता फिरता हूं। सबकी जी हुजूरी करता फिरता हूं। मौज ही मौज में अपने दिन आराम से कट रहे हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि. करोंद भानपुर बायपास रोड, भोपाल से मुद्रित एवं बी-208 शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

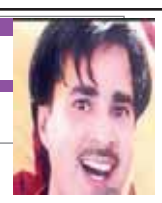

रामविलास जांगिड़

लेखक व्यंग्यकार हैं

दलाल टाइप तांत्रिकों का जलवा

महंगाई, भ्रष्टाचारी और बेरोजगारी के माहौल में इंसान तो कब का रोना भूल चुका है। इंसान रोते-रोते इतना रोने लग गया है कि अब अच्छे-खासे भूत भी रोने लगे हैं। भूतों के रोने की आवाज बहुत ही अटपटी सी होती है। झटझटी सी होती है। भूत इंसान की तुलना में जोर-जोर से रोता है। भूत इसलिए रोता है क्योंकि इंसान के मरने के बाद भी उसकी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पाती है और ना ही कोई उसकी इच्छाओं को पूरी करता है। आजकल भूतों के रोने का कार्यक्रम बहुत तेज गति से बढ़ा है। जितनी भी सरकारें आती है, वे जनता की इच्छाओं को पूरी करने का झुनझुना बजाती है। संकल्प पत्र सजाती है। पार्टी का घोषणा पत्र हवा में लहराती है। वोट खींचने के लिए यात्राओं के मेले रचाती है। वोट लेने के बाद व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। जितने भी पार्टी बाज नेता खड़े हैं। अपने-अपने चुनावी समर में अकड़े हैं। जनता को बढ़िया सपने दिखाने में इनके खेल बड़े हैं। ये सब अच्छे-खासे इंसान को भूत बनाने में सिद्धहस्त हैं। इंसान कभी भी किसी भी समय रोने लगते हैं। अपनी आंखों के दीये खोने लगते हैं।

भूत लोग बहुत बड़े टाइम के पक्के होते हैं। जैसे ही रात के 12 बजते, ये नियमानुसार रोने लगते हैं। भूत लोग भूत आयोग के द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हैं। भूतों के टाइम मैनेजमेंट से ही देश दुनिया के बड़े-बड़े नेता, व्यापारी और अफसर अपना मैनेजमेंट करते हैं। समय के पक्के और कर्तव्यनिष्ठ भूत दिन के उजाले में किसी भी प्रकार का अनिष्ट नहीं करते हैं, लेकिन नेताओं के लिए यह बात लागू नहीं होती है। वे चौबीसों घंटे अपनी कुर्सी बचाने के लिए किसी का भी अनिष्ट करने के लिए तत्पर रहते हैं। मार्केट में भूत भगाने की दुकानों का भी बड़ा जलवा है। इन दुकानों की आड़ में ही अघोरियों का बड़ा बलवा है। देश की तमाम राजधानियों के तहखानों-कैंटिनों आदि में भ्रष्टाचारी, अपचारी तांत्रिकों का काला धंधा खुलेआम चल रहा है। अगरबत्तियां और चिराग जल रहे हैं। सत्ता के दलाल तांत्रिक दरवाजा पकड़कर अपने ढंग की माला फेर रहे हैं। आम आदमी को खड़े-खड़े भूतों का डर दिखाकर अपने साथ-साथ अपने नेता का भी उल्लू-सीधा कर रहे हैं। शासन सचिवालय के कोने-कोने में इस तरह के दलाल टाइप तांत्रिक मिल जाएंगे, जो फाइलों में लगी चुड़ैलों को भगाने के लिए, नोट शीट पर अटके पड़े कामों के भूत मारने के लिए तंत्र-मंत्र करते हैं। वातावरण में भ्रष्टाचार के गुलाबी फूलों की पंखुड़ियां उड़ रही है। परेशान लोगों को भूत भगाने का सब्ज बाग दिखा रहे हैं। बहुत पुराने समय में जीर्ण इमारतें, शाही मकान, किले, बंगले, घाट आदि भूत पीड़ित स्थान हुआ करते थे। समय बदला और अब नेताओं निवास स्थान, शासन सचिवालय, सरकारी कार्यालय आदि भूत पीड़ित स्थल बन गए हैं।

पर्यटन

डॉ. सौरभ मालवीय

(लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

भारतबोध कराता है भारतीय पर्यटन

पर्यटन देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। इससे सरकार को राजस्व तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इसके कारण विकास कार्यों को भी बढ़ावा मिलता है। भारत एक विशाल देश है। यहां के विभिन्न राज्यों की भिन्न-भिन्न संस्कृतियां हैं। सबकी अपनी परम्पराएं हैं। इसके साथ ही यहां प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत पर्यटन स्थल हैं। यहां पर ऐतिहासिक स्थल हैं। यहां पर असंख्य धार्मिक स्थल भी हैं।

राष्ट्रीय पर्यटन दिवस का प्रारम्भ- देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों के प्रचार एवं प्रसार के लिए केंद्र सरकार ने 25 जनवरी 1948 को प्रथम बार राष्ट्रीय पर्यटन दिवस मनाया था। तब से प्रतिवर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय पर्यटन दिवस मनाया जाता है। इसके पश्चात एक पर्यटन यातायात समिति भी गठित की गई। इस समिति के गठन के तीन वर्ष पश्चात 1951 में कोलकाता और चेन्नई में पर्यटन दिवस के क्षेत्रीय कार्यालयों में वृद्धि होती गई। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई में पर्यटन कार्यालय बनाए गए। वर्ष 1998 में पर्यटन और संचार मंत्री के नेतृत्व में एक पर्यटन विभाग बनाया गया। इसका उद्देश्य भारतीय पर्यटन को प्रोत्साहित करना है। पर्यटन स्थलों के कारण लाखों लोगों को आजीविका प्राप्त होती है।

धार्मिक पर्यटन- भारत में प्रत्येक वर्ष लाखों पर्यटक आते हैं। इनमें धार्मिक पर्यटक भी सम्मिलित हैं। धार्मिक पर्यटक से अभिप्राय उन पर्यटकों से है, जो यहां के तीर्थ स्थानों के दर्शनों के लिए आते हैं। भारत तीर्थों का देश है। यहां बहुत से तीर्थ स्थान हैं। हिन्दू धर्म में अनेक प्रकार के तीर्थों का वर्णन मिलता है। इन तीर्थों में 12 ज्योतिर्लिंग भी सम्मिलत है। इनका अत्यंत महत्व है। गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग पृथ्वी का प्रथम ज्योतिर्लिंग माना जाता है। मान्यता है कि यहां पर देवताओं ने एक पवित्र कुंड का निर्माण किया था। इसे सोमकुंड कहा जाता है। यह भी मान्यता है कि इस कुंड में स्नान करने से व्यक्ति के समस्त पापों का नाश हो जाता है। इसलिए इसे पापनाशक कुंड कहा जाता है।

आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नामक पर्वत पर मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग है। इस ज्योतिर्लिंग में भगवान शिव और माता पार्वती की संयुक्त रूप से दिव्य ज्योतियां विद्यमान हैं। मध्य प्रदेश के उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यह एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है। यहां प्रतिदिन चिता की भस्म से महादेव का श्रंगार होता है तथा आरती होती है। यह आरती विश्वभर में प्रसिद्ध है, क्योंकि यह जलती चिता की भस्म से की जाती है। मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यह नर्मदा नदी के मध्य मन्धाता अथवा शिवपुरी नामक द्वीप पर स्थित है। यहां का आकार बनता है। इसलिए इसे ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग कहा जाता है। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में हिमालय की केदार नामक चोटी पर केदारनाथ ज्योतिर्लिंग है। कहा जाता है कि इसका निर्माण पांडवों ने करवाया था। महाराष्ट्र के पुणे जिले में सह्याद्रि नामक पर्वत पर भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग है। यहां से भीमा नदी निकलती है। यहां का शिवलिंग बहुत मोटा है। इसलिए इसे मोटेश्वर महादेव भी कहा जाता है।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में बाबा विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग है। मान्यता है कि यह मंदिर शिव और पार्वती का आदि स्थान है। महाराष्ट्र के नासिक जिले के ग्राम त्रयंबक में त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग है। इसके समीप ब्रह्मागिरि नामक पर्वत है, जो गोदावरी नदी का उद्गम स्थल है। यहां त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा, विष्णुप एवं महेश विराजमान हैं, जो इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। अन्य सभी ज्योतिर्लिंगों में केवल भगवान शिव ही विराजमान हैं। झारखंड के संथाल परगना में वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग है। शिव का एक नाम वैद्यनाथ भी है, इसलिए इसे वैद्यनाथ धाम भी कहा जाता है। पुराणों में शिव के इस धाम को चिताभूमि का नाम दिया गया है। गुजरात के बड़ौदा क्षेत्र में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग है। नागेश्वर का अर्थ है नागों का ईश्वर तथा शिव को नागों का देवता माना जाता है। तमिलनाडु के रामनाथम नामक स्थान पर रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग है। इसे सेतुबंध तीर्थ भी कहा जाता है। मान्यता है कि लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व श्रीराम ने इसकी स्थापना की थी। इसलिए इसे रामेश्वरम कहा जाता है। महाराष्ट्र के दौलताबाद के समीप घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग है। इस स्थान को शिवालय भी कहा जाता है। इस मंदिर का निर्माण अहिल्याबाई होल्कर ने करवाया था।

हिन्दू धर्म में चार धामों की यात्रा को भी अत्यंत पुण्यदायक माना जाता है। इनमें उत्तराखंड का बद्रीनाथ धाम, गुजरात का द्वारका धाम, उड़ीसा का जगन्नाथ पुरी तथा तमिलनाडु का रामेश्वरम धाम सम्मिलित है। मान्यता है कि इन चार धामों की यात्रा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार अवश्य इन चार धामों की यात्रा कर पुण्य प्राप्त करना चाहिए।

पर्यटन की वैश्विक स्थिति- वैश्विक रूप से पर्यटन की बात करें, तो यह एक बड़ा क्षेत्र है। एक रिपोर्ट के अनुसार पर्यटन का सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 11 प्रतिशत का योगदान है। भारत में पर्यटन का सकल घरेलू उत्पाद में 6.7 प्रतिशत का योगदान है। भारत की स्थिति के दृष्टिगत यह बहुत कम योगदान है। चीन में यह योगदान 8.6 प्रतिशत, श्रीलंका में 8.8 प्रतिशत, इंडोनेशिया में 9.2 प्रतिशत, मलेशिया में 12.9 प्रतिशत तथा थाइलैंड में 13.9 प्रतिशत है। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रथम पंचवर्षीय योजना के समय देश में केवल 17 हजार विदेशी पर्यटक आए थे। यह पर्यटन को प्रोत्साहित करने का परिणाम है कि वर्ष 2017 में देश में लगभग 77 लाख विदेशी पर्यटक भारत भ्रमण के लिए आए। अब देश में प्रतिवर्ष लगभग 77 विदेशी पर्यटक आते हैं। केंद्र की मोदी सरकार इस ओर ध्यान दे रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार आज पर्यटन विश्व के अनेक देशों में एक आकर्षक उद्योग के रूप में रोजगार का बहुत बड़ा माध्यम बना हुआ है। विश्व में अनेक देश हैं, जिनकी पूरी अर्थव्यवस्था केवल और केवल पर्यटकों के भरोसे चल रही है। भारत के कोने-कोने में पर्यटन की शक्ति अपार है, बहुत सामर्थ्य पड़ा हुआ है, हमें इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। आज यह समय की मांग है कि भारत अपनी विरासत को अधिक से अधिक और तेजी के साथ संरक्षित करे, वहां आधुनिक सुविधाएं बढ़ाए। हम यह पूरे देश में देख रहे हैं कि बीते वर्षों में जिन भी तीर्थ स्थलों को आधुनिक सुविधाओं से जोड़ा गया, वहां यात्रियों, पर्यटकों की संख्या अनेक गुना बढ़ गई है। इसका सीधा लाभ स्थानीय लोगों तथा वहां समीपवर्ती क्षेत्र के लोगों को हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारत के तीर्थ स्थलों पर आने वाले पर्यटकों को दोहरा लाभ होता है, क्योंकि लगभग सभी तीर्थ ऐसे स्थानों पर हैं, जहां का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता है। भारत के उत्तर पूर्व में हिमालय पर्वत है। बर्फ से आच्छादित पर्वत सौन्दर्य का अद्भुत खजाना हैं। हिमालय के अतिरिक देश में अनेक पर्वत श्रृंखलाएं हैं, जिनमें अगस्त्यमलाई पहाड़ी, अनामलाई पहाड़ी, अरावली पर्वतमाला, बैलाडिला पहाड़ियां, कैमोर पहाड़ी, इलायची पहाड़ियां, धौलाधार श्रेणी, पूर्वी घाट, गढ़जात रेंज, कार्बी, आंगलोंग पठार, गारो पहाड़ियां, जयंतिया पहाड़ियां, काराकोरम श्रृंखला तथा खासी पर्वतमाला आदि सम्मिलित हैं। इन पर्वतमालाओं की हरियाली बड़ी मनोहारी लगती है। यहां के वन, वन्यजीव एवं इन वनों में निवास करने वाले आदिवासी समाज के लोगों की संस्कृति भी आकर्षण का केंद्र है।

देश में असंख्य नदियां हैं। पंजाब राज्य का नामकरण तो पांच नदियों के कारण ही हुआ है। इनमें सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम नदी सम्मिलित है। देश में मुख्यतः चार नदी प्रणालियां अर्थात अपवाह तंत्र हैं। उत्तरी भारत में सिंधु, उत्तरी-मध्य भारत में गंगा तथा और उत्तर-पूर्व भारत में ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली है। प्रायद्वीपीय भारत में नर्मदा, कावेरी, महानदी आदि नदियां हैं, जो विस्तृत नदी प्रणाली का निर्माण करती हैं। देश में नदियों के संगम पर तीर्थस्थल बने हुए हैं। इन संगमों के नाम के साथ से प्रयाग जुड़ा हुआ है। देश में 14 प्रयाग हैं। उत्तर प्रदेश के प्रयाग में गंगा, यमुना एवं सरस्वती का संगम है। उत्तराखंड में पांच प्रयाग हैं। यहां अलकनंदा का अन्य नदियों से संगम होता है। यहां के देवप्रयाग में अलकनंदा और भागीरथी का संगम होता है। रुद्रप्रयाग में मन्दाकिनी तथा अलकनंदा नदियों का संगम होता है। कर्णप्रयाग में अलकनंदा तथा पिण्डर नदियों का संगम होता है। नन्दप्रयाग में नन्दाकिनी तथा अलकनंदा नदियों का संगम होता है। विष्णुप्रयाग में धौली गंगा तथा अलकनंदा नदियों का संगम होता है।

मान्यता है कि त्यौहारों पर इन तीर्थ स्थलों पर स्नान करने से व्यक्ति के समूल पापों का नाश हो जाता है तथा उसे पुण्य की प्राप्ति होती है। प्रयागराज हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। इसे अत्यंत पवित्र माना जाता है। यहां कुम्भ मेले का भी आयोजन किया जाता है। कुम्भ मेले के अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के मध्य छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुम्भ मेले का आयोजान किया जाता है। यहां देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु आते हैं। कुम्भ मेले को अमृत उत्सव भी कहा जाता है। भारत में अनेक समुद्र तट हैं, जहां का अपार सौन्दर्य पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। इनमें आंध्र प्रदेश के समुद्र तट, उड़ीसा के समुद्र तट, पश्चिम बंगाल के समुद्र तट, गोवा के समुद्र तट, केरल के समुद्र तट, तमिलनाडु के समुद्र तट, मुंबई के समुद्र तट, दीव के समुद्र तट, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप के समुद्र तट सम्मिलित हैं। विदेशी पर्यटकों के यहां के समुद्र तट बहुत पसंद हैं। इसमें दो मत नहीं है कि यदि भारतीय पर्यटन को प्रोत्साहित किया जाए, तो यह रोजगार में सृजन करेगा। इससे रोजगार की समस्या का समाधान होगा तथा गरीबी उन्मूलन भी यह सहायक सिद्ध होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पर्यटन को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जो सार्थक सिद्ध होगा।

सामयिक

गिरीश पंकज

लेखक स्तंभकार हैं।

श्रद्धा और अंधश्रद्धा के बीच फंसा समाज

हमारा समाज श्रद्धा और अंधश्रद्धा के अंतर्द्वंद में सदियों से फँसा हुआ है। और जब तक यह दुनिया है, यह सिलसिला भी चलता रहेगा। यह बहुत स्वाभाविक बात है कि अगर हमारे सामने कोई चमत्कार प्रस्तुत हो जाए, तो हमारी श्रद्धा उसके प्रति बढ़ जाती है। बेहद सामान्य और नादान किस्म के लोग सामने वाले को भगवान ही समझने लगते हैं, और यह भूल जाते हैं कि सामने वाला उनकी तरह हाड-मांस का पुतला है । वह कोई ईश्वर नहीं है। सर्वज्ञ नहीं है। त्रिकालदर्शी नहीं है । कोई मनुष्य ऐसा हो ही नहीं सकता। लेकिन अंधश्रद्धा के वशीभूत हो कर वह उसका न केवल भक्त हो जाता है वरन एक कदम आगे बढ़कर अंधभक्त भी हो जाता है और उसका निःशुल्क प्रचारक बन जाता है। फिर अपनी ओर से कुछ नई-नई बातें जोड़ करके उसका महिमामंडन करने लगता है। हम सब को यह समझ लेना चाहिए कि किसी के मन की बात जानकर उसे जस-का-तस बता देना या किसी का नाम और समस्या क्या है, उसको बताना चमत्कार नहीं है। यह दरअसल एक पारम्परिक कला है और इसे निरंतर अभ्यास से सिद्ध भी किया जा सकता है। इसे हम दिमाग को पढ़ लेना अथवा माइंड रीडिंग कहते हैं। दीश में कुछ बाबा, शास्त्री या धर्मगुरु इस कला के पारंगत हैं। यह और बात है कि वे कहते हैं कि उन्हें भगवान की कृपा से सब पता चल जाता है और उसके आधार पर वे मन की बात समझ कर कागज पर पहले से ही लिखकर रख लेते हैं। पिछले दिनों एक टीवी चैनल पर इसी मुद्दे पर चर्चा हो रही थी। तब एक महिला जादूगर ने महिला टीवी एंकर से कहा कि आप अपने मन में किसी भूली-बिसरी सहेली का नाम सोच लीजिए। एंकर ने वैसा ही किया। उस महिला जादूगर ने एंकर द्वारा सोचा गया नाम स्लेट पर पहले से लिख रखा था, जिसे सबने देखा। यह चमत्कार ही लगता है लेकिन यह माइंड रीडिंग की ही कला है। ऐसा बहुत से लोग करते रहते हैं मगर वे बाबा नहीं हैं। ऐसे कुछ वीडियो यू-ट्यूब में दिख जाएंगे। इस विषय की किताबें भी उपलब्ध हैं। बहुत पहले मेरे एक मित्र ने दिल्ली की घटना बताई थी, जिस में सड़क किनारे मजमा लगा कर चमत्कार दिखाने वाले व्यक्ति ने एक सज्जन की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इनका नाम रामलाल है और ये रायगढ़ में रहते हैं'। उसकी दोनों बात सही थी। ऐसा बताने वाला व्यक्ति कोई महामानव या कोई चमत्कारी पुरुष नहीं था। अगर ऐसा ही होता तो फुटपाथ पर चंद पैसों के लिए मज़मा नहीं लगाता। बहुत से जादूगर चमत्कार दिखाते रहते हैं। उनको देख कर हम तालियां बजाते हैं मगर उसकी पूजा नहीं करने लगते। यह जो पूजा करने की प्रवृत्ति है, यही खतरनाक है।व्यक्ति-पूजा ही हमें धीरे-धीरे अंधभक्त बना देती है। और हम कब विवेकशून्य हो जाते हैं, पता ही नहीं चलता। मैं चकित हो जाता हूँ, जब लोग अपने-अपने ईश्वर की शरण में न

जाकर किसी दरबार में, किसी बाबा की शरण में जा कर उनसे याचना करते हैं कि 'बाबा! हमारी समस्याओं को दूर कर दीजिए।' यह देख बड़ी हँसी आती है कि जिस हिंदू समाज में तैंतीस कोटि (यानी तैंतीस प्रकार के) भगवान विराजमान हों, जिनकी अनादि-काल से हम पूजा-अर्चना कर रहे हैं, क्या वे प्रभु हमारी समस्या का निवारण नहीं कर सकते ? क्या उन तक पहुँचने के लिए हमें किसी बिचौलिए या बाबा की शरण में जाना पड़ेगा? इसका मतलब साफ है कि हमारी आस्था अभी भी डगमगाई हुई है । और वह ईश्वर पर नहीं, कुछ व्यक्तियों पर टिक गई है। इसलिए मैं कहता हूँ, हमें केवल अपने-अपने आराध्य देवताओं पर भरोसा करना चाहिए। जो बाबा चमत्कार दिखाकर लोगों के रोगों को ठीक करने का दावा करते हैं, उनसे बचने की जरूरत है। अगर कुछ बाबा इतने ही चमत्कारी हैं, तो वे कोरोना जैसी महामारी या अन्य संकटों से मुक्ति क्यों नहीं दिला पाते? इस पर हमें विचार करना चाहिए। इसका मतलब यह है कि इक्का-दुक्का मामले में वे चमत्कार भले ही दिखा दें, मगर व्यापक परिप्रेक्ष्य में कुछ नहीं कर सकते । अगर हम ईश्वर की सत्ता पर भरोसा करते हैं तो हमें सिर्फ उसी पर एकाग्र होना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस में एक जगह किसी पात्र के माध्यम से कहते भी हैं, 'होईहे वही जो रामरचि राखा, को करि तरक बढ़ावे साखा'। जो होना है, वह तो होकर रहेगा इसलिए हमें उन लोगों के पीछे नहीं भागना है, जिन्होंने अपने धर्म की दुकानें सजा कर रखी हैं। मैं दुकान इसलिए कहता हूँ,कि उन स्थलों में बाबा तगड़ी कमाई करते हैं। वे माया मोह से मुक्त होने की बात करते हैं, मगर जब भक्त उनसे आग्रह करते हैं कि आप हमारे शहर में पधारें, तो उनका मुँह खुलता है और कहते हैं, 'हम इतने लाख रुपये लेंगे।' तो धर्म को व्यावसायिक तरीके से बेचने वाले साधु-संतों से बचने की जरूरत है। हमें केवल अपने ईश्वर पर श्रद्धा करनी चाहिए। किसी व्यक्ति पर भी एक सीमा तक हम श्रद्धा कर सकते हैं, मगर उससे अगर पार होते हैं, तो वह अंधश्रद्धा हो जाती है। और अंधश्रद्धा धीरे-धीरे व्यक्ति को अंधभक्त बना देती है। मैं किसी व्यक्ति की प्रतिभा से प्रभावित होकर उसकी तारीफ तो कर सकता हूँ लेकिन जब उसके चरणों पर लोटने लग जाऊँ, तो मैं अंधभक्त बन जाता हूँ। हमें अंधभक्त बनने से बचना है। निःसंदेह हमें अपनी सनातन परंपरा पर गर्व है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम अंधभक्त बनकर किसी के चरणों में गिर जाएँ। हमें अपनी गरिमा बचा कर रखनी है।

विरासत

आत्माराम यादव

लेखक स्तंभकार हैं।

नर्मदापुरम : शैल चित्रों की खोज के हुये 100 साल पूरे

नर्मदापुरम पर होशंगाबाद नामक धुन्ध का घनाकोहरा था वह हटते ही अब नर्मदापुरम आलोकित हो गया। नर्मदापुरम में मानव का उदभ्व और विकास की प्रथम पहचान के रूप में प्रागैतिहासिक चित्रित शैलाश्रय के वंशवृक्ष की पहचान वर्ष 1921 में यहॉ पदस्थ डिप्टी कमिश्नर के द्वारा सूचना देने एवं आग्रह किये जाने पर केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सुपरिटेंडेंट पण्डित हीरानन्द शास्त्री द्वारा मनोरंजन घोष से एक-एक चित्र का अवलोकन कर उनका सर्वेक्षण कराया तब उनके द्वारा वर्ष 1922 में पहली बार आदमगढ़ के प्रागैतिहासिक चित्र प्रकाश में आने के बाद वर्ष 2023 में 101 साल पूरे हो गये है।

सौ साल पहले की गयी गणना में आदमगढ़ की पहाडियॉ में 18 शैलाश्रय प्राप्त हुये थे जिनमें विभिन्न प्रकार की आकृतियों के 335 शिलाश्रय पाये गये थे तथा तब यह क्षेत्र पहाड़िया क्षेत्र में जमकर पत्थर उत्खनन के लिये सक्रिय था, जबसे यह संज्ञान में आया तब से आज तक देखा जाये तो इन शैलाश्रयों की खोज की शताब्दी वर्ष गुपचुप रूप से निकल गयी जिसकी भनक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को भी नहीं लग सकी।

आदमगढ़ के शैलाश्रय आदिम प्रकृति के आदिमानव सभ्यता की शुरूआत के सूचक है और यह माना गया कि आदि मानव कभी यहॉ निवास कर तत्समय के उल्लासमय जीवन के आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति के लिये इन चित्रों के द्वारा अपनी बात कहना या जतलाना चाहते थे। सच मायने में देखा जाये तो ये प्रागैतिहासिक चित्र मानवजाति के प्रारम्भिक जीवन यात्रा की विशद कहानी है जिसमें आदिमानव के उल्लासमय जीवन के आन्तरिक भावों की सफलतम अभिव्यक्ति विभिन्न आकृति, प्रकृति के ज्यामितिक, रेखानुकृति, भावानुसारी (भावप्रधान) शैल चित्रों के रूप में पूर्ण, अर्द्धपूर्ण तथा अपूर्ण अर्थात आधी-अधूरी दिखाई देते है तभी इन शिलाश्रयों को मानव विकास से जोड़ा गया है और विश्व में प्रागैतिहासिक चित्रों के रचयिता भी इन्हीं के वंशधर कहे गये है।

आदमगढ़ के शैलाश्रय इस बात की पुष्टि करते है कि नर्मदापुरम जिला प्रागैतिहासिक काल का साक्षी रहा है। डॉक्टर सांकलिया ने आदमगढ़ के लघु-पाषाण अस्त्रों से बने इन शैलचित्रों का रचनाकाल 10000 से लेकर 4000 ई.पूर्व के बीच का माना है, जबकि 14 जून 1959 के धर्मयुग के पृष्ठ 26 में डॉ.वी.एस.वाकणकर तथा उसी अंक में मनोहर लाल मिश्र के प्रकाशित लेख का जिक्र भी आता है, जिसमें श्री मिश्र ने इन शिलाचित्रों के रचनाकाल की समस्या को बखूबी से रखा था और पहाड़िया के चित्रों को दो वर्गो में बॉटते हुये उनके परस्पर बने होने में हजारों वर्षो का अन्तर बतलाया था। पहले वर्ग में एकवर्गीय या बाह्यरेखा से बनी आकृतियॉ थी तो दूसरे में प्राचीर प्रस्तर युग का सम्बन्ध 9 वीं या 10 वीं शताब्दी ई. लगाया गया था। श्री मिश्र ने अपने लेख में दो स्थानों पर तीन कालों से चित्रों का सम्बन्ध करते हुये एक प्राचीन प्रस्तरयुग, दूसरे में नवीन प्रस्तर युग एवं तीसरे में ऐतिहासिक युग का सम्बन्ध बताया है जबकि डॉ. वाकणकर ने इन शैलचत्रों को सात स्तरों में विभाजित किया एवं और शैलाश्रय क्रमांक-10 के हाथी के धुधंले चित्र को सर्वाधिक प्राचीन माना और उसे प्रथम प्रस्तर का निश्चित किया। दूसरे स्तर पर इसी शैलाश्रय के एकदम ऊपर की ओर बने विशाल पशुओं के चित्रों को स्वीकार किया एवं तीसरे स्तर में मानवाकृतियों को चौथे स्तर पर धर्नुधर एवं आखेट दृश्य रखे गये ।

विगत 40 वर्षो से मेरा आदमगढ़ की पहाडियों पर आना जाना रहा है। मुझे स्मरण है कि वर्ष 1985 तक पहाड़ी की उस ओर मजदूर पत्थर तोड़ते ओर ट्रकों में भरने का काम सन् 1995 तक किया करते थे और पहाडियॉ के ऊपर तक अनेक चरवाहें अपने जानवरों को चराने लाया करते थे, तब एक चरवाहे के साथ पहली बार मैंने भी इन शैलाश्रयों को देखा था। तत्समय के बुजुर्ग इस पहाड़िया को महाभारतकाल के समय भीम के द्वारा नर्मदा से विवाह का प्रस्ताव रखने पर नर्मदा द्वारा उनकी धारा को सुबह मुर्गे की बाग देने से पहले रोकने की शर्त पर तैयार हुये और पहली पहाड़ी वान्द्राभान पर अवशेषों के रूप में छोड गये, तथा दूसरी लेकर आते समय मुर्गे की बाग सुनाई देने पर दोनों हाथों की पहाड़ी वहीं छोड़ गये जिसमें एक आदमगढ़ की पहाड़िया कही गयी दूसरी कुलामढ़ी रोड़ पर आज भी इसका साक्ष्य मानी जाती है। इस क्विदंती के साथ आदमगढ़ पहाडी पर शैलाश्रयों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिये मैंने पुरातत्व विभाग के अधिकारियों से सम्पर्क किया, परन्तु किसी ने भी मुझे इन शैलाश्रयों से सम्बन्धित प्रमाणिक जानकारी विभाग के पास उपलब्ध न होने का हवाला देकर उपलब्ध नहीं करायी।

मेरी रूचि इन शैलाश्रयों के सम्बन्ध में बढ़ती गयी और जो भी शैलाश्रयों से सम्बन्धित आलेख या पुस्तकें पढ़ने को मिली, उसी आधार पर मैं आज यह जानकारी आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूॅ तथा वनविभाग के अनुविभागीय अधिकारी शिवकुमार अवस्थी जी का हृदय से आभारी हूॅ जिनसे प्राप्त सहयोग व सहायता से नवम्बर 2022 में उनके मार्गदर्शन में सिवनीमालवा के घने जंगलों में बसा ग्राम पिपलिया की पहाड़ी जिसे बोररानी क्रमांक 1 व 2 के शैलाश्रय से पहचान हुई । वहॉ गहरे कत्थई रंग की रेखानुकृति वाले चित्रों के अलावा जानवरों के, योद्धाओं के, नृत्य दृश्य एवं घुड़सवारों के चित्र देखने को मिले। इन्हीं घने जंगलों की पहाड़ियों में जहॉ जानवरों के भय से कोई जाने के तैयार नहीं होता तब वनवासियों या वनविभाग के कर्मचारियों के सहयोग से जाया जा सकता है। सिवनीमालवा के बूढ़ीमाई शैलाश्रय को दो क्रमांकों में बॉटा गया है और इसी प्रकार लोधागढ़ जो सिवनीमालवा से 18 किलोमीटर दूरी पर ग्राम पीपलगोटा में है उक्त ग्राम से 15 किलोमीटर दूर पथरीले रास्तों से होकर यहॉ के शैलाश्रयों को देखा जा सकता है, जिसकी ओर पुरातत्व विभाग निष्क्रिय बना हुआ है, यदि यही आलम रहा तो यहां की आदम सभ्यता की कहानियॉ किताबों में कैद होकर रह जायेगी।

नर्मदापुरम जिले के बोरी अभ्यारण, आदमढ़, पचमढ़ी, सतपुड़ा उद्यान,सहित सिवनीमालवा कें 56 स्थानों पर तत्कालीन समय के पुरातत्व सर्वेक्षण में चिन्हित कर 3546 शैलाश्रय आकृतियों की पहचान की गयी जहॉ मानव के उद्भव इतिहास के प्रमाण में 3546 शैलचित्र पाये गये, किन्तु आज इनमें आधे चित्र भी हम सहेज नहीं सके और सदियों से जो सभी प्रकार के मौसमों को सहकर जीवंत रहे, वे इस समाज को रास नहीं आये। इसके पीछे का कारण आज से चार-पॉच दशक पूर्व फिल्मों में प्रेमियों के अमर रहने के लिये पत्थरों में पेड़ों में अपने नाम उकेरकर अपने प्रेम को अमर करने की मानसिकता एव अगले जन्म में अपने प्रेमी और प्रेमिका को पिछला जन्म याद दिलाकर उन्हें वे पहाड़ी प्रस्तर या प्राचीनतम पेड़ दिखाना था, परिणामस्वरूप एक पीढ़ी इस फिल्मी धारा में बह गयी और उसने देखरेख के अभाव एवं पर्याप्त सुरक्षा न होने पर इस तरह के तमाम शिलाश्रयों पर, उसके आसपास पहाड़ों में अपना और अपनी प्रेमिका का नाम उकेरने के नाम पर लाखों साल के इन चित्रां को नष्ट किया है, कुछ वर्षो से यह शैलाश्रय राष्ट्रीय धरोहर एवं संरक्षण में होने से बचे हुये है, शेष के अस्तित्व को लेकर किसी के पास कोई जबाव नहीं है।

नर्मदापुरम जिले के अनेक स्थानों पर इन शैलाश्रयों का उल्लेख विस्तार से मिलता है जिसमें पचमढ़ी के आसपास फैले अनेक पहाड़-पहाड़ियों, प्रस्तर-शिलाओं आदि में वर्ष 1932 में इन प्रागैतिहासिक चित्रों की जानकारी पहली बार भ्रमण करने निकले डॉ. जी.आर.हन्टर को हुई, श्री हन्टर उस समय एक आयोजन में भाषण देने के लिये आये थे तब उन्होंने वहॉ उपस्थित अंग्रेज अफसर डी.एच.गार्डन को इन शिलाश्रयों की जानकारी दी जिले के सभी शैलाश्रयों की महत्वपूर्ण खोज को प्रेरित किया बाद में गार्डन ने शोध और अध्ययन के बाद इन शैलाश्रयों पर पहली बार सन् 1935 में इण्डियन केव पेन्टिग शीर्षक से विदेशी अखबारों में लिखा जिसके प्रकाशित होने के बाद इंग्लेण्ड सहित भारत के अनेक प्रसिद्ध अखबारों ने इन चित्रों के साथ 'दी रॉक पेन्टिग्स आर्फ महादेव हिल्स' नाम से प्रकाशित किया। मिस्टर गार्डन ने सभी संग्रह शैलाश्रयों की पहल कर पुस्तकरूप में सन् 1950 में प्रकाशित कराया। इन शैलाश्रयों की खोज के समय 1922 में आदमगढ़ पहाड़ी में 35 प्राकृतिक, 4 ज्यामितिक, 126 भावानुसारी सहित 165 पूरक चित्रों का उल्लेख मिलता है जबकि 5 प्राकृतिक, 4 ज्यामितिक एवं 19 भावासारी के चित्र अर्धपूरक आधे बने हुये हैं। यहॉ रेखनुकृति के वे चित्र जो रेखाओं से उकेरे गये है उनमें 16 प्राकृतिक , 16 ज्यामितिक एवं 25 भावानुसारी सहित कुल 53 चित्र सहित अलंकृत श्रेणी के 88 चित्र है जिसमें प्राकृतिक 18, ज्यामितिक 22 एवं भावानुसारी 48 है जिन सभी का योग 335 है जिससे आदमगढ़ की पहाड़ी शैलाश्रयों से सम्पन्न थी।

आज से 100 साल पूर्व आदमगढ़ के शैलाश्रय 1 में 9 शैलचित्र, शैलाश्रय क्रमांक-2 में 14, शैलाश्रय क्रमांक-3 में 9, शैलाश्रय क्रमांक-4 में 42, शैलाश्रय क्रमांक-5 में 5, शैलाश्रय क्रमांक-6 में 33, शैलाश्रय क्रमांक-7 में 14, शैलाश्रय क्रमांक-8 में 9, शैलाश्रय क्रमांक-9 में 46, शैलाश्रय क्रमांक-10 में 67, शैलाश्रय क्रमांक-11 में 12, शैलाश्रय क्रमांक-13 में 7, शैलाश्रय क्रमांक-14 में 13, शैलाश्रय क्रमांक-15 में 11, शैलाश्रय क्रमांक-16 में 1, शैलाश्रय क्रमांक-17 में 22, एवं शैलाश्रय क्रमांक-18 में 4 चित्र इस प्रकार कुल 335 शैलचित्रों की गणना की गयी थी। जब इन शैलाश्रयों के सम्बन्ध में जानकारी होने पर मैं भ्रमण पर निकला तो मुझे शैलाश्रय क्रमांक-1 पर कोई चित्र नहीं मिला बल्कि लाल रंग के अस्पष्ट निशान दिखाई दिये वहीं क्रमांक-2 पर एक वृषभ का चित्र के अलावा अस्पष्ट लालरंग की आकृतियां दिखी यही स्थिति शैलाश्रय क्रमांक 3, 5,13, 14, एवं 15 की दिखी जहॉ कोई भी चित्र दिखाई नहीं दिया, जो नष्ट हो चुके है जबकि शैलाश्रय क्रमांक-,6,7,8,9,10,11,12,17 एवं 18 पर ही विभिन्न आकृतियों के पशु, नृत्य के दृश्य, घुडसवार, हाथी, हिरण, वृषभ, भागते हुये गोल सिंह वाले भेसे, अश्वारोहियों, वन्यजीवों, वन्यजीवन को व्यक्त करने वाले आधे-अधूरे चित्र देखने को मिले।

डॉ. जगदीश गुप्त ने जिले के इन चित्रों की प्रारम्भिक विधियों का उल्लेख कर इन्हें एकाकी अंकन, समूहांकन, आबद्ध अंकन, संश्लेषात्मक अंकन, विश्लेषात्मक अंकन, रूपानुसारी अंकन, भावानुसारी अंकन तथा गतिशील अंकन में बाटॅते हुये उन्हें पॉच शैलियों में विभाजित किया है जिसमें पूरक शैली, अर्द्धपूरक शैली, रेखा शैली,, अलंकृत शैली, क्षेपांकन शैली प्रमुख जिनकी 27 उपशैलियॉ की गयी जबकि यशोधर मठपाल ने इन तीन शैली प्राकृतिक, ज्यामितिक एवं भावानात्मक शैली को 12 उप शैलियों में बॉटा है जबकि डाक्टर वाकणकर ने इन्हें 20 शैलियों में बॉटकर उनका काल और क्रम पर आधारित किया है जिसे आगे रखकर नर्मदापुरम जिले के सभी शैलाश्रयों को विभाजित किया गया है।

आदमगढ़ से बाहर निकलकर थोड़ा जिले के भी शैलाश्रयों की चर्चा न कि जाये तो यह बात अधूरी होगी, इसलिये आदमगढ के बाद इन शैलाश्रयों से सम्पन्न क्षैत्रों का यहॉ जिक्र किया जा रह है जिसमें पचमढ़ी में 730 चित्र. पूरक है, जिनमें 209 प्राकृतिक, 13 ज्यामितिक,एवं 508 भावानुसारी है वहीं दूसरी श्रेणी अर्द्धपूरक में की संख्या 27 है जिसमें प्राकृतिक 8 एवं भावानुसारी 19 चित्र है। इसके अलावा जो अन्य दो श्रेणियों में रेखाकृति है उसके 192 चित्र है जिसमें 50 प्राकृतिक, 9 ज्यामितिक 133 भावानुकृति के है और अलंकृत चित्रों का योग 100 गिने गये है जिसमें 65 प्राकृति, 3 ज्यामितिक तथा 32 भावानुसारी है इस प्रकार पचमढ़ी क्षेत्र के कुल चित्रों की संख्या 1049 है। बोरी अभ्यारण में 414 पूरक, 23 अर्द्धपूरक, 124 रेखांकित तथा 253 अलंकृत सहित कुल 814 चित्र बने है। जिले के सिवनीमालवा में 149 पूरक, रेखांकित 34 और 13 अलंकृत सहित कुल 196 चित्र है। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान में 762 पूरक, 14 अर्द्धपूरक,152 रेखाकृति, 224 अलंकृत सहित कुल 1152 चित्र है इसतरह जिले में सभी स्थानों के चित्रों का योग 3546 गिनती की गयी है।

देश-दुनिया के सामने इन शैलचित्रों की जानकारी पहुंचने पर विस्तृत खोज के लिये प्रत्येक उन स्थानों पर पहुंचकर जानकारी एकत्र करने वाले वी.एस.वाकणकर ने वर्ष 1956-57 में 'राक शैल्टर्स इन मध्यप्रदेश' के नाम से उजागर किया जिसमें होशंगाबाद के समीप आदमगढ़ के चित्रों का परिचय दिया गया वहीं जगदीश गुप्त ने वर्ष 1960 में 'भारतीय कला के पदचिन्ह' में तथा 1966 में अपनी दूसरी पुस्तक प्रागैतिहासिक भरतीय चित्र कला नामक पुस्तक में इन शैलचित्रों की सभी आवश्यक जानकारी विस्तार से दी गयी है, किन्तु काफी प्रयासों से इस पुस्तक के कुछ अंश देखने को मिले। डॉक्टर पूर्णिमा मसीह के द्वारा नर्मदापुरम जिले के शैलचित्रों के सन्दर्भ में अपनी पुस्तक मध्यप्रदेश की प्रागैतिहासिक चित्रकला का प्रकाशन 1996 में किया गया था जिसमें उन्होंने गागर में सागर भरने का काम किया है, किन्तु यह पुस्तक सरकार ने सहेजने का काम नहीं किया।

जिन स्थानों पर यह शैलाश्रय पाये गये उनमें होशंगाबाद के आदमगढ़, पचमढ़ी क्षैत्र के शैलाश्रय में लश्करियॉ खोह, बाजार केव, निम्बू भोज, इमली खोह, माढ़ादेव, बनियाबेरी, ईशान श्रंग, मान्टेरोजा, छोटे महादेव, बी.डेमकेव, पचमढ़ी, जम्बूद्वीप, खटखटा पुतली लेन, चिल्ड्रेन केव, काईटस क्रेग,रजत प्रपात, मैसी केव, रजत प्रभात, काजरी, नागद्वारी, आगमद्वार, नीमगिरी, चित्रशाला, चुरनागुंडी,भुरकुम लेन, त्रिशूल नाला, झुनकर नाला, शेरगुफा, भीमकाल नाला, देवखला, धापडी, चितराकातरी, डोडलपानी, बेलखंदार, काकोटिया नाला, बोररानी, बूढ़ीमाई, लोधागढ़, शेरनाला, मामाभांजा, धनाबोई, नीमधान, गजपत्थर, लम्बीझीत, टुन्ड्राआम नाला, आमवाली काप, हवालेन, कनमार, बींदनी पत्थर, कुर्रालेन, भगरा लेन, मिनकापाठा, खड़ाधार, भुरभुरी लेन एवं डोराथी डीप है। जो अव देखरेख व सहेजे न जाने के अभाव में नाममात्र के ही रह गये है जिसमें आदमगढ़ क्षेत्र को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण शैलाश्रय के नाम से भारतसरकार ने अपने आधित्य में रखकर 25 रूपये प्रति व्यक्ति टिकिट की दर से भ्रमण कराया जा रहा है, परन्तु बाहर से आने वाले दर्शकों से इन शैलचित्रों को कोई नुकसान न पहुंचाये इसकी देखरेख की व्यवस्था नहीं की गयी हैं तथा आदमगढ़ पहाड़ी के इन शैलाश्रयों को सहेजने का काम किया है वैसा काम अन्य स्थानों पर न किये जाने से यह प्रागैतिहासिक आदिम युग की धरोहर नष्ट होने की कगार पर है जिस पर सरकार को सॅख्ती से रोक लगाना चाहिये ताकि आने वाली पीढ़ी को हम हमारे पूर्वजों की याद दिलाती रहे।

धार की धरा पर हुए मंथन से विमर्श रूपी निकले अमृत से बनेगा नया रोडमेप, देश और प्रदेश को दे गया नव संदेश

नर्मदा साहित्य मंथन-भोजपर्व - देश के नामचीन साहित्यकारों, चिंतकों के चिंतन से नई दिशा दे गया

धार से राजेश शर्मा की ग्राउंड रिपोर्ट

राजा भोज की ऐतिहासिक धारा नगरी का अतीत मानों फिर से जमीन पर उतर आया हो... शिक्षा, संस्कृति और संस्कारों की इस प्राचीन नगरी में संवाद, विमर्श और मंथन ने मानों भोज कालीन परंपरा और पुरावैभव के दौर को धार की धरा पर फिर से पुर्नस्थापित कर दिया हो... अवसर था तीन दिनी ÷ नर्मदा साहित्य मंथन-भोजपर्व ÷ का . नर्मदा साहित्य मंथन-भोजपर्व - देश के नामचीन साहित्यकारों, चिंतकों के चिंतन से देश को नई दिशा दे गया. धार की धरा पर हुए मंथन से विमर्श रूपी निकले अमृत से नया रोड़मेप बनेगा... धार के मंथन की उपयोगिता और प्रासंगिकता इसी से सिध्द होती है कि समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र ठाकुर ने कहा कि भारत की प्राचीन परंपरा हैं संवाद करना, मंथन करना, क्योंकि हमने अपने साहित्य में अनेक प्रकार के मंथनो की चर्चा पढ़ी और सुनी है। ऐसे मंथन से अमृत निकले और वह अमृत समाज के लिए कैसे उपयोगी हो यह हमारी संस्कृति में हैं।

इतिहास की प्रामाणिक जानकारी आने वाली पीढ़ी के सामने रखना है तो इस प्रकार के मंथनो की आवश्यकता होगी। इस मंथन से संस्कृति, परम्पराओ एवं इतिहास की सही जानकारी भी समाज तक पहुचेगी।उन्होंने कहा जब तक हम विदेशी मानसिकता से बाहर नही आएंगे तब तक हम भारत का पुनर्निर्माण नही कर सकते। नर्मदा साहित्य मंथन में जिन विषयों पर चर्चा हुई हमे इन विषयों पर लगातार लिखना चाहिये, इन विषयों पर फ़िल्म निर्माण करना चाहिए तथा अन्य छोटे छोटे स्थान पर इस विमर्श को ले कर जाना होगा तभी इस मंथन का कार्य पूर्ण होगा। नर्मदा साहित्य मंथन-भोजपर्व का तीसरे प्रथम सत्र में ÷राजा भोज के साहित्यिक अवदान ÷ विषय पर डॉ बालमुकुन्द पाण्डेय ने अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि ज्योतिष और खगोलशास्त्र पर भारत का एकाधिकार रहा है। राजा

भोज के सारे ग्रंथों पर अगर चर्चा की जाए तो पता चलेगा कि ऐसी कोई विधा नही है जो उनसे छूटी हो। राजा भोज एक सम्पूर्ण राजा थे। उन्होंने पूरे विश्व को केन्द्र में रखकर कार्य किये। आज आवश्यकता हैं कि हमारे पराक्रमी वीर राजाओ के महान गुणों का अनुसरण करें। राजा भोज से प्रेरणा लेकर भारत माता के सिंघासन को दुनिया के सर्वोच्च स्थान पर स्थापित करने का काम हो।सत्र संचालन डॉ मयंक सक्सेना ने किया।

आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा, तकनीकी राष्ट्र निष्ठा , प्रत्येक को रोजगार इन 3 दिशाओ में कार्य करने से भारत निश्चित ही 40 ट्रिलियन की इकोनॉमी बनेगा द्वितीय सत्र में ÷आर्थिक विमर्श - स्वालंबी भारत÷ विषय पर डॉ भगवती प्रकाश द्वारा संवाद किया गया। उन्होंने कहा भारत अनादिकाल से आर्थिक दृष्टि से समृद्ध देश रहा है। स्वालंबन का मतलब विश्व से आइसोलेशन नही है।आयात पर अपनी निर्भरता कम करने से देश की अर्थव्यवस्था में सुधार हो सकता है।

हमें आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा, तकनीकी राष्ट्र निष्ठा और प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार इन 3 दिशाओ में कार्य करने से भारत निश्चित ही 40 ट्रिलियन की इकोनॉमी बनेगा। भारत में महिला सशक्तिकरण का प्रमाण यह हैं कि हमारे यहाँ महिलाओं के गुरुकुल रहे हैं। हमें महिला स्वालंबन के कार्य मे लगना होगा। भारत की कृषि भूमि भारत को एक अग्रणी विश्व शक्ति बनाएगा। सत्र संचालन राजपाल सिंह राठौड़ ने किया।

तीसरे सत्र में 'सामाजिक समरसता% विषय पर मोहननारायण ने परिचर्चा में अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने कहा कि अस्पृश्यता भारत के मूल में नहीं रही बल्कि समाज में भेद उत्पन्न करने के लिए इसे षड्यंत्र पूर्वक समाज में स्थापित किया गया। संत रैदास, ज्योतिबा फुले, डॉ भीमराव अंबेडकर जैसे महापुरुषों ने सामाजिक समरसता के लिए सार्थक प्रयास किए। महात्मा गांधी, वीर सावरकर, शहीद भगत सिंह और बाबा साहेब अंबेडकर की सामाजिक

आंदोलन में कार्यशैली अलग अलग होने के बावजूद भी इन चारों के विचारों में सामाजिक समरसता के प्रति समान भाव था । सामाजिक स्वतंत्रता के बिना राष्ट्रीय स्वतंत्रता की कल्पना नहीं की जा सकती। भारतीय समाज में अस्पृश्यता के ऐतिहासिक संदर्भों के साथ श्री मोहननारायण ने प्रतिपादित किया कि यह कभी भी धर्म का हिस्सा नहीं रही, इस विचार को प्रत्येक गाँव तक पहुँचाना आवश्यक है। %दलित% शब्द का अर्थ और षडयंत्र पर उन्होंने कहा कि दलित शब्द उनके लिए था, जिनका कभी दलन हुआ हो, जिसमें कुछ विशेष जातियाँ सम्मिलित थी, मगर आज उसका राजनैतिक लाभ लेने के लिए कभी-कभी उसका दुरुपयोग भी किया जाता है।सत्र का संचालन श्री निलेश माहुलीकर ने किया।

चतुर्थ सत्र लोक सहित्य का सांस्कृतिक अवदान

विषय पर मुख्य वक्ता मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी भोपाल के निदेशक डॉ विकास दवे रहे। उन्होंने कहा लोक सहित्य प्रत्येक भारतीयों की धमनियों में दौड़ने वाला रक्त है।लोक साहित्य जन सामान्य को अपनी मिट्टी की गंध से जोड़ने का कार्य करता है। सीता जी को माँ कहने वाला तो पूरा देश है परंतु सीता जी को बेटी कहने वाला लोक साहित्य है । विकास दवे ने मंच से आग्रह किया कि बाल साहित्य पर लिखा जाना चाहिए। हमें लोक सहित्य से प्रेरणा लेना चाहिए। लोक इस भारत का पर्याय है जब तक भारत है तब तक लोक है ,जब तक लोक है तब तक भारत है। मध्यप्रदेश सरकार ने के साहित्य में पाठ्यक्रम में लाने की व्यवस्था बन गयी है,बहुत जल्द हम इस योजना को मूर्त रूप लेते देखेंगे। सत्र संचालन ईश्वर शर्मा ने किया। विश्व संवाद केंद्र मालवा के अध्यक्ष दिनेश गुप्ता ने आभार व्यक्त किया।

विधायक पांसे ने उपलब्ध कराया शव वाहन

नगरवासियों की लंबित मांग हुई पूरी

बैतूल/मुलताई। नगर पालिका परिषद मुलताई के पास अभी तक शव वाहन उपलब्ध नहीं था, जिसके कारण नागरिकों को भारी असुविधाओं का सामना करना पड़ता था। वर्षा काल में यह स्थिति अत्यंत भयावह हो जाती थी। मुलताई नगर के नागरिक काफी लंबे समय से नगर पालिका परिषद मुलताई से शव वाहन की व्यवस्था की मांग कर रहे थे। नगर के विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा जागरूक नागरिकों द्वारा स्थानीय विधायक सुखदेव पांसे को जब इस समस्या से अवगत कराया तो उन्होंने इसे शीघ्र पूरा करने का आश्वासन दिया था।

इसी कड़ी में विधायक श्री पांसे ने विधायक निधि से 13,41,740 (तेरह लाख इकतालीस हजार सात सौ चालीस रुपये मात्र) रुपये स्वीकृत कर एक वाहन कंप्लीट स्ट्रक्चर सहित नगर पालिका परिषद को खरीदने हेतु अधिकृत कर दिया था। अब यह शव वाहन सभी के लिए उपलब्ध हो पायेंगा। इसके रखरखाव जिम्मेदारी नगर पालिका परिषद मुलताई की रहेंगी।

नगर पालिका परिषद मुलताई को शव वाहन उपलब्ध कराने पर नगर के विभिन्न सामाजिक संगठनों के अतिरिक्त नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती नीतू प्रहलाद सिंह परमार, उपाध्यक्ष शिव कुमार माहोरे, पार्षद अंजली सुमित शिवहरे, श्रीमती वंदना नितेश साहू, श्रीमती निर्मला रामा उबनारे साजिदा शेख जाकिर, सुरेश पौनीकर आदि ने श्री पांसे के प्रति आभार व्यक्त किया है।

व्याख्यान माला विचार यज्ञ का शुभारंभ, प्रथम दिवस राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर हुआ व्याख्यान

देवास। श्री राजाभाऊ महाकाल सेवा न्यास द्वारा आयोजित तीन दिवसीय व्याख्यान माला विचार यज्ञ के प्रथम दिवस राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर मल्हार स्मृति मंदिर में व्याख्यान हुआ। इस विषय के मुख्य वक्ता मुख्य वक्ता साप्ताहिक पत्रिका ऑर्गनाइजर के संपादक प्रफुल्ल केतकर रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता के चित्र के पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। व्याख्यान में मुख्य अतिथि एडीएम महेंद्र कवचे एवं विशेष अतिथि डॉ. शरद चंद्र वानखेड़े डीन, अमलतास मेडिकल कॉलेज थे।

मुख्य वक्ता प्रफुल्ल केतकर ने सभा को संबोधित करते हुए कहा युवाओं को राष्ट्र का पुनर उत्थान करना है। इस हेतु भारत के स्व को जानना होगा, जिसे अंग्रेजों द्वारा षड्यंत्र पूर्वक मिटाने का प्रयास किया। भारत जो कि विविधताओं से भरा हुआ है ऐसे देश मे इन्टॉलरेंस शब्द के नाम से भ्रम फैलाया आ जा रहा है। भारत ने विश्व के सभी धर्मों के सभी पंथों को संरक्षण दिया। श्री केतकर ने बताया कि अंग्रेजों के आगमन से पहले विश्व की में जीडीपी का में भारत की 21 प्रतिशत हिस्सेदारी थी, उनके जाने के समय यह मात्र 2 प्रतिशत तक रह गई थी। यह सब अंग्रेजो द्वारा षड्यंत्र पूर्वक भारतीय शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त करने से हुआ। प्राचीन भारतीय शिक्षा स्वावलंबन एवं स्किल बेस्ड शिक्षा थी।मुख्य अतिथि श्री कवचे जी ने युवाओं को इनोवेटिव कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया। कार्य की अध्यक्षता श्री राजाभाऊ महाकाल सेवा न्यास के मनोहर विश्वकर्मा ने की। व्याख्यानमाला स्थल पर भारतीय मन्दिरों पर केंद्रित एक प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ।

स्व. श्रीमती श्यामादेवी द्विवेदी की पंचम पुण्यतिथि पर हुआ भंडारा-प्रसादी वितरण

बालाजीपुरम में संध्या आरती करवाकर किया भंडारा आयोजित

बैतूल। भारत के पांचवेंधाम श्री रुक्मणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में 23 जनवरी सोमवार की शाम को स्व. श्रीमती श्यामादेवी द्विवेदी की पंचम पुण्यतिथि के अवसर पर संध्या आरती एवं भंडारा-प्रसादी के वितरण का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए बालाजीपुरम मंदिर के प्रमुख पुजारी असीम पंडा स्वामीजी ने बताया कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देश के पांचवें धाम श्री रुक्मणी बालाजी मंदिर, बालाजीपुरम, बैतूल में 23 जनवरी सोमवार की शाम 6 बजे से स्वर्गीय श्रीमती श्यामादेवी द्विवेदी की पंचम पुण्यतिथि पर उनके सेवाभावी कार्यो को याद कर पुण्य स्मरण कर संध्या आरती का आयोजन किया गया था। तत्पश्चात् भंडारा-प्रसादी के रूप में औषधीय बालाजी खीर का वितरण सभी श्रद्धालुओं को किया गया। औषधियों, जड़ी-बूटी से निर्मित यह बालाजी खीर स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहती है। स्वास्थ्यवर्धक बालाजी खीर के साथ पौष्टिक सब्जियों से निर्मित सब्जी और जैविक अनाज की पुड़ी का आनंद भी सभी श्रद्धालुओं ने बड़े चाव के साथ ग्रहण किया। इस अवसर पर वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष राजीव खंडेलवाल, समाजसेवी राम वर्मा, समाजसेवी रिशीराम सरले, बैतूलबाजार कुर्मी समाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमति वर्मा, राजीव दीक्षित प्रशसंक समिति जिलाध्यक्ष गौसेवक गिरीश खंडेलवाल, वरिष्ठ पत्रकार बलवंत धोटे, प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. श्याम सोनी, समाजसेवी अशोक मन्नू देशमुख, हरीश गढेकर, अरूणसिंह नीमपानी, कुन्बी समाज के वरिष्ठ सदस्य कृष्णा वाग्रदे, यादव समाज के वरिष्ठ सदस्यों में रघुनाथ यादव एवं चंद्रशेखर यादव, कालीमाता मंदिर के पुजारी राजन वर्मा, प्रत्याशा क्लब की तूलिका पचौरी व आशीष पचौरी सहित बालाजीपुरम मंदिर के सभी पुजारीगण तथा स्टॉफ मौजूद था। कार्यक्रम के अंत में द्विवेदी परिवार के वरिष्ठ पं. आर. एस. द्विवेदी, बालाजी सेवा समिति के संयोजक पं. सुनील द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार पं. संजय द्विवेदी ने पधारे सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया।

लायंस क्लब महक के नि:शुल्क जांच शिविर में 85 हितग्राहियों का चयन

बैतूल। लायंस क्लब महक के तत्वावधान एवं श्याम फैशन मॉल के सहयोग से विशाल स्तर पर दिव्यांग एवं वरिष्ठजनों के लिए निःशुल्क उपकरण वितरण के पूर्व जांच शिविर का आयोजन किया। लायंस क्लब महक की अध्यक्ष लायन डॉ. निहारिका भावसार ने जानकारी देते हुए बताया कि महारानी लक्ष्मीबाई कन्या हाई स्कूल कोठी बाजार में जरूरममंद दिव्यांग एवं वरिष्ठजनों को उपकरण देने के पूर्व निःशुल्क जांच शिविर आयोजित किया गया। जिसमें सहायक उपकरण बनाने वाली एल्मिको कंपनी, जबलपुर के ऑडियोलॉजिस्ट धीरज कुमार एवं पुर्नवास विशेषज्ञ प्रिया वर्मा ने करीब 150 से अधिक लोगों की जांच की। जिसमें पात्र 85 हितग्राहियों का चयन किया गया जिन्हें आगामी तारीख पर ट्राय साइकिल, व्हील चेयर, बैसाखी, केलीपर्स, सेंसर युक्त स्मार्ट केन (छड़ी) डेजी प्लेयर, बेल नोट टेकर, स्मार्ट फोन, कान की मशीन (बी.टी.ई.) ट्राईपोर्ड, ट्रेक्टापोर्ड, वाकिंग स्टीक (एडजरटेयल), वॉकर, थेयर विथ कमोड एवं सवाईकल कॉलर आदि सहायक उपकरण आदि निःशुल्क दिए जाएंगे। लियो अनुष्का दुबे ने बताया कि 40 प्रतिशत या अधिक दिव्यांगता तथा प्रति माह 22 हजार रूपए प्रति माह आय वाले दिव्यांगजन तथा 60 वर्ष से अधिक आयु तथा 22 हजार 500 रूपए तक मासिक आय वाले वरिष्ठजनों को पात्रता की श्रेणी में रखा है। आयोजन के प्रायोजक श्री श्याम फैशन मॉल के संचालक श्री गौरव भावसार ने शिविर में मौजूद रहकर व्यवस्था बनाने में सहयोग दिया। शिविर में लायंस क्लब की लियो अनुष्का शुक्ला, आरती दीक्षित, लायन उमा पंवार, मंजूला

पाठक, दीपा जसूजा, तरूणा द्विवेदी, अनामिका मालवीय, रंजना झोड़, सपना सोनी, लियो अध्यक्ष प्राजंग भार्गव, रौनक गोठी, इंतेन्द्र पाल, आकाश सेनानी, लायन पी.एस.बग्गा, ब्रजमोहन भट्ट, रिप्पी बग्गा, उषा द्विवेदी, जितेन्द्र कपूर ने अपनी विशेष उपस्थिति देकर शिविर को सफल बनाया। समीक्षा शुक्ला ने वीडियो कांफ्रेस के माध्यम से हितग्राहियों से बात की। महारानी लक्ष्मीबाई कन्या हाई स्कूल के प्राचार्य श्री पाटनकर जी का विशेष सहयोग मिला। आयोजन की सफलता पर लायंस क्लब महक अध्यक्ष डॉ. निहारिका भावसार ने सभी का आभार माना।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, कैरियर मार्गदर्शन पर वाणिज्य में सेमिनार..

नर्मदापुरम। शासकीय नर्मदा महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग में आज कैरियर मार्गदर्शन पर संगोष्ठी आयोजित हुई।जि विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें विषय पर हुई संगोष्ठी में संकायवार किन परीक्षाओं की पात्रता और योग्यता विद्यार्थी रखते हैं जानकारी दी गई। विभाग अध्यक्ष डॉ एस सी हर्णे ने विद्यार्थियों को कहा विद्यार्थियों का लक्ष्य होता है कि सरकारी नौकरी में जाएं जो प्रतियोगी परीक्षाओं के द्वारा ही संभव है लेकिन वर्तमान समय में जनसंख्या के साथ प्रतिस्पर्धा निरंतर बढ़ती जा रही है हर क्षेत्र में प्रवेश के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है उसमें लाखों विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं किंतु सफलता उन्हें मिलती है जो दृढ़ संकल्प आत्मविश्वास और योजना बनाकर तैयारी करते हैं। अनिरुद्ध तिवारी फाउंडिंग डायरेक्टर द्रोणाचार्य संस्थान भोपाल से विशेष वक्तव्य हेतु उपस्थित हुए। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि इंजीनियर, डॉक्टर, अधिवक्ता, वनाधिकारी पदों की परीक्षा के अनुसार विद्यार्थी अपने विषय का चयन स्वयं करें। समय सारणी बनाएं और पाठ्यक्रम देखकर अच्छी किताबें एकत्रित करें। स्नातक स्तर से ही ध्यान देना होगा। इस मौके पर उन्होंने विद्यार्थियों को परीक्षा पैटर्न की स्पेसिमेन कॉपी पर स्कॉलरशिप टेस्ट भी लिया जिसमें उत्तीर्ण 5 श्रेष्ठ विद्यार्थियों को विशेष कोचिंग की व्यवस्था मिलेगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने किया।डॉ. मीना कीर ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा और चुनौती का है स्वयं को पहचाने, अपनी क्षमताओं को जानें और अच्छे नागरिक बन कर राष्ट्र की सेवा करें। कार्यक्रम में डॉ.आर .एस.बोहरे, डॉ. प्रीति आनंद उदयपुरे, डॉ. केशव मिश्रा, डॉ. मालती पटेल, नीता वर्मा,रीना सक्सेना, चेतना पवार, उमेश सेन, सहित अधिक संख्या में श्रेयांश देवांश, प्रियांशु, श्रुति, मयंक आदि विद्यार्थी उपस्थित रहे।

ताप्ती पदयात्रा रत्नापुर पहुंची, हुआ भव्य स्वागत

बैतूल। मां ताप्ती की परिक्रमा बहुत ही खुशनसीब वालों को ही मिलती है। मां ताप्ती के उद्गम स्थल पवित्र नगरी मुलताई से श्रद्धालु विगत 15 वर्षो से निरंतर परिक्रमा की प्रथा को निभाए हुए हैं। परिक्रमा लगातार 16 वें वर्ष में मकर संक्रांति के दूसरे दिन 15 जनवरी 2023 को मां ताप्ती परिक्रमा यात्रा उद्गम स्थल मुलताई से प्रारंभ होकर लगातार 34 दिन का सफर पूरा कर 19 फरवरी को संगम स्थल डुमस की खाड़ी सूरत में परिक्रमा यात्रा का अर्ध समापन होगा।

इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए माँ ताप्ती परिक्रमा पदयात्रा समिति के वरिष्ठ सदस्य जितेंद्र कपूर ने बताया कि यात्रा के 9वें दिन आज जब परिक्रमा यात्रा महाराष्ट्र के अमरावती जिले के रतनापुर गांव पहुंची, जहां के निवासी अधिकांश ग्रामीण लोग मां ताप्ती के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ थे और आज सुबह जब परिक्रमावासियों ने ताप्ती पुराण के माध्यम से उन्हें मां ताप्ती के यश गान के बारे में विस्तार से बताया, एवं उनके उद्गम के बारे में बताया तो वह सभी ग्रामीणजन भाव विभोर हो गए और पूरे गांव ने मिलकर ताप्ती मैया पर चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया और चुनरी लेकर पूरा गांव मां ताप्ती के तट पर पहुंचा। पूरे गांव ने

प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल की सप्तमी को मॉ ताप्ती जी का जन्मदिन भी मनाने का संकल्प लिया। मॉ ताप्ती परिक्रमा पदयात्रा का उद्देश्य है कि मां ताप्ती के यशगान को गांव-गांव के प्रत्येक घर तक पहुंचाये, जिसमें हम इस 16वें साल में भी सफ ल सिद्ध हो रहे है। उन्होंने बताया कि मां ताप्ती परिक्रमा पदयात्री का जगह-जगह भव्य स्वागत हो रहा है।

तुलसीदास : लोकमंगल के भावना रुपी ब्रह्माण्ड के सुमेरु पर्वत

शिवेश प्रताप

लेखक स्तंभकार हैं।

अपनी बात शुरू करने से पहले एक द्विपद कहना चाहूँगा .....

करनी बिन कथनी कथे, अज्ञानी दिन रात।
कुकर ज्यों भुकता फिरे, सुनी सुनाई बात॥

जिस प्रकार एक कुत्ते के भोंकने पर अनायास ही बिना कारण जाने बहुत सारे कुत्ते भूंकने लगते हैं उसी तरह अज्ञानी और बुद्धिहीन व्यक्ति भी बिना करनी किये सिर्फ सुनी सुनाई बातों को रटते रहते हैं। कुछ लोग जिन्होंने आज तक रामचरितमानस का एक भी चौपाई नहीं पढ़ी है वो भी तपाक से कह देता है की अरे तुलसीदास ने ऐसा लिख दिया।

गोस्वामी तुलसीदास जी के लेखन का मनोविज्ञान उनके द्वारा स्वयं के बारे में लिखने के भाव से समझा जा सकता है। तुलसीदास जी वैराग्यसंदीपनी में लिखते हैं;

तुलसी जाके बदन ते धोखेहुँ निकसत राम ।
ताके पग की पगतरी मेरे तन को चाम ॥ 37॥

जिसके मुख से धोखे से भी 'राम' (नाम) निकल जाता है, उसके पग की जूती मेरे शरीर के चमड़े से बने॥37॥

इस दासानुदासी भक्ति में दीनता और समर्पण के जिस गहराई तक गोस्वामी जी उतरते हैं उसी को समझते हुए महात्मा नाभादास जी ने भक्तमाल में उन्हें इस भक्तों की दिव्य महामाला के सुमेरु (माला में सबसे ऊपर का बड़ा मनका) के रूप में स्थापित किया है। सत्य ही गोस्वामी तुलसीदास जी लोकमंगल के भावना रुपी ब्रह्माण्ड के सुमेरु पर्वत हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी सनातन धर्मावलम्बियों के अभिभावक के रूप में सबको शिक्षा देते हुए कभी प्रेम से पुचकारते तो कभी कठोरता से डांटते दीखते हैं। केवल किसी दलित या गैर ब्राह्मण जाति को रेखांकित कर तुलसीदास जी को लक्ष्य करना जातिवादी भेड़ियों द्वारा अपनी राजनैतिक जठराग्नि को शांत करने का कुचक्र ही प्रतीत होता है।

ब्राह्मणों को गोस्वामी जी ने क्या-क्या नहीं कहा है, उत्तरकाण्ड में लिखते हैं;

बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी॥
(उत्तरकाण्ड 99/8)

अर्थात कलियुग में ब्राह्मण अपढ़, लोभी, कामी, आचारहीन, मूर्ख और व्यभिचारिणी स्त्रियों के स्वामी होते हैं। इस विषय पर ब्राह्मण समाज गोस्वामी तुलसीदास जी से नाराज़ नहीं होता अपितु एक अभिभावक के रूप में इसे कठोरता से दी गई शिक्षा के रूप में ग्रहण करता है।

वह क्षत्रिय राजाओं के राजनीतिक विसंगतियों की कटु आलोचना करते हैं और राजा राम को आराध्य मानते हुए भीराजाओं के लिए नर्कभोग के दंड की व्यवस्था भी करते हैं -

'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवस नर्क अधिकारी॥' (अयोध्याकाण्ड)

कलियुग के क्षत्रियों की राजनीतिक विसंगतियों को उजागर करते हुए कहते हैं, 'नृप पाप परायन धर्म नहीं। करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं॥ (उत्तरकाण्ड) क्षत्रिय राजा पाप परायण हो गए, उनमें धर्म नहीं रहा। वे प्रजा को नित्य ही बिना अपराध दंड देकर उसकी दुर्दशा किया करते हैं।

इन शिक्षाप्रदप्रसंगों को हिन्दू समाज एक सीख के तौर पर लेते हुए स्वीकार करता है की तुलसीदास जी का उद्देश्य लोकमंगल है जहाँ सबके द्वारा सबका आपसी कल्याण सुनिश्चित हो।

तुलसी के 'रामराज्य' की संकल्पना में छुआ-छूत, जातिवाद, भेदभाव का कोई स्थान नहीं था। चारों वर्ण के लोग रामराज्य के 'राजघाट' पर एक साथ स्नान करते थे- 'राजघाट सब विधि सुंदर बर, मज्जहि तहाँ बरन चारिउ नर'। (उत्तरकाण्ड 29) राम की भक्ति में तुलसीदास के समतावादी दृष्टि की पहचान होती है,

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ॥
(उत्तरकाण्ड 87 क)

वह पुरुष हो, नपुंसक हो, स्त्री हो अथवा चर-अचर कोई भी जीव हो, कपट छोड़कर जो भी सर्वभाव से मुझे भजता है, वही मुझे परम प्रिय है।

ट्रांसजेंडर के लोकप्रिय होते वैश्विक विमर्श के सैकड़ों वर्ष पूर्व गोस्वामी जी में ट्रांसजेंडर समाज के प्रति समता का भाव था। गोस्वामी जी के विचार समय से कितने आगे थे इसका प्रमाण यह उपरोक्तचौपाई है।

यादों की बारात फिल्म में शंकर के रूप में अभिनय करते धर्मेंद्र ने एक डायलाग कहा है, 'कुत्ते कमीने मैं तेरा खून पी जाऊंगा'। क्या इस हिंसक वक्तव्य के लिए डायरेक्टर नासिर हुसैन की आलोचना करना उचित है ? शायद नहीं, क्यों की आप मानते हैं की एक साहित्यिक कथोपकथन में कोई पात्र अपने ज्ञान अथवा आचरण के अनुसार ही संवाद करता है और उस संवाद को लेखक/ निर्देशक का निजी संवाद नहीं माना जाता है। संवाद रचनाकार का न होकर देशकाल के पात्र का होता है जैसे मानस में समुद्र ने भगवान राम से कहा है;

प्रभु भल किन्ही मोहि सीख दीन्ही, मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं॥

ढोल गंवार शुद्र पशु नारी , सकल ताडना के अधिकारी॥
(सुन्दरकाण्ड)

प्रभु ने अच्छा किया जो मुझे शिक्षा दी, किंतु मर्यादा (जीवों का स्वभाव) भी आपकी ही बनाई हुई है। ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और स्त्री- ये सब समझाने के अधिकारी हैं। इस तरह से यह संवाद समुद्र ने राम जी से कहा है, न की राम ने कहा है और न ही तुलसी दास जी ने।

मैं ऐसे भ्रमित बुद्धि के लोगों से निवेदन करता हूँ की आप अरण्यकाण्ड में शबरी का प्रसंग पढ़ें जहाँ शबरी भगवान् से कहती है (तुलसीदास नहीं कह रहे);

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी॥(अरण्यकाण्ड)

(मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ? मैं नीच जाति की और अत्यंत मूढ़ बुद्धि हूँ। जो अधम से भी अधम हैं, स्त्रियाँ उनमें भी अत्यंत अधम हैं, और उनमें भी हे पापनाशन! मैं मंदबुद्धि हूँ।)

राम जी इसका उत्तर देते हैं,

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥ (अरण्यकाण्ड)

(श्री रघुनाथजी ने कहा- हे भामिनि! मेरी बात सुन! मैं तो केवल एक भक्ति ही का संबंध मानता हूँ।)

तुलसीदास जी ने शबरी की अपने बारे में नीचजाति, अधम नारी और मंदबुध्दि आदि की मान्यता का खंडन भगवान श्री राम के श्रीमुख से 'भामिनि' (सुन्दर, बुद्धि एवं भाव से सम्पन्न महिला) कहलवाकर करवाया है। इसका अर्थ है की गोस्वामी जी उस समय में व्याप्त जातीय, लैंगिक एवं शिक्षा के आधार पर बंटे हुए समाज में भक्ति के द्वारा समता की स्थापना कर रहे हैं। ऐसे तुलसीदास प्रातःस्मरणीय हैं और पूज्यनीय भी।

जिला मुख्यालय पर गणतंत्र दिवस पर पर्यटन, संस्कृति एवं आध्यात्म मंत्री सुश्री उषा ठाकुर करेंगी ध्वजारोहण

देवास । गणतंत्र दिवस को पुलिस परेड ग्राउण्ड पर होने वाले मुख्य समारोह की फायनल रिहर्सल की गई। गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मुख्य समारोह में पर्यटन, संस्कृति एवं आध्यात्म मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ध्वजारोहण करेंगी। रिहर्सल के दौरान कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता, पुलिस अधीक्षक डॉ. शिव दयाल सिंह, सीईओ जिला पंचायत श्री प्रकाश सिंह चौहान, अपर कलेक्टर श्री महेन्द्र सिंह कवचे, एएसपी श्री मंजीत सिंह चावला सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। रिहर्सल के अन्तर्गत मुख्य अतिथि के आगमन से लेकर ध्वजारोहण, परेड की सलामी आदि की रिहर्सल की गई। इस दौरान मुख्य समारोह की तैयारियों तथा विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए गए।

शीर्ष 3 वार्ड का किया गया स्वच्छता में चयन, प्रतिभागी वार्ड में कार्यरत सफाई मित्रों व कार्यरत कर्मचारियों का किया सम्मान

देवास। नगर निगम द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 के अंतर्गत नवंबर माह मे स्वच्छ वार्ड प्रतियोगिता का आयोजन निर्धारित स्वच्छता के सभी बिंदुओं को लेकर किया गया था। 20 से 28 नवंबर तक सतत सर्वे के दौरान गठित 5 सदस्यीय टीम द्वारा फील्ड अवलोकन के पश्चात स्वच्छता रैंकिंग में वार्ड 10 प्रथम, वार्डनं 9 द्वितीय,वार्ड नंबर 18 तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर कर्मचारी एवं सफाई मित्रों का निगम कार्यालय में प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया

चेतनजी भार्गव को स्मृति चिन्ह प्रदान किया

सोहागपुर। देनवा ग्रार्डन में आयोजित एक नाम शहीदों के नाम देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अंतर जिला प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि उत्तर विधानसभा भोपाल के प्रभारी चेतन जी भार्गव का संयोजक विशाल गोलानी एवं समाजसेवी गणेश अहिवार ने भारत माता का स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

जयस आदिवासी संगठन 26 जनवरी को करेगा सांस्कृतिक कार्यक्रम

सुबह सवेरे सोहागपुर । जयस आदिवासी संगठन 26 जनवरी को टंट्या मामा के जनक जन्मशताब्दी जयंती पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आदिवासी ग्राम छिड़का में करेगा इस कार्यक्रम में डंडा नृत्य आदिवासी कार्यक्रमों का आयोजन होगा इस संबंध में जयस आदिवासी संगठन के कैलाश खुराना एवं उमेश उइके ने अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय में आवेदन प्रदान किया है। इधर गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह सीएम राइस स्कूल परिसर में मुख्य समारोह का आयोजन किया गया है। अनुविभागीय अधिकारी खिल राठौर ने बताया कि प्रातः9बजे ध्वाजारोहण जनप्रतिनिधियों के द्वारा किया जाएगा।

आबकारी विभाग ने अवैध मदिरा की नष्टीकरण की कार्यवाही की

टेंचिंग ग्राउण्ड शंकरगढ़ पर रोड रोलर द्वारा 4 करोड़ 8 लाख रूपये से अधिक की जप्त सामग्री को किया नष्ट

देवास। आबकारी विभाग द्वारा जिले में मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1) एवं धारा 34(2) अतंर्गत कायम 86 न्यायालयीन प्रकरण जिसमें अवैध मदिरा को जप्त किया गया था। जप्त मदिरा को आज 24 जनवरी को टेंचिंग ग्राउण्ड शंकरगढ पर रोड रोलर द्वारा नष्टीकरण की कार्यवाही की गयी। जिसके तहत 03 हजार 775 बल्क लीटर देशी मदिरा, 01 हजार 839 बल्क लीटर विदेशी मदिरा, 453 बल्क लीटर बियर, 197 लीटर कच्ची हाथभट्टी मदिरा नष्ट की गई। जप्त सामग्री का अनुमानित बाजार मुल्य 41 लाख 59 हजार 190 रूपये है। इसके साथ ही मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 55 (3) के तहत 1836 अज्ञात प्रकरणों के

नष्टीकरण की कार्यवाही सम्पन्न की गयी। जिसके तहत 224 बल्क लीटर देशी मदिरा, 77 बल्क लीटर विदेशी मदिरा, 109 बल्क लीटर बियर, 12 हजार 444 लीटर कच्ची हाथभट्टी मदिरा एवं 06 लाख 64 हजार 635 किलो महुआ लहान को मौके पर नष्ट किया गया। उक्त जप्त सामग्री का अनुमानित बाजार मुल्य 03 करोड 57 लाख 20 हजार 550 रूपये है। कार्यवाही के दौरान सहायक जिला आबकारी अधिकारी, श्री राघवेन्द्र सिंह कुशवाह, आबकारी उपनिरीक्षक, श्री प्रेमनारायण यादव, श्री डी.पी.सिंह, श्रीमती निधि शर्मा, श्री विजय कुचेरिया, श्री उमेश स्वर्णकार, श्री दिनेश भार्गव एवं जिले के समस्त मुख्य आरक्षक एवं आरक्षक उपस्थित थे।

देश को खतरा चोरों, उचक्कों, डाकुओं, मवालियों और आतंकवादियों से खतरा नहीं

अगर देश को खतरा है तो सोए हुए सज्जन समाज से है ,सोया समाज जागे, तो ,देश में ये सब नहीं बचेंगे : उत्तर विधानसभा प्रभारी चेतनजी भार्गव

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। देश को खतरा चोर ,उचक्कों मवालियों ,डाकूओ और आतंकवादियों से नहीं है अगर देश को खतरा है तो सोए हुए सज्जन समाज से है सोए हुए सज्जन समाज अगर जाग गए तो इस देश के अंदर कोई चोर उचक्का डाकू और आतंकवादी नहीं बचेगा उक्त उद्गार भोपाल उत्तर विधानसभा प्रभारी चेतनजी भार्गव ने सोहागपुर के देनवा ग्रार्डन में आयोजित ÷एक शाम शहीदों के नाम ÷के 9वर्ष के आयोजन के अवसर पर कहे। इस अवसर पर विख्यात गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य ललिता पुरबिया, पूर्व प्रदेश भाजपा प्रवक्ता सुश्री राजो मालवीय, जनपद अध्यक्ष जालमसिंह पटैल, समाजसेवी हरगोविंद पुरबिया, समाजसेवी कन्हैयालाल अग्रवाल, पूर्व मुख्य अभियंता सिचांई विभाग जयनारायण शिवहरे, पलकमती साहित्य परिषद संरक्षक विख्यात बुन्देली कवि राजेंद्र सहारिया, सरस्वती शिशु मंदिर व्यवस्थापक कृष्णा पालीवाल, जनपद सदस्य भरतजी पटैल ,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बोद्धिक प्रमुख जीवनजी दुबे आदि के आतिथ्य के मध्य कहें।आपने आगे कहा कि मेरा भारत महान है के कहने मात्र एवं लिखने से कुछ नहीं होगा ।एक एक व्यक्ति को महानतम व्यक्ति के शिखर को छूने पर ही हमारा देश महान हो सकेगा। यत्र नारी पूज्यंते रमंते तत्र देवता अर्थात जहां नारी की पूजा होती है ।वहीं देवता का निवास होता है ।हमें सदैव नारी शक्ति का सम्मान करना चाहिए ।हम जब भी मंदिर जाते हैं ।तो शिवजी के मंदिर में शिवजी और पार्वतीजी विराजमान होती हैं ।लेकिन हम वहां पर गौरी शंकर बोलते हैं ।शंकर गौरी नहीं बोलते । जब हम कृष्णजी के मंदिर में जाते हैं। तो कृष्ण राधा नहीं बोलते। हम राधा कृष्ण बोलते हैं ।अर्थात भारतवर्ष में हमेशा नारी को सम्मान दिया गया है।आपने आव्हान किया कि माताओं, बहनों को आगे आना होगा। हमें सम्मान देकर उन्हें आगे करना पड़ेगा ।आगे आपने गर्जना करते हुए कहा कि उन लोगों को बदलने की कोशिश मत करना ये लोग बदलते हैं ।तो देश के इतिहास बदल जाते हैं। इस इतिहास को बदलने वाली सोहागपुर की जनता का मैं वंदन करता हूं ।अभिनंदन

करता हूं। स्वागत करके कहना चाहूंगा 2 दिन की बहारें हैं ।जग में तब जुल्म किसी का चलता है ।यह जुल्म का सूरज लाख जले ।हर शाम को लेकिन ढलता है। इस दिल में हजारों मौजे हैं तूफान उठाकर मानेंगे सोहागपुर के लोग ऐसे दीवाने हैं जो भारत को उच्च शिखर पर ले जाकर मानेंगे। आपने मगध शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति के संरक्षण में वीर हिंद सेना के तत्वावधान में आयोजित सांस्कृतिक संध्या एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम की सराहना की। वीर हिंद सेना के संयोजक विशाल गोलानी ने बताया कि जिला स्तरीय अंतर स्कूल प्रतियोगिता के रूप में चुनिंदा आमंत्रित स्कूल इस प्रतियोगिता में देशभक्ति थीम पर अपनी प्रस्तुति देते हैं। इसके पूर्व भारत माता की आरती के पश्चात कार्यक्रम अतिथि गृहस्थ संत श्री मनमोहन प्रसाद जी मुद्गल की वाणी से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । ठाकुर हरगोविंद सिंह पुरबिया जी ने जिले के अलग-अलग स्कूलों से आई सुंदर प्रस्तुतियों की बहुत सराहना की और वीर हिंद सेना के सदस्यों को शुभकामनाएं दी । प्रतियोगिता के निर्णायक विख्यात बुंदेली कवि पंडित राजेन्द्र सहारिया , प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुश्री राजो मालवीय , वरिष्ठ अधिवक्ता जयप्रकाश माहेश्वरी , राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित श्रीमती तारा जायसवाल , राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बौध्दिक प्रमुख जीवन दुबे आदि थे। संयोजक विशाल गोलानी ने बताया कि चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम सनफ्लॉवर स्कूल द्वितीय समारिटन्स स्कूल ,तृतीय विवेकानंद स्कूल एवं जिला स्तरीय अंतर स्कूल प्रतियोगिता में प्रथम लर्निंग स्टेम इंटरनेशनल स्कूल पिपरिया द्वितीय नर्मदा वैली इंटरनेशनल नर्मदापुरम एवं सेमरीहरचंद,तृतीय सरस्वती शिशु मंदिर सोहागपुर, व्यूअरस चॉइस अवार्ड केबीएम स्कूल पिपरिया के अलावा सभी प्रतिभागियों को भी स्मृति चिन्ह अतिथियों ने प्रदान किए। आभार व्यक्त करते विशिष्ट अतिथि जनपद पंचायत अध्यक्ष जालमसिंह पटैल ने कार्यक्रम एवं समस्त स्कूलों की प्रस्तुति की प्रशंसा की ।

कार्यक्रम का मंच संचालन विशाल गोलानी एवं सुश्री सुलेखा रघुवंशी ने किया । कार्यक्रम में वीर हिन्द सेना सदस्य गणेश अहिरवार , नीलम पटैल , अजय सोनी , अंशु छाबड़िया ,अशोक मेहरा , संदीप कुशवाह ,निपुर्ण खंडेलवाल , उत्तम घरामी , राकेश गोस्वामी,किशन मेहरा , रानू मालवीय , अभिषेक ठाकुर , वासु सराठे , गौरव छीपा , प्रकाश मण्डल , ललित कुशवाह आदि ने कार्यक्रम में सहयोग दिया । इसी अवसर मुख्य अतिथि श्री भार्गव का स्मृति चिन्ह एवं शाल श्रीफल से स्वागत किया गया है।

प्रसिद्ध शहीद स्मारक परिसर में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर काव्य संध्या का आयोजन

सुबह सवेरे सोहागपुर। प्रसिद्ध शहीद स्मारक परिसर में स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर पलकमती साहित्य परिषद सोहागपुर के तत्वावधान में काव्य संध्या का आयोजन समिति के संरक्षक विख्यात बुन्देली कवि एवं वरिष्ठ साहित्यकार पंडित राजेंद्र सहारिया , जनपद उपाध्यक्ष राघवेंद्रसिंह रघुवंशीसमाजसेवी एवं सरस्वती शिशु मंदिर के व्यवस्थापक कृष्णा पालीवाल आदि जनप्रतिनिधियों के आतिथ्य में संम्पन्न हुई। कार्यक्रम भारत माता की आरती एवं भारत माता एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीपप्रज्वलन करने उपरांत काव्य संध्या प्रारंभ की गई।वहीं अतिथियों, कवियों व क्षेत्रवासियों ने शहीद स्मारक पर रखे गए महापुरुषों के चित्रों का पूजन किया गया। अतिथियों ने कार्यक्रम को संम्बोधित किया। संचालन साहित्य परिषद मार्गदर्शक राजेश शुक्ला ने एवं काव्य संध्या का संचालन साहित्य परिषद अध्यक्ष अमित बिल्लौरे ने किया। इस अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर प्राचार्य जितेंद्र परसाई, संजीव दुबे, ज्ञानी सुरजीत सिंह, चुन्नीलाल मुदगल, राजेंद्र पालीवाल, सतीश चौरसिया, भरत व्यास, नवीन चौधरी, चंद्रमोहन दुबे, प्रदीप दुबे, हेमंत पांडे, रीतेंद्र सिंह राजपूत, राहुल धौलपुरिया, देवेंद्र दुबे, अनिल साहू, देवांशु शर्मा, संतोष देवलिया, प्रहलाद किरार, जगदीश कुशवाहा, करणसिंह सराठे, प्रेमनारायण सराठे, यश शुक्ला आदि उपस्थित थे। इसके पूर्व काव्य संध्या में पलकमती साहित्य परिषद के सचिव श्वेतल दुबे ने सरस्वती वंदना कर काव्य संध्या को प्रारंभ किया। इसके बाद संरक्षक पं. राजेंद्र सहारिया, मथुरा प्रसाद जोशी, राजेश शुक्ला, प्रबुद्ध दुबे, सौरभ सोनी, श्वेतल दुबे, शैलेंद्र शर्मा, संजय दीक्षित, रवि नागेश, सौम्या दुबे एवं अमित बिल्लौरे ने काव्य पाठ किया। कवियों ने राष्ट्र के अमर शहीदों सहित नेताजी सुभाष चंद्र बोस पर आधारित रचनाएं पढ़ी। श्वेतल दुबे ने आभार व्यक्त किया।

कुश्ती का अखाड़ा..आखिर इस विरोध के पीछे मंशा क्या है?

राजीव खंडेलवाल

(लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष है)

देश में आज कल अखाड़ों में कूदने का मौसम ही आ गया है। एक मीडिया चैनल के डिबेट का नाम तो अखाड़ा ही है। हो भी क्यों न? अखाड़ा वह मैदान है, जहां दो पक्ष (पहलवान) अपने दांव-पेंच लगाकर अपनी कला का प्रदर्शन कर सामने वाले विपक्षी को चित करने का प्रयास करते हैं, जिसे कुश्ती कहा जाता है। राजनीति की वर्तमान स्थिति के कारण 'कुश्ती का दंगल' निश्चित समय 5 साल में न होकर लगातार चलने वाला हो गया है। कुश्ती के अखाड़े में अभी तक तो जो खिलाड़ी टीम उतरती थी, उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उनके संघ के पदाधिकारी मैदान पर हमेशा तैयार खड़े रहते थे। परंतु यही कुश्ती संघ कुश्ती के अखाड़े में एक पक्ष बन गया है। एक तरफ खिलाड़ियों की टीम है, तो दूसरी तरफ उनके मैदान में उतारने वाली भारतीय कुश्ती महासंघ स्वयं की है। मैच की रेफरी सरकार है, तथा साथ में वह मीडिया भी है, जो निष्पक्ष नहीं रह गया है। इस अखाड़े में पहली बार संघ के मातहत खिलाड़ी अपने 'मालिक' संघ (जिनके हाथों में समस्त खिलाड़ियों की नकेल है), पर हावी होते हुए दिख रहे हैं। खिलाड़ियों ने संघ से निपटने के लिए ''ईंट से ईंट बजा देने'' वाले भाव से जो आरोपों की बौछार की है, उसमें संघ की विभिन्न अनियमितताओं के आरोप के साथ सबसे महत्वपूर्ण आरोप कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण सिंह जो कि एक सांसद (छःबार के) भी हैं, पर यौन शोषण का लगाया गया है।

यौन शोषण का आरोप बहुत गंभीर है और उसमे तुरंत एफआईआर दर्ज होकर जांच हो शुरू हो जाती है। यहां पर जिस तरह से आरोप और उनका निपटारा खिलाड़ियों और सरकार के खेल मंत्री ने किया है, उससे स्पष्ट है कि यौन शोषण का आरोप एक टूल के रूप में उपयोग किया जा रहा है। क्योंकि खिलाड़ियों ने धरने पर बैठने के बाद यह मांग की थी कि यदि भारतीय कुश्ती महासंघ को भंग नहीं किया जाएगा तो धरने से जुड़ने वाले सभी युवाओं का कॅरियर खत्म हो जाएगा? और कार्रवाई न होने पर 4-5 महिला पहलवान एफआईआर दर्ज कराएंगीं।

यौन शोषण का मामला भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत आता है न कि किसी जांच समिति के अधिकार क्षेत्र में। यह हस्तक्षेप योग्य संज्ञेय (कॉग्निजेबल) अपराध है, जिस पर पुलिस को ही कार्रवाई करनी होती है। मेडिकल जांच होती है और तदनुसार कार्रवाई आगे बढ़ती है। लेकिन यहां पर तो सरकार के प्रस्ताव पर आरोप लगाने वाली महिला खिलाड़ी भी इस बात पर सहमत हो गई कि एक कमेटी इस शर्त के साथ बना दी जाए कि जांच पूरी होने तक महासंघ के अध्यक्ष, अध्यक्ष के रूप में कार्य नहीं कर सकेंगे। जांच कमेटी 4 हफ्तों में अपनी रिपोर्ट दें। जब यौन शोषण के मामले में इस तरह की जांच की प्रक्रिया और सहमति शायद ही कभी देखी हो? मेरा कहने का मतलब कदापि यह नहीं है कि भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बिल्कुल दूध के धुले हैं? या आरोपों में कुछ भी सच्चाई नहीं है? परंतु जिस तरीके से मामले को टैकल किया जा रहा है, इससे निश्चित रूप से यह ध्वनि निकलती है कि पहलवान एकजुट होकर लामबंद होकर कुश्ती संघ के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ने जा रहे हैं और उनको सफलता मिलती दिख भी रही है।

भारतीय कुश्ती महासंघ ने भी खिलाड़ियों द्वारा लगाए गए यौन शोषण के आरोपों को नकारा है। उसका कहना है कि कुछ नये बनाये गये नियमों के विरोध के लिए यह तरीका अपनाया जा रहा है। जो हो रहा है, उसके पीछे कोई निजी एजेंडा है। खिलाड़ियों के प्रदर्शन के पीछे छिपी मंशा फेडरेशन पर दबाव बनाकर अध्यक्ष को हटाना है। यहां भी आश्चर्य की एक यह बात है कि सीधे किसी भी महिला पहलवान ने सीधे किसी व्यक्ति के विरुद्ध यौन शोषण का विशिष्ट आरोप न तो लगाया है और न ही इस संबंध में कोई प्राथमिकी थाने में दर्ज कराई है। स्वयं महिला पहलवान विनेश फोगाट ने महिला पहलवानों के यौन शोषण की बात इस स्पष्टीकरण के साथ कही है कि उन्होंने इस तरह के शोषण का सामना नहीं किया है। सबूत के साथ प्रदर्शन में बैठने के बावजूद अभी तक एफआईआर न लिखवाने का कोई तार्किक कारण समझ में नहीं आता है। यह इस बात को इंगित करता है कि इस पूरे प्रकरण का एक मात्र उद्देश्य ही भारतीय कुश्ती महासंघ की कुर्सी बदलवाना मात्र है।

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि राष्ट्रीय महिला आयोग या राज्य महिला आयोग ने अभी तक यौन शोषण के आरोप के संबंध में कोई कदम नहीं उठाया है? महिला आयोग या मीडिया ने भी अभी तक यौन अपराध के संबंध में कोई प्रथम सूचना पत्र दर्ज न होने के बाबत पुलिस या खेल मंत्रालय की खिंचाई क्यों नहीं की है? यह भी समझ से परे है। खेल मंत्री द्वारा यौन शोषण के आरोपों सहित समस्त आरोपी को पुलिस अधिकार रहित समिति के सुपुर्द कर देना भारतीय दंड संहिता/दंड प्रक्रिया संहिता को साफ-साफ नजर अंदाज करना है, उसका उल्लंघन है।

शैलेन्द्र, चौकसे सहित आठ को शब्द शिल्पी सम्मान आज

भोपाल। राजधानी की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्था अभिनव कला परिषद द्वारा उत्सव गणतंत्र के तहत संस्कृतिकर्मियो को अभिनव शब्द शिल्पी सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष सुरेश तांतेड़ और संयोजक डॉ. रामवल्लभ आचार्य के अनुसार वर्ष 2023 के अभिनव शब्द शिल्पी सम्मान से प्रदेश के 8 शब्द शिल्पियों तथा 3 प्रख्यात कला प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया जाएगा। इस वर्ष शब्द शिल्पी सम्मान से गजलकार हरिवल्लभ शर्मा हरि, कवि कथाकार शैलेन्द्र शरण, पत्रकार राममोहन चौकसे, व्यंग्यकार राजेन्द्र गट्टानी, लघुकथाकार श्रीमती मीरा जैन, बाल साहित्यकार डॉ. विकास दवे, व्यंग्यकार मलय जैन तथा साहित्यकार डॉ. अरूण तिवारी को सम्मानित? किया जाएगा। इसी अवसर पर संगीत नाटक अकादमी नई ?दल्ली द्वारा अमृत अवॉर्ड के लिए चयनित जाने माने वायलिन वादक वसंत रामभाऊ शेवलीकर तथा प्रो. किरण देशपांडे एवं मप्र संस्कृति परिषद द्वारा शिखर सम्मान के ?लए चयनित पं.श्रीधर व्यास का सम्मान किया जाएगा। यह कार्यक्रम मानस भवन श्यामला हिल्स पर शाम 6 बजे से होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता लेखक चिंतक संतोष चौबे करेंगे तथा मुख्य अतिथि पूर्व सांसद रघुनंदन शर्मा होंगे। सारस्वत अतिथि वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव होंगे तथा जिला कांग्रेस अध्यक्ष कैलाश मिश्रा होंगे।

बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री को हत्या की धमकी

रायपुर। बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री को परिवार सहित जान से मारने की धमकी मिली है। धमकी अमर सिंह नाम के व्यक्ति ने उनके चचेरे भाई को फोन पर दी। उसने कहा- धीरेंद्र शास्त्री की परिवार सहित तेरहवीं की तैयारी कर लो। बमीठा पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। एसपी ने कहा कि ऐसी आशंका है कि धमकी देने वाले ने किसी और नाम से फोन किया है। मामले की जांच के लिए 25 लोगों की एसआईटी गठित की है। इसमें अनुविभागीय अधिकारी भी शामिल हैं। बागेश्वर धाम की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। धीरेंद्र शास्त्री की सिक्योरिटी को अलग से ब्रीफ किया जाएगा कि किस तरह से उसे सतर्कता बरतना है।बमीठा पुलिस ने बताया कि धीरेंद्र शास्त्री के चचेरे भाई लोकेश गर्ग ने जान से मारने की धमकी की शिकायत दर्ज कराई है। लोकेश गर्ग को फोन किया गया था। लोकेश के पिता रामवतार गर्ग की ओर से दिए गए शिकायती आवेदन में बताया है कि अमर सिंह ने फोन पर कहा- अपने परिवार के लोगों की तेरहवीं की तैयारी कर लो। पुलिस अधिकारी माले की जांच में जुटे हुए हैं।गढ़ा के रहने वाले रामवतार ने शिकायत में बताया- 22 जनवरी को रात 9.15 बजे उनके मोबाइल पर कॉल आया। कॉल रिसीव किया तो कोई अज्ञात व्यक्ति बोला कि धीरेंद्र से बात कराओ। रामवतार ने पूछा कौन धीरेंद्र? अज्ञात व्यक्ति ने कहा- बागेश्वर वाले धीरेंद्र शास्त्री से बात कराओ। इस पर रामवतान ने कहा- हमारी पहुंच उन तक नहीं है, जो आपकी बात करा दें। फिर फोन करने वाले ने धमकी दी। बोला- परिवार सहित धीरेंद्र शास्त्री की तेरहवीं की तैयारी कर लेना। इस पर रामवतान ने पूछा- क्यों कर लेना? आप कौन बोल रहे हैं? कॉलर ने अपना नाम अमर सिंह बताया। इसके बाद फोन काट दिया। बता दें, आज धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री फ्लाइट से रायपुर से खजुराहो पहुंचेंगे। यहां गढ़ा ग्राम स्थित बागेश्वर धाम जाएंगे। बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री ने दिसंबर 2022 में कहा था कि उनकी जान लेने के लिए विदेशों में साजिश की जा रही है।

जबलपुर में मां और 5 साल की बेटी जिंदा जलीं

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में मां और 5 साल की बेटी जिंदा जल गईं। आग रजाई-गद्दा बनाने के कारखाने में लगी। मां अपने काम लगी हुई थी, बेटी पास ही खेल रही थी। इतने में दो मंजिला इमारत में बने कारखाने को लपटों ने घेर लिया। रजाई-गद्दे धू-धू कर जले। मां अपनी बच्ची को लेकर भाग पाती, धुएं के कारण दम घुटने से वहीं बेहोश हो गईं। मौके पर ही दोनों ने दम तोड़ दिया।

पुलिस का कहना है कि घटना के समय मां-बेटी ही कारखाने में थीं। शुरुआती जांच में शॉर्ट सर्किट से आग लगने की वजह सामने आई है। फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाया। जिला प्रशासन ने मृतक के परिवार को 4-4 लाख रुपए की मदद देने की घोषणा की है। घटना शहर के मक्का नगर इलाके की है। हनुमान थाना अंतर्गत मुस्लिम बाहुल्य इलाके मक्का नगर में असलम मंसूरी का रजाई-गद्दे बनाने का कारखाना है। कारखाना दो मंजिल इमारत में है। आज सुबह अचानक यहां आग लग गई। 25 साल की नगीना अपनी 5 साल की बेटी हिना को लेकर काम पर पहुंची थी। बताया जा रहा है कि वैसे तो कारखाने में 6 से 7 मजदूर काम करते हैं, लेकिन आज सिर्फ नगीना ही काम पर पहुंची थी। नगीना गद्दे बना रही थी, बेटी करीब ही खेल रही थी। इतने में रजाई-गद्दों ने आग पकड़ ली।

स्थानीय लोग अपने स्तर से आग बुझाने की कोशिशों में जुट गए। फायर ब्रिगेड को भी सूचना दे दी गई। रजाई-गद्दों के ढेर होने की वजह से आग तेजी से फैल गई। लपटों और धुएं से इमारत घिर गई। फायर ब्रिगेड की टीम एक घंटे बाद पहुंची। जब तक आग को बुझाया गया, तब तक अंदर मां-बेटी दम तोड़ चुकी थीं।

मद्य निषेध संकल्प दिवस –

30 जनवरी को प्रदेश में होंगे विशेष आयोजन

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की पुण्यतिथि 30 जनवरी 2023 पर प्रदेश में 'मद्य निषेध संकल्प दिवस' का आयोजन किया जाएगा। आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं तथा समाज के सभी वर्गों को मद्यपान तथा मादक पदार्थों के दुष्परिणामों से जागरूक करना है। इस दिवस पर मादक द्रव्यों तथा मदिरा पान त्यागने हेतु संकल्प दिलाना एवं संकल्प लेने वालों से संकल्प पत्र भरवाने का कार्य भी किया जाएगा। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण आयुक्त डॉ. ई रमेश कुमार ने आयोजन के संबंध में समस्त जिलों को निर्देश जारी किए हैं। प्रदेश में नशामुक्ति का वातावरण निर्मित होने के उद्देश्य से होने वाले संकल्प दिवस में ऐसे कार्यक्रम होगें जिनमें विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, जिला पंचायत, जनपद पंचायत, ग्राम पंचायत, स्थानीय निकाय एवं स्वैच्छिक संस्थाओं की सहभागिता सुनिश्चित की जा सके। सेमिनार, वर्कशाप, रैली, प्रदर्शनी, वाद-विवाद, निबंध लेखन, मानव श्रंखला, पोस्टर प्रतियोगिताए एवं नाटक, गीत, नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम व सभाएं आयोजित कर मद्य निषेध संकल्प हेतु वातावरण निर्मित किया जाएगा।

जबलपुर में कार पलटने से दंपत्ति, बेटे की मौत; सीधी से नागपुर जा रहे थे

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में कार पलटने से दंपती और उनके बेटे की मौत हो गई। घटना आज दोपहर 3 बजे सिहोरा थाना इलाके के मोहला गांव के पास हुई। परिवार सीधी से नागपुर जा रहा था। हादसे में बाबूलाल परिहार, पत्नी और बेटे आशीष परिहार की मौत हो गई। बुजुर्ग राम नरेश सोनी गंभीर रूप से घायल हो गए।

भाजपा की पीथमपुर नगर निकाय में हार मध्य प्रदेश में भाजपा के लिए बड़ा सबक

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के बाद भी नकार दिया, उद्योग मंत्री भी इसी जिले के

इंदौर। मध्यप्रदेश में नगर निकाय के सबसे ज्यादा चुनाव धार जिले में हुए और कांग्रेस को यहीं ज्यादा जीत भी मिली। जिला मुख्यालय समेत 9 जगह निकाय चुनाव के लिए वोट पड़े। पर, जब नतीजे आए तो सत्ताधारी भाजपा की आंखे खुल गई। 6 निकाय चुनाव कांग्रेस ने जीते और भाजपा सिमटकर 3 पर रह गई। भाजपा की सबसे बड़ी हार पीथमपुर में हुई। जबकि, यहां मुख्यमंत्री समेत कई बड़े नेताओं ने प्रचार किया और कांग्रेस के तत्कालीन जिला अध्यक्ष बालमुकुंद गौतम ने अकेले किला लड़ाया। इसलिए इसका पूरा श्रेय उनके खाते में ही जाएगा।

प्रदेशभर में 19 में से 11 जगह भाजपा की जीत बड़ी दिखती हो, पर कांग्रेस की लाज अकेले धार जिले ने बचाई। लेकिन, भाजपा सबसे बड़ी हार पीथमपुर को माना जाना चाहिए, जहां कांग्रेस ने भाजपा से यह सीट छीन ली। वास्तव में ये प्रदेश में भाजपा की बड़ी पराजय है। क्योंकि, भाजपा ने पीथमपुर के विकास को लेकर उद्योगपतियों के सामने जो खाका पेश किया था, वहां की जनता ने उसे उलट दिया। प्रवासी सम्मेलन, ग्लोबल इनवर्टर समिट, सिंगल विंडो, ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर की व्यवस्था और लाखों करोड़ों रुपए के निवेश का बाजार अभी थमा भी नहीं था कि देश का डेट्राइट कहे जाने वाले पीथमपुर नगर पालिका चुनाव के नतीजे सामने आ गए। नतीजे भी ऐसे आए कि भारतीय जनता पार्टी को समझ आ गया कि उसके लिए सबकुछ पाना आसान नहीं है। पीथमपुर नगर पालिका भाजपा के हाथ से चली गई। जबकि, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। पीथमपुर के लिए वो सबकुछ किया जो वे कर सकते थे, पर जिले के भाजपा नेताओं की इमेज मुख्यमंत्री की कोशिशों पर भारी पड़ गई।

पीथमपुर प्रदेश ही नहीं देश का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है। उद्योग, निवेश और इन्वेस्टर समिट की चर्चा के बीच उद्योगपतियों का स्वर्ग कहे जाने वाले पीथमपुर में मजदूर, मध्यम वर्ग, किसान और छोटे कारोबारियों ने भाजपा के कथित कुशल संगठन को नगरीय निकाय से बेदखल कर दिया। जबकि, यही वर्ग नगरीय क्षेत्रों में भाजपा का कोर वोट बैंक रहा है। कांग्रेस के लिए जीत के मायने भले ही महत्वपूर्ण हो, पर भाजपा के लिए चिंता और चिंतन का विषय है। समझा जा सकता है कि जिले में भाजपा की सियासी नींव कमजोर होने लगी। भाजपा संगठन में सत्ता सुख लेने वालों के मुंह में रियल स्टेट और लाइजनिंग के मलाईदार कारोबार का स्वाद लग गया है। पिछले 3 साल के सबसे बड़े औद्योगिक आयोजन, प्रवासी सम्मेलन, सरकार का उद्योगों के प्रति किसानों से भी ज्यादा झुकाव दिखाने के बाद भी मध्य प्रदेश के औद्योगिक सांस और ध्वनि कहे जाने वाले पीथमपुर में भाजपा क्यों हारी!

भाजपा की पीथमपुर में हार और कांग्रेस की जीत का क्या ये मतलब निकाला जाए कि ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में की जाने वाली घोषणाएं और एमओयू की विश्वसनीयता जनता के दिमाग में निकल गई! न्यूज़ चैनलों, अख़बारों के पन्नों, होर्डिंग से लगाकर एयरपोर्ट तक पर जिस तरह का स्वागत

उद्योगपतियों का किया गया, वैसा कभी किसान, और मजदूरों के लिए नहीं किया। क्या पीथमपुर के इन नतीजों को पीथमपुर के मध्यमवर्ग और आम जनता की प्रतिक्रिया समझा जाए!

आदिवासी अंचल का सबसे सफल और प्रभावी राजनीतिक क्षेत्र धार है। धार जो आज सोचता है कुछ दिनों बाद पूरा निमाड़ और आदिवासी अंचल वही करता है। यदि निष्पक्ष रुप से भाजपा के संगठन और सरकार के नुमाइंदों का परीक्षण कराया जाए, तो भविष्य के चुनाव नतीजे इससे बहुत अलग नहीं होंगे। मुख्यमंत्री की सहजता, सरलता अपनी जगह पर पार्टी संगठन और सरकार के नुमाइंदों का आचरण उसके समकक्ष नहीं है। सच्चाई यह है कि संगठन और सरकार के नुमाइंदों को देखकर आम जनता में बदले की भावना जन्म ले रही है। ख़ास बात ये कि इस मनोविज्ञान को समझने में संगठन और सरकार दोनों ही असफल है। अगर यह बात समझ में आ जाती तो भाजपा न तो कुक्षी हारती और न पीथमपुर उसके हाथ से जाता। मजबूत नेतृत्व, 18 साल की सरकार, मिस कॉल से सदस्यता, पन्ना प्रमुख जैसा कोई भी प्रयोग पीथमपुर और कुक्षी में भाजपा को नहीं जिता पाया। जिस ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की सफलता के कसीदे पढ़े जा रहे थे, वहीं चंद दिन बाद भाजपा को हार का मुंह देखना पड़ा। कहा जा सकता है कि पीथमपुर में भाजपा की हार धार की जीत से कहीं ज्यादा बड़ी है। यहाँ भाजपा का हारना एक बड़ी चिंता की और इशारा करता है।

सरकार और संगठन दोनों ही कई बार इस बात को मान चुके हैं कि मध्य प्रदेश का मतलब इंदौर है और इंदौर का मतलब मध्य प्रदेश! ऐसा लगता है कि विकास, स्वच्छता या कोई भी प्रशासनिक या औद्योगिक नवाचार सिर्फ इंदौर के लिए ही है। यह भावना भाजपा के लिए अगले विधानसभा चुनाव में भारी नुकसान दे सकती है। क्योंकि इंदौर की तुलना में प्रदेश में कोई ऐसा जिला नहीं है ,लेकिन सरकार एक ही रही है। शिवपुरी, रीवा, अलीराजपुर, राजगढ़ या बालाघाट हर जगह पिछले 18 साल से एक ही सरकार रही है। फिर किस की कीमत पर इंदौर का विकास होता है। हर आदमी जो जिस जिले का है वह अपने अंदर अपने जिले में एक इंदौर देखना चाहता है। पर, पिछले 18 साल में प्रदेश को सिर्फ एक ही इंदौर मिला, दूसरा क्यों नहीं! भाजपा के सत्ता-संगठन को यह स्वीकारना होगा कि यदि इंदौर से सटे पीथमपुर में इन्वेस्टर समिट और प्रवासी सम्मेलन बेअसर रहे तो ग्वालियर, चंबल, सागर, शहडोल और रीवा में इसका असर कैसे होगा!

9 में से 3 नगर निकाय चुनाव जीतकर उत्साहित होने वाले धार के जिला अध्यक्ष के लिए ये संकेत है कि कहीं न कहीं नेतृत्व में रिसन है। उनसे इस हार को लेकर संगठन सवाल कर सकता है। पर, इससे समस्या सुलझेगी या नहीं, यह तो भाजपा को सोचना है। एक सच्चाई यह भी कि प्रदेश के उद्योग मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव भी धार जिले के अकेले मंत्री हैं। 18 साल की एंटी इनकंबेंसी, सत्ता और संगठन के नुमाइंदों का अहम् भरा आचरण, सिंधिया समर्थकों की भाजपा में दखलंदाजी और आपसी सामंजस्य की कमी पार्टी में इस रूप में उभरकर आई है। भाजपा के अंदर पनक रहे नए गुट और टिकट की मारामारी, आदिवासियों के %जयश% संगठन का कांग्रेस के प्रति झुकाव, पुराने भाजपा नेताओं की अवहेलना कहीं अगले विधानसभा चुनाव में पूरे प्रदेश को पीथमपुर या कुक्षी न बना दे, ये सोचना होगा। धार जिले के संकेत नगरीय निकाय के नतीजों से प्रदेश की भविष्य की सियासत की यही कहानी कह रहे हैं। जो आज धार में हुआ है कहीं वह पूरे प्रदेश में न फैल जाए।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य का प्रण

भोजपाल नाम नहीं हो जाता, तब तक भोपाल नहीं आऊंगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में श्रीराम कथा के पहले दिन जगदगुरु रामभद्राचार्य महाराज ने कहा, जब तक भोपाल का नाम भोजपाल नहीं होता, तब तक अगली कथा करने नहीं आऊंगा। भोजपाल नगरी के राजा भोज पालक थे। जब सरकार होशंगाबाद का नाम नर्मदापुरम कर चुकी है। इलाहाबाद का नाम प्रयागराज हो गया है, फैजाबाद का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया गया है, तो भोपाल का नाम बदलकर भोजपाल क्यों नहीं किया जा सकता? मैं अपने अनुज मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से कहूंगा कि विधानसभा चुनाव के पहले इसका नाम बदल दें।

भेल दशहरा मैदान में नौ दिवसीय श्रीराम कथा 31 जनवरी तक चलेगी। कथा की शुरुआत सीताराम संकीर्तन से हुई। श्रीराम कथा के दौरान जगदगुरु रामभद्राचार्य महाराज ने बताया कि वे अभी तक 1360 कथा कर चुके हैं। भोपाल में होने वाली कथा 1361वीं है।

बता दें, जगदगुरु रामभद्राचार्य महाराज बागेश्वर धाम के पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के गुरु हैं। पं. धीरेंद्र शास्त्री इन दिनों नागपुर की अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति की चुनौती के बाद से चर्चा में हैं। जगदुरु की भोपाल में यह 1361वीं कथा है। महाराज ने कहा, मैं एक ही चौपाई पर नौ दिन तक कथा कहूंगा। यह चौपाई उत्तरकांड के दशवें अध्याय की पांचवीं पंक्ति में है।

लव जिहाद पर कहा-युवाओं को राम के पथ पर चलने की जरूरत...- रामभद्राचार्य महाराज ने कथा के दौरान युवाओं को सही दिशा और मार्गदर्शन देने की बात कहते हुए महाराज ने कहा कि लव जिहाद के नाम पर हिंदू लड़कियों को फंसाया जा रहा है। युवाओं को सही दिशा और मार्गदर्शन नहीं मिल रहा है। युवाओं को राम के पथ पर चलने की जरूरत है। किसी को चेहरे से नहीं अपने चरित्र से प्रभावित करो।

पीओके पर बोले-जिसे अखंड राष्ट्र चाहिए, वही कथा में आए...- मैं जो बात कहता हूं पूरे दम से जिम्मेदारी के साथ कहता हूं और वह पूरी होती है। मैंने कहा था कि रामजन्म भूमि का फैसला हमारे पक्ष में आएगा। कश्मीर से धारा 370 हटी, तीन तलाक खत्म हो गया। पीओके दुनिया के नक्शे से समाप्त होना चाहिए, यह हमारा है और उसे हम लेकर रहेंगे। जिसको राष्ट्र की पूरी अखंडता चाहिए, वही हमारी कथा में आए। त्रेतायुग में विश्वामित्र के बाद 1008 कुंडीय यज्ञ हमने किया।

कलश यात्रा से शुरुआत- श्रीराम कथा की शुरुआत में कलश यात्रा से हुई। सोमवार दोपहर दो बजे बरखेड़ा स्थित श्रीकृष्ण मंदिर से कलश यात्रा निकाली गई। यात्रा में करीब 500 महिलाएं सिर पर कलश लेकर चलीं। हजारों की संख्या में श्रद्धालु भी साथ चले। कथा के शुरुआत में जगदगुरु रामभद्राचार्य महाराज के स्वागत में गुफा मंदिर के महंत रामप्रवेश दास महाराज ने गाय का महत्व बताते हुए... गैया लगै मोहे प्यारी, जगपालन हारी... भजन की प्रस्तुति दी।

अनादि अनंत भक्ति की शक्ति से सराबोर 'अद्वैता'

सानंद के मंच पर भक्ति संगीत की अमृत वर्षा

शानदार आर्केस्ट्रा से सजी प्रस्तुतियों से श्रोता सराबोर, आध्यात्म की ज्योत जली

(अनुराग तागड़े)

इंदौर। संतों के अमर शब्दों को सुरों का साथ मिले, तब आध्यात्म और संगीत की मिली-जुली अमृत वर्षा मन के उस कोने को भी स्पर्श करती है, जहां से सोहम् की अनादि अनंत यात्रा आरंभ होती है। अध्यात्म की गहराई और संगीत की ऊँचाई को हम नाप तो नहीं सकते, पर उसमें निहित ईश्वर तत्व को हम अपने भीतर महसूस कर सकते है। सानंद के मंच पर %अद्वैता% कार्यक्रम मन के भीतर आध्यात्म की ज्योत जलाता है और हौले से भक्ति का आचमन भी करवा देता है।

इस मंच पर कवि वैभव जोशी और गायिका देवकी पंडित दर्शको को उस यात्रा पर लेकर गए जहां ईश्वर के प्रति अगाध भक्ति है और प्रेम की स्याही से लिखे शब्द जब सुरों से मिलते हैं, तब सगुण-निर्गुण सब कुछ एकाकार हो जाता है। मन के भीतर शब्द और सुर जैसे भक्ति के उत्तुंग शिखर पर पहुंचकर ईश्वर के सामीप्य का परमानंद ले रहे हों। देश की सात म। हिला संतों की इस भक्तिगाथा में सबसे पहले संत जनाबाई भगवान विट्ठल के प्रति अपने शब्द अर्पण कर कहती है सावला का गोविंद और यहां से यात्रा आरंभ होती है, एक ऐसे लक्ष्य की और जहां केवल भक्ति और समर्पण है। वैभव जोशी जनाबाई के बारे मे जानकारी देते है और देवकी जी एक के बाद एक प्रस्तुतियां देती जाती है।

दक्षिण की संत कवयित्री अडाल के बारे मे कहा जाता है कि वे भगवान कृष्ण को माला पहनाने के पहले स्वयं माला पहनती थी और वह माला कृष्ण को पहनाती थी। यह बात उनके पिताजी जो की मंदिर के पुजारी थे, उनको पता चलती है तब वे अडाल को बताए बगैर नई माला श्री कृष्ण को पहनाते हैं। तब माला के सभी फूल बिखर जाते है। कहते है कि सत अडाल का प्रभु के प्रति प्रेम और लगन इतना था कि वे श्रीरग के मंदिर मे मूर्ति में ही समा गई। उसके बाद उनका कोई पता नहीं लगा। दक्षिण की संत के भजन को दक्षिणात्य पद्धति से देवकी जी ने गाया जो दर्शको को बेहद पसंद आया। इसके बाद संत मुक्ता बाई का पावन मनाचा भजन की प्रस्तुति दी गई।

राग हंसध्वनि मे रचित परम पुरुषा वासुदेवा बेहद सुंदर कम्पोजिशन थी। मीराबाई के भजन पिया जी म्हारे नैना ने माहौल ही बदल दिया और राजस्थानी रंग में रंगी यह कम्पोजिशन में विष का प्याला इतनी ही पंक्तियों को देवकी जी ने बहुत ही अनूठे ढंग से गाया। देवकी जी मन से गा रही थी और सभी संगतकार भी जैसे भक्ति यात्रा के सहयात्री के मानिंद अपना बेहतरीन दे रहे थे। कमलेश भडकमकर की जितनी तारीफ की जाए कम है। उन्होंने प्रत्येक कंपोजिशन को कितने बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत कर सकते थे किया और इसमें वे सफल रहे। अमर ओक बांसुरी और नीलेश मोरे ताल पक्ष इतने मंजे हुए कलाकार हैं, कि वे पूरी कम्पोजिशन को कहीं भी रिक्त नहीं रहने देते। तबले पर विनाय क नेटके और मृदंग पर श्रीधर पार्थसारथी के अलावा सरोद और वायलिन भी अलग ही रंग भर रहे थे। %अद्वैता% में अक्का महादेवी से लेकर अन्य महिला संतों की रचनाओं की प्रस्तुतियां भी दी गई। अतिथि स्वागत सानंद के श्री निवास कुटुंबले व जयंत भिसे ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में दर्शकगण मौजूद थे।

धर्म की बात करने में कोई हर्ज नहीं : कमलनाथ

बोले- मेरी धीरेन्द्र कृष्ण से कल ही बात हुई थी, दिग्गी के बयान से किया किनारा

भोपाल (नप्र)। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री को लेकर मचे घमासान पर पीसीसी चीफ कमलनाथ का बयान आया है। पीसीसी में कांग्रेस सेवादल और एसटी कांग्रेस की बैठक में शामिल होने पहुंचे कमलनाथ बागेश्वर धाम के हिन्दू राष्ट्र बनाने की मांग पर सवाल पूछा गया तो कमलनाथ ने कहा- बागेश्वर धाम अपने हैं उनसे मेरी कल बात हुई थी, वहां जाने के लिए मेरा प्रोग्राम बना था। लेकिन, जो डेट में दे रहा था और जो तारीख वो दे रहे थे वह एडजस्ट नहीं हो पा रही थी। मेरी उनसे लगातार बात होती रहती है जो हमारे धार्मिक लोग हैं वह अपने धर्म की बात करें इसमें कोई खराबी नहीं है। मैं भी चाहता हूं वो धर्म की बात करें। प्रदीप मिश्रा से मेरी लगातार बात होती रहती है। इंदौर में मैं उनके कार्यक्रम में गया उन्होंने मेरा बहुत सम्मान किया स्वागत किया, पूरे इंदौर ने देखा।

धीरेन्द्र शास्त्री के हिन्दू राष्ट्र बनाने की मांग पर बोले- ये हमारा सबके अपने-अपने अलग विचार होते हैं। हमारा राष्ट्र हमारी संस्कृति और संविधान के अनुसार चलेगा। कोई कहेगा भाषा के आधार पर करो, कोई कहेगा जाति के आधार पर करो। तो हमें देश के एक झंडे के नीचे खड़ा होना है। हम भारत की संस्कृति और संविधान का पालन करें।

कांग्रेस की बैठक पर सीएम के तंज पर कमलनाथ बोले – शिवराज जी को हमारे संगठन की जाने क्यों चिंता है। उनके पेट में क्यों दर्द हो रहा है। क्या वो डर गए हैं ? बौखला गए हैं शिवराज जी से के मुंह से घटिया बातें निकलना, ये मैं उचित नहीं समझता।

आदिवासियों की योजनाएं बंद करने के सीएम के आरोपों पर बोले- इनके पास झूठ के अलावा कुछ नहीं है। मैं हमेशा कहता हूं मध्य प्रदेश की जनता गवाह है। आज मध्य प्रदेश का हर वर्ग परेशान घूम रहा है। इसकी चिंता बीजेपी नहीं कर रही है। इनका बयान कमलनाथ की आलोचना करना। इनकी बात कांग्रेस के संगठन में क्या हुआ? मैं इस घटिया स्तर पर नहीं जाना चाहता। दिग्विजय सिंह की सर्जिकल स्ट्राइक पर दिए गए बयान पर कमलनाथ ने कहा इस पर हमारी पार्टी का स्टैंड क्लियर है जयराम रमेश जी ने यह बता दिया कि उनकी व्यक्तिगत राय है जो हमारी पार्टी का स्टैंड है वही मेरा स्टैंड है।

दिग्विजय के सबूत मांगने पर बोले रामेश्वर

सेना जब सर्जिकल स्ट्राइक करने जाए तो हेलीकॉप्टर पर दिग्विजय, राहुल और केजरीवाल को लटकाकर ले जाए

भोपाल (नप्र)। जम्मू में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान दिग्विजय सिंह के सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांगने पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राहुल गांधी से जवाब मांगा है। सीएम शिवराज ने कहा, मैं राहुल गांधी से जवाब मांगता हूं कि ये कैसी यात्रा है? टुकड़े-टुकड़े गैंग आपके साथ चल रही है। सेना का मनोबल गिराया जा रहा है। राहुल गांधी भी सवाल उठा रहे हैं कि सेना कमजोर होगी। ये देशभक्ति नहीं है। राहुल गांधी के साथ दिग्विजय सिंह भारत जोड़ो यात्रा में चल रहे हैं। दिग्विजय जी सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांग रहे हैं, इससे वे दिखा रहे हैं कि वे पाकिस्तान के साथ खड़े हैं। कांग्रेस के डीएनए में ही पाकिस्तान परस्ती है।

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी पूर्व सीएम दिग्विजय को बयान पर घेरा है। उन्होंने कहा, इन्होंने राष्ट्र विरोधी एक्टिविटी की सूची में आज एक और को जोड़ा। दिग्विजय के भाई लक्ष्मण सिंह ने कहा- हमारी सेना पर हमें गर्व है। उन्होंने भी ट्वीट के जरिए अपनी बात रखी।

आज जब सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा पर दिए गए बयान पर जम्मू में दिग्विजय सिंह से सवाल किया गया, तो बीच में कांग्रेस के सीनियर लीडर जयराम रमेश आ गए। बोले- प्रधानमंत्री से जाकर पूछिए। दिग्विजय सिंह ने सफाई में कहा- हम सुरक्षाबलों का काफी सम्मान करते हैं और उनको सर्वोच्च स्थान देते हैं।

दिग्गी के बयान से पार्टी का किनारा- दिग्विजय के बयान से पार्टी ने किनारा कर लिया है। जयराम रमेश ने कहा- इसके बारे में मैंने कल ट्वीट कर बिल्कुल साफ बताया था कि इस

मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी का क्या रवैया है और इस पर मैं कुछ नहीं बोलूंगा। ट्वीट में जयराम रमेश ने लिखा, वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह द्वारा व्यक्त किए गए विचार कांग्रेस के नहीं हैं। उनके व्यक्तिगत विचार हैं। 2014 से पहले क्कसरकार ने भी सर्जिकल स्ट्राइक की थी। राष्ट्रहित में सभी सैन्य कार्रवाइयों का कांग्रेस ने समर्थन किया है। आगे भी समर्थन करेगी।

दिग्विजय के राज में सीएम सिमी का गढ़ था: शिवराज- मुख्यमंत्री शिवराज ने भोपाल में कहा, ये कभी सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगते हैं, कभी राम के अस्तित्व का सबूत मांगते हैं, कभी राम सेतु का सबूत मांगते हैं। दिग्विजय सिंह ने भारत जोड़ो यात्रा में चलते-चलते यह बोला है। राहुल गांधी साथ चल रहे हैं। दिग्विजय सिंह सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांग रहे हैं। यह सेना का मनोबल गिराने का पाप कर रहे हैं।